श्री यशोविश्वश

हाहासाहेज, भाषनगर. ।ज: ०२७८-२४२५३२३

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

अवर्ता जैन की कायबेरी ईथवाका ने २०

रचिया

श्री रुरितप्रभस्रीश्वर.

पारण चेत्य-परिपाटी.

**和祖上記** 推

श्रीइंसविनयनी भी लायबेरी सेकेटरी भवदाबाट.

---

वृत्य छ आवा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat

www.umaragyanbhandar.com

## શાંતમू ति भुनिराજ श्री હંસવિજયજી મહારાજ.



જન્મ:—વડાકરા. મુનિપદઃ—અંખાલા–( પંજાય ) સં. ૧૯૧૪ અશાહ વદી ૩૦ સં. ૧૯૩૫ માહ વદી ૧૧. <u>\*</u>

श्रीहंसविजयजी जैन क्री लायवेरी <u>प्रंथमाला नं. २८</u>

# पाटण चैत्य-परिपाटी.

संपादक-

मुनिराज श्रीकल्याणविजयजी.

-»••-

मकाशक-सेकेटरी जैदांगभाइ छोटालाल सुतरीआ. श्रीहंसविजयजी जैन की लायब्रेरी खुणसावाडा मोटी पोळ-अमदावाद

प्रत २०००

वि. सं. १९८२



धी सूर्यप्रकाश भीन्टींग प्रेस टक्शाळ अमदावाद पटेळ मुळचंदभाई त्रीकमलाले छाणी.



नंबर.	पुस्तकनुं नाम.	कींमत.	
१	नीतिदर्पण	o <del>-8</del> -0	
२,४,७,२६	प्राणीपोकार	भेट	
ર્વે,લ	हं <b>सविनोद</b>	०-१२-०	
<b>E</b>	स्नात्रपूजा	3−o−€	
<b>६</b> ८	नवतस्व संक्षिप्तसार	0-2-0	
9	नर्भदासुंदरी कथा	भेट	
१०	शोलवद्गी कथा	49	
१र,१७,२५	तिथि तप माणिक्यमाळा	ə—१− <b>ɔ</b>	
<b>૧૨,૧</b> ૩	गहुं ली संग्रह	o−3-o	
<b>१</b> ४,२१	श्रीनेमिनाथनी १०८ प्रकारीपुजा		
84	विविधपूजा संग्रह	₹-0-0·	
रेंद	गिरनार गरुप	भेट	
१८	हीरप्रश्न	₹0-0-	
१९	अष्टापद पूजा	भेट	
२०	शुक्राज कथा (सं.)	"	
२२	धर्मदत्त कथा 🥠	;;	
२३	धुर्मविधि ,,	<b>3</b> ,	
રષ્ઠ	सिंदूरप्रकर 🥠	"	
ર્૭	चैत्य परिपारी यात्रा	o-1-0	
२८	पाटण चैत्य परिपाटी	o- Ę-o	
	<b>हीरप्रश्नावली</b>	o-3-o	
	देशाटन	0-8-0	
	प्रश्लोत्तर पुष्पमाला	o-{8-0	
	प्राप्तिस्थान- श्रीइंसविजयजी जैन फ्री लायब्रेरी, लुणसावाडा मोटी पोळ-अमदावाद.		

# 

सुज्ञ वाचक बंधुओ !

माचीन गूजराती भाषानुं परिशीलन करनार साहित्य-मेमी इतिहासगवेषी सज्जनोने परम आनंद थशे के २७ नक्ष-त्रोनी मालासमान अथवा साधुओना २७ गुणो जेवी २७ ग्रंथ-चु<sup>ह</sup>पोनी माला<sup>१</sup> समर्पण कर्या पछी आजे अम्हे 'पाटण चैत्य-परिपाटी' नामनुं २८ म्रुं ग्रंथपुष्प आपना कर−कमलमां सादर मुकवा शक्तिमान् थया छीए.

गुनरातनी पाचीन राजधानी अणहिल्लवाड पाटणमां रहेलां विक्रमना १७-१८मा सैकानां जिनचैत्यो-मंदिरोनी परिस्थितिनो परिचय करावनार आ 'पाटण चैत्य परिपाटि'ने अम्हे तेनी प्राचीन भाषामां विकृति कर्या विना प्रकाशित करवा ्बनतुं ऌक्ष्य आप्युं छे. छतां आ पुस्तकमां आपेली बे परिपाटियो-मांथी वि.सं. १६४८मां पूर्णिमागच्छीय ललितप्रभसूरिए रचेळी परिपाटिनी प्राचीनमित जेवी परिशिष्टमां मुकेली (वि.

१ वंथोनुं लिस्ट प्रथम पेजमां आप्युं छे; स्नायब्रेरीना परिचय माटे सं. १९६६ थी सं. १९७६ सुधीनो रिपोर्ट वांसी.

सं. १७२९मां तपागच्छीय हर्षिविजयजी रचित) परिपाटिनीं प्राचीन शुद्धपति न मळवाथी ते अंश्रमां तेम बनी शब्युं नथी एम अम्हारे आ स्थळे खिन्न अंतःकरणे जणाववुं जोइए. वि. सं. १९५९मां प्रवर्तकजी श्री कांतिविजयजी महाराजनी मेरणाथी पं. हीरालाले रचेली पाटणनां वर्तमान जिनालयोने सूचवती सं. जिनालयस्तुतिने परिशिष्टमां मूकी वर्तमान जिन-मन्दिरोनुं सूचन करवा अम्हे बनतो प्रयास कर्यों छे.

साक्षररत्न मुनिराज श्रीकल्याणि विजयजी महाराजे अतिपरिश्रम छइ विचक्षणताथी गवेषणापूर्वक छखेछ प्रस्तावना अने परिपाटिसारथी आ ग्रंथ विशेष विभूषित—अधिक छप-योगी थइ शक्यो छे, ए वाचको स्वयं समजी शके तेम छे. अत एव अम्हारे ए संबंधमां विशेष वक्तव्य प्रकट करवानुं अवशिष्ट रहेतुं नथी, किंतु अम्हारी कृतज्ञता दर्शाववा तेओश्रीनो अंतःकरणपूर्वक आभार मानवानुं अम्हे समुचित समजीए छीए.

आ ग्रंथना संशोधनकार्यमां पूज्य मुनिराज श्रीहंसिब-जयजी महाराजश्री तथा पंन्यासजी संपद् विजयजी महा-राजश्रीनी परणाथी मुनिराज श्रीपुण्य विजयजी महाराजे तथा मुनिराज श्रीदां सुविजयजी महाराजे तथा पं. लाल-चन्द्र भगवान्दास गांधीए करेली सहायताथी अम्हे अम्हारा कार्यमां सफल थया छीए-उपकृत थया छीए; ए मकट करवानी अम्हारी फरज विचारीए छीए.

अम्हारा आ ग्रंथमकाञ्चन कार्यमां पाटणना झवेरी
मणीलाल छगनलालनी धर्म पितन केसरबाइ, सुरतना ज्ञाः
अनोपचंद नगीनदास स्वनाम धन्य स्वर्गवासी लाला ठाकुरदासजो खानगाम डोगरां (पंजाब) वाले के धुपुत्र श्रीमान लाला मभदयालजी दुगड लाहोर (पंजाब) वालेने
पोतानी लक्ष्मीनो सद्व्यय करी अम्हने मोत्साहित करवा
साथे अन्य धनाद्योने अनुकरणीय कर्तव्यमार्ग द्शांव्यो छे,
तेमनो जपकार मानवानुं अम्हे आ स्थळे भूली शकता नथी.

आ ग्रंथमां मितमंदताथी, प्रमादयी या दृष्टिदोषथी रही गयेली स्वलनाओं सङ्जनो सुधारी वांचशे अने अम्हने सूचववा तस्दो लेशे तो पुनरावृत्ति—प्रसंगे साभार सुधारवा प्रयत्न थशे.

शासनदेवनी कृपाथी विशेष प्रगति करी साहित्यसेवा-पूर्वक अधिक शासनसेवा बजाववा अम्हे भाग्यशास्त्री थइए एवी हार्दिक भव्य भावना प्रकट करी अत्र विरमीशुं.

प्रकाशक-आ. से. 'श्रीहंसविजयजी जैन फी पार्श्वप्रभु-जन्मतिथि. लायब्रेरी-अमदावाद.

## प्रस्तावना.

स्वभावधी ज भारतवर्षता प्राचीन विद्वानी इतिहास लखवा तरफ थोड़ं लक्ष्य आपेलुं छे. अने जे कंइ लखायुं हतुं तेनो पण घणो खरो भाग राज्यविष्ठवोना दुःसमयमां नाश पामी गयो छे, मात्र व्याख्यानिक साहित्यमां उप-योगी थतो केटलोक जैन ऐतिहासिक साहित्यनो अंश व्या-ख्यानरसिक्त जैन साधुओना प्रतापे बचवा पाम्यो छे; पण तेमां इतिहास करतां उपदेशतत्त्वने मुख्य स्थान आपेलुं होवाथो तेवा चरित्र प्रयन्धादि ग्रन्थो पैकीना घणो भाग औपदेशिक साहित्य ज गणी शकाय, मात्र केरलाक रासा-ओ अने प्रबन्धो उपरांत शिलालेखो प्रशस्तिओ चैत्यपरि-वाडीओ तथा तीर्थमालाओ ज आधुनिक दृष्टिप प्राचीन अतिहासिक साहित्यमां गणवा योग्य छे.

ऐतिहासिक साहित्यमां चैत्यपरिवाडीओनुं स्थान.

जो के चैत्यपरिवाडी वा तीर्थमालाओ तरफ घणा थोडा विद्वानोनं लक्ष्य गयुं छे अने अैतिहासिक दृष्टिए तेनी खरी कींमत आंकनारा साक्षरो तो तेथी येथोडी संख्यामां नीक-ळशे; पटलुं छतां पण इतिहासनी दृष्टिप चैत्यपरिवाडी प घणुं कीमती साहित्य छे, एना उंडाणमां रहेला तात्कालिक धार्मिक इतिहासनो प्रकाश, धर्मनी रुचि तथा प्रवृत्तिनुं दर्शन अने गृहस्थोनी समृद्ध दशानुं चित्र इत्यादि अनेक इतिहासना कीमती अंशो चैत्यपरिपाटिओना गर्भमांथी जनमे छे के जेनी कींमत थाय तेम नथी.

चैत्यपरिवाडीओनो उत्पत्तिकाल.

बैत्यपरिवाडीओ क्यारथी रचावा मांडी तेनो निश्चित निर्णय आपी शकाय तेम नथी. चैत्यपरिवाडीओ, तीर्थमालाओ अ-थवा पत्राज अर्थने जणावनारा रासाओ घणा जुना वखतथी लखाता आव्या छे पमां शक नथी, पण पवा भाषासाहित्यनी उत्पत्तिना प्रारंभकालनो निर्णय हजी अंधारामां छे, कारण के आ विषयमां आज पर्यन्त कोइ पण विद्वाने ऊहापोह तक कर्यों नथी, छतां जैन साहित्यना अवलोकनथी पटलुं तो निश्चित कही राकाय के जैनोमां चैत्य वा तीर्थयात्राओ करवानो अने तेनां वर्णनो लखवानो रीवाज घगो ज प्राचीन छे. तीर्थयात्राओ करवानो रिवाज विक्रमनी पूर्वे चोथी सदीमां प्रचलित हतो एम इतिहास जणावे छे, ज्यारे तेनां वर्णनो लखवानी दारुआत पण विक्रमनी पहेली वा बीजी सदी पछीनी तो न ज होइ राके; ए विषयनो विरोष खुलासो नीचेना विवेचनथी था शकरो --

जैन साहित्यमां सर्वथी प्राचीन सूत्र आचारांगनी निर्यु-किमां तात्कालिक केटलांक जैन तीर्थोंनी नोंध अने तेने नमस्कार करवामां आव्यो छे. विशीय चूर्णिमां धमेचक,

१ " अट्ठावय उर्जिते गयगगपर य धम्मचके य । पासरहावतनगं चमरुपायं च वन्दामि ॥ "

<sup>-- &</sup>quot; गजाग्रपरे-इशार्गक्रटवर्तिनि । तथा तक्षशिलायां धर्मचके तथा

देवनिर्मित स्तूप,जीवितस्वामि प्रतिमा, कल्याणभूमि आदि तीर्थीनी नोंध करवामां आवी छे. १

छेदस्त्रोन। भाष्य अने टीकाकारो लखे छे के अष्टमी चत्रेशी आदि पर्व दिवसोमां सर्व जैन देहरासरोनी बंदना करवी जोइये, भले ते चैत्य संघनुं होय के अमुक गच्छनी मालिकीनं होय तो पण तेनी यात्रा करवी, वखत पहोंचतो होय तो सर्व ठेकाणे संपूर्ण चैत्यवंदन-विधि करवी जोइये अने वखत न पहोंचतो होय तो अक अक स्तुति वा नम-स्कार ज करवो पण गामना सर्व वैत्योनी यात्राः करवी. र ब्यवहार मुक्ता भाष्य अने चूर्णिमां लख्युं छे के<sup>3</sup>

अहिच्छत्रायां पार्श्वनाथस्य धरगेन्द्रमहिमास्थाने । "

—आचारांगानियुक्ति पत्र ४१८।

९ " उत्तरावहे धन्मवकं, मबुराए देवणिंग्मिओ थूभो, कोस-स्राए जियंतसामिपडिमा, तित्थंकराणं वा जम्मभूमिओ ।

— निर्दाधं चूर्णि पत्र २४३ — २।

निस्सकडमनिस्सकडे चेइए सन्वाहें थुई तिान्ने । वेलं व वेडआणि व नाउं हाके कि आ हैं वा वि॥

-भाष्य

अट्टमी-वडदसीसुं चेड्य सन्वाणि साहुणो सन्वे । 3 वन्द्रेयव्या नियमा अवसेस-तिहीसु जहसत्तिं॥ एएस चेव अट्टमीमादीसु चेइयाई साहुणी वा जे अण्णाए वसहीए ठिआ ते न वंदाति मासलहु।

-- ज्यवहारभाष्य अने चूर्णि.

आठम चौदश आदि पर्व-तिथिदिनोमां गामनां सर्व देह-राओमां रहेली जिनप्रतिमाओ अने पोताना तथा बीजा उपाश्रयोमां रहेला सर्व साधुओने पर्यायलघु साधुओओ वंदन करवुं जोइये, जो न करे तो ते साधु प्रायश्चित्तनो भागी थाय.

महानिशोध सुत्रमांथी .पण चैत्य तीर्थ अने तीर्थोमां भराता मेलाओनी सूचना मले छे.' आ सर्व जोतां अंटेलुं तो निश्चित छे के जैनोमां तीर्थयात्रा प्रतिमापूजानो रिवाज घणो ज जुनो पुराणो छे, तीर्थ तरीके प्रसिद्ध थयेल स्थानोर्मा भाविक जैनो घणा दूर दूरना देशो थकी संघो लेइ जता अने तीर्थाटन करी पो-तानी धार्मिक श्रद्धाने सफन्न करता, पोताना गाम नगरोनां चैत्योने ते हमेशां भेटता, चैत्यो अधिक वा समय आछो मलतां नगरनां सर्व चैत्योनी यात्रा नित्य न थती तो छेवटे आठम चउदश जेवा खास धार्मिक दिवसोमां तो पूर्वीक यात्रा अवश्य करता ज, कालान्तरे आ प्रवृत्तिमां पण मंदता न पेसी जाय अटला माटे श्रुतधर पूज्य आचार्यों नियम घड्यो के आठम चउदशे तो सर्व बैत्योनी वंदना करवी ज, अने जो साधु के व्रती गृहस्य आ नियम प्रमाणे न

१ अहन्नया गीयमा ते साहणी तं आयरियं भगति जहा णं जइ भयवं तुमं आणावेहि ता णं अम्हेहिं तित्थयत्तं करि(र)या चंदप्पहसामियं वंदि(द)या धम्मचकं गंतुणमागच्छामी ।

<sup>—</sup> महानिशीथ ५-४३५ ।

वर्तदो ता ते दंडनो भागी थदो. आ प्रमाणे नगर वा गामनां सर्वे चैत्योती यात्रा ते 'चेद्अपरिवाः डोजता' (चैत्यपरिपाटियात्रा) कहेवाती. अने बे प्रवृति विशेष प्रचलित थतां उतावलने लीधे । यात्रा ' चाब्द निकलो जइने 'चैत्यपरिपाटि' शब्द ज प्राथमिक मुळ अर्थने जणावत्रामां रूढ थइ गयो. वखत जतां चैत्यपरिपाटी —चैत्यपरिवाही —चैत्यप्रवाही - वैत्रप्रवाही इ त्याद्भि अनेक प्रकारना 'चेइअपरिवाडीजत्ता'ना स्थाने संस्कृत, प्राकृत अने अपभ्रंश शब्दो रूढ थया जे आज पर्यन्त ते अर्थने जणाबी रह्या छे.

उपरना विवेचनयी भे बात स्पष्ट थइ के 'चैत्यपरि-वाडी' ओ नाम अक प्रकारनी यात्रानुं छे, अने उपचारथी तेवी यात्रानुं वर्णन के विवेचन करनार प्रबन्ध वा स्तवनी यण 'चैत्यपरिवाडी 'ना न(मधी ओलखावा लाग्यां के जे बनाव साहित्यमार्गमां एक स्वामाविक घटना छे

तीर्थमाला अने चैत्यपरिवाडियोनो वास्तविक भेदः

यद्यपि तीर्थमाला वा तीर्थमाल!स्तवनो अने चैत्यपरि-वाडी वा वैत्यपरिवाडी स्तवनोशं सामान्य रीते भेद नथी गणवामां आवतो तथापि तेनां नाम अने लक्षणो तपासतां तें बन्ने प्रकारनी कृतिनो वास्तविक भेद खुल्लो जगाइ आवे छे.

तीर्थमाला स्वनानुं लक्षण प होय छे के पोते भेटेलां वा सांभळे छां के शास्त्रोमां वर्णवे छां नामी नामी तीर्थीनां चैत्य वा प्रतिमाओनं वर्णन, तेनो साचो वा कल्पित इति-हास तेनो महिमा अरे ते संबंधी बीजी बाबतोनं वर्णन

करवा पूर्वक तेनी स्तुति वा प्रशंसा करवी. आचारांगिनः र्युक्ति अने निशोथचूर्णिमां थयेली तीर्थोनी नोंध ते आज-कालनी तीर्थमालाओं अने तीर्थकल्पोनं मूल बीजक सम जवुं जोइये.सिद्धसेनस्रितुं सकलतीर्थ स्तोत्री, महेन्द्रस्रितुं तीर्थमालास्तवन, र जिनशभसूरिनी शाश्वताश्वत-चैत्यमाला, विविधतीर्थक ल्पं विनेरे संस्कृत प्राकृत अप-

- १ आ संस्कृत स्तीत्र पाटणमां संघवीनी शेरीना ताडपत्रीना पुस्तक भंडारमां छे. एना कत्ती सिद्धसेन सुरि क्यारे थया तेनी निश्चय नथी, छतां संभव प्रमागे तेरमी सदीना पूर्वार्धमां थइ गयेला सिद्धसेन ज एना कर्ता होवा जोइये.
- आ प्राकृत स्तवन पण तेरमी सदीमां ज बनेलुं संभवे छे. महेन्द्रसूरि नामना वे आवार्य थया छे-१ ला पूर्णतलगच्छीय प्रसिद्ध आचार्य हेमचंद्रजीना शिष्य जे १२१४ मां विश्रमान हता. २ जा नाणकीयगच्छीय जे सं. १२२२ मां विद्यमान हता, आ स्तवनना कर्ता आ बेमांथी कया तेनो निश्चय थतो नथी.
- ३ आ चैत्यमाला अपभ्रंश साषामां छे. एना कर्त्ता जिन-प्रभम्नीर जे १४ मी सदीमां थइ गया छे, जेमगे अनेक चरित्री अने रासी अपभ्रंशमां लखेला है, जेटली अपभ्रंशनी कविता पाटग-ना भंडारोमां एमनी मळे छे, तेटली बीजा कोइ पग कविनी नथी मळती.
- ४ संस्कृत अने प्राकृतमां बनेला आ तर्थिकल्पी प्रसिद्ध है. एना कर्त्ता जिनप्रभसूरि खरतरगच्छनी लघुशाखामां थइ तेमणे आ तीर्थकल्पसंग्रह विक्रमनी १४ मी सदीना उत्तरार्धमां बनाच्यो छे.

अंश अने लोकभाषामां लखायेला उपर्युक्त लक्षणवाला स्तव-नोनी कोटिना अनेक प्रबन्धो आजे दृष्टिगोचर थाय छे.

चैत्यपरिपाटी स्तवनोनुं लक्षण प थया करे छे के कोइ पण गाम के नगरनां यात्राना समयमां क्रमवार आ-वतां देहरासरोनां नाम, ते ते वासोनां नाम, तेमां रहेली जिनप्रतिमाओनी संख्या विगेरे जणाववा पूर्वक महिमाछं वर्णन करवुं अने तेनी स्तुति करवी. विजयसेन स्रिनो रेवंतगिरिरासो<sup>१</sup>, हेमहंसगणिनी गिरिनारचे-त्यपरिवाडी, सिद्धपुरचैत्यपरिवाडी, नगागणिनी जाल् होरचैत्यपरिवाडी विगेरे संख्यावन्ध चैत्यपरिवाडिआ उपर जगावेल लक्षणवाली आजे विद्यमानता धरावे

<sup>9</sup> आ रासो प्राचीन गूजराती भाषामां छखायेछो छे, एना कर्ता विजयसेनसूरि नागेन्द्रगच्छमां प्रासिद्ध मंत्री वस्तुपाछना समयमां अर्थात् विक्रमनी तेरमी सदीना उत्तरार्थमां थइ गया छे. वस्तुपाछना संघ साथे गिरनारनी यात्राये गया ते समये तेमणे आ रास बनाव्यो हतो.

२ हेमहंसगी प्रसिद्ध आचार्य मुनिसुंदरसूरिना शिष्य हता, तेओ सोळमी सदीना प्रथम चरगमां विद्यमान हता, आरंभासिध्य-वार्तिक, न्यायमञ्जूषा विगेरे अनेक विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थो एमगे बना-ज्या छे. आ चैत्यपरिवाडो तेमगे क्यारे बनावो ते जगाव्युं नथी, प्रमा सोळमी सदीनी शहआतमां ज बनावी होवानी संभव छे.

३ आ चैत्यपरिवाहीना कर्त्ता के समयनो पत्तो लाग्यो नथी, पिरिवाही जूनी होवानो संभव छे.

४ आ चैत्यपरिवाडी सं. १६५१ ना भाद्रवा वादे ३ ने

छे । प्रस्तुत 'पाटण बत्यपरिपाटी' पण प ज बीजी को टिनो नि-बन्ध हो.

आटला विवेचन उपरथी समजायुं हशे के तीर्थ चैत्य-यात्राओं अने नगर चैत्ययात्राओं करवानो रिवाज जैनोमां घणाज प्राचीन कालथी चाल्यो आवे छे. आ रिवाजोनी प्राची-नता ओच्छामां अ(च्छी बे हजार वर्षनी होवी जोर्ये एम पूर्वे सुचवेल शास्त्रवाक्योथी सिद्ध थाय छे, अने ए उपरथी तीर्थमालास्तवना अने चैत्यपरिपारीस्तवनो लखवानी रूदि पण घणी प्राचीन होबी जोइये ए वात सहेजे समजी श-काय तेवी छै; छतां पण परलुं तो सखेद जणाशवुं पडे छे के आ प्रवृत्तिनी प्राचीनताना प्रमाणमां तेना वर्णनयन्थो, ती-र्थभाळास्तवनो अने चैत्यपरिपाटी स्तवनो तेटलां प्राचीन अ।जे महतां नथी.



दिने जालारमां बनी हती, एना कर्ता नगा वा नगर्षिगांग आवार्य श्रीहीरविजयमृरिना शिष्य कुशलवर्धनगागेना शिष्य हता.

स्व० आचार्य श्रीविजयधर्मसृरिजीए संपादन करीने भाव-नगरनी श्रीयशोविजय जैन प्रन्थमाला द्वारा 'प्राचीन तीर्थमाला संप्रह' नो प्रथम भाग बहार पाड्यो छे. जेमां जुदा जुदा कविओनी करेली चैत्यपरिवाधिओं, तीर्थमालाओं अने तीर्थस्तवनी मळीने २५ प्रबन्धी हे. ए सिवाय पग संख्याबंध तीर्थमालाओं अ**ने चैत्यपश्विाहीओ** जैन भंडारोमां आस्तित्व धरावे छे.

## पाटण.

### **─19400**

प्रस्तुत परिवाडो जेना नाम साथे बंधायेली छे, ते पाटण नगरनो आ स्थले संक्षेपमां परिचय आपवो उपयोगी गणादो.

'पाटण' प गुजरातदेशनी राजधानी-हिन्दुस्थानना प्रा-चीन अने प्रतिद्ध शहेरोमांनुं एक छे, पतुं वास्तुस्थापन जैन मंत्रोथी थयुं हतुं, पनो वसावनार 'वनराज' नामनो चावडावंशनो एक बाहोश शूरवीर राजपुत्र हतो, ते नागे-न्द्रगच्छना जैन अवार्य शीलगुणसूरिनो परम भक्त जैन उ-पासक हतो १.

वनराज पोते, तेना राजकारभारियोनुं मंडल अने तेनी प्रजानो अधिक भाग जैनधर्मी होइ पाटण दाहेर ए ते वख-तमां गुजरातना जैनोना धार्मिक साम्राज्यनी राजधानी बनी

१ वनराजने बाल्यकालमां ज उक्त शीलगुगसूरिए आसरी दीधो हतो, तथी कृतज्ञ प्रकृतिना वनराजे पाछळथी पोते राजा थतां जैनधर्मनी कीमती सेवा बजावी हती, एटलुं ज नाहे बलके पाटगमां नामी जैन मंदिर बनावरावी पोतानी कीर्तिने विशेष अमर करी हती. वनराजनुं बनावेलुं आ 'वनराजविहार' नामनुं चैत्य सं. १३०१ मां विद्यमान हतुं ए वात नीचेना शिलालेख उपस्थी जणाशे:—

<sup>&</sup>quot; संवत् १३०१ वर्षे वेशाख शुदि ९ शुक्रे पूर्वमण्डलिवास्तव्य मोढज्ञातीय नागेन्द्रा......सुत श्रे० जाल्हणपुत्रेग श्रे० राजकुाक्षे-

गयुं हतुं. जैनोमां चालता ते समयना सर्व गच्छ अने मतोनुं अस्तित्व पाटणमां जणाइ आवतुं हतुं.धर्मवीर अने युद्धवीर जै नोनी व्यवस्था अने आबादोधी पाटण एक वखत पूरी जाहो-जलाली भोगवतुं थयुं हतुं. विक्रम संवत् ८०२ ना वर्षमां पहेल प्रथम 'अणहिलवाड 'वा 'अणहिलपाटण' प नामथी पाटण वस्युं अने दिवसे दिवसे उन्नति करतुं चावडावंज्ञना राजाओनी राजधानी तरीके प्रसिद्ध थयुं.

चावडा वंशना कुछ ७ सात राजाओए १ राज्य कर्या बाद पाटणनी राज्य लगाम चौलुक्य वंशना राजाओना हाथमां गई, आ वखते पण पाटण पूरी जाहोजलालीमां हतुं,

समुद्भवेन ठ० आसाकेन संसारार.....योपार्जितवित्तेन अस्मिन् महाराजश्रीवनराजाविहारे निजकीर्तिवल्लीविस्तार ......विस्तारितः। तथा च ठ० आसाकस्य मूर्त्तिरियं सुतठ० आरेसिंहेन कारिता प्रतिष्ठिता ......सम्बन्धे गच्छे पंचासरातीर्थे श्रीशीलगुणसुरिसंताने शिष्य श्री.....देव बन्दसूरिभिः ॥ मंगलं महाश्रीः ॥

( पाटगमां पंचासरापार्श्वनाथना मंदिरमां रहेली ' वनराज 'नी मूर्ति पासेनी उ० आसाकनी मूर्तिनी शिलालेख)

- पाटगनी राजगादी उपर नीचेना आठ चावडावंशी राजाओ थया छे:—
- ९ वनराज २ योगराज ३ रत्नादित्य ४ वारेसिंह क्षेमराज ६ चामुंडराज ७ राहड ८ सामंतासेंह ।

परलुंज नहिं पण पारणना चौलुक्य राजाओप आसपासना देशो जीती पोतानी राजसत्तानो विशेष वधारो करवा मांड्यो जे कुमारपाल सुधी चालु रह्यो,कुमारपाल जे चुस्त जैनधर्मी हतो, तेणे पाते पण अनेक लडाइओ करी उत्तर मारवाड, कौंकण विगेरे अनेक देशोना राजाओने जीतीने गुजरातना महाराजाधिराज तरीके पोतानी सत्ता सर्वोत्कृष्टवनावी हती, परंतु गुजरातनी उन्नतिनी आ छेली हद हती, ए पछीना गुजरातना राजाओए पोतानी सत्ता वधारी होय एम इतिहास जणावतो नथी. आ तो राज्यसत्तानी वात थइ पण गुजरातमां अने खास करोने पाटणमां जैनधर्मनी प्रबलता पण कोछी न हती, चावडावंदाना तमाम राजाओ जैनधर्मना पालनारा नहिं तो उपासक तो अवस्य हता, मंत्रिमंडल अने बीजा राजकर्भचारियों पण प्रायः जैनो होइ प्रजानो अन्यधर्मी वर्ग पण जैनधर्मने पूज्य दृष्टिथी जोतो, आ स्थिति चौलुक्य पहेला भीम सुधी चालती रही, भीमना वसतमां तेना वीर दंडनायक विमल अने राजा वचे वेमनस्य उत्पन्न थतां पारणनी जैन प्रजाने कंइक धको पहींच्यो होय तो बनवा -जोग छे. एम कहेवाय छे के दंडनायक विमलने विषे राजा भीमना मनमां कंइक विपरीत भाव उत्पन्न थयो, चतुर अने मानी विमलने राजाना मननी स्थितिनुं ज्ञान थतां दिल-गीरी अने दयानुं पात्र न बनतां ते गुप्तपणे पारणनो त्याग करी चाली निकल्यो, अने तेणे आबुना दक्षिण कटिभागमां वसेली चंद्रावती नगरीमां आवीने निवास कर्यो, चंद्रावतीनीः

मथमनो राजा <sup>१</sup> विमलना आगमनथी डरी जह भागी जतां विमल त्यांनो राजा थड्ने रह्यो. <sup>२</sup>

राजानी <sup>उ</sup>नाराजगीथी जैन समाजनो मान्य पुरुष विमल पाटण छोडीने चाल्यो गयो, प वात जाहेर थतां पाटणनो

- १ आ राजानुं नाम क्यांइ जगाव्युं नथी, कोइ परमार वंशीय राजा हतो, धारनो धंधुक तो न होय?
- २ विमल चन्द्रावतीनो राजा थयानी हकीकत विमल अबन्धमां जणावेली छे.
- ३ कुमारपालना समकालीन हिरिभद्रस्रि मन्त्रीश्वर पृथ्वी-पालनी प्रार्थनाथी रचेल चन्द्रप्रभस्वामिचरित(प्रा.) नी प्रश-स्तिमां जगावे छे के विमल दण्डनायक भीमदेव राजाना ववनथी सकल शत्रुना वैभवने ग्रहण करी प्रभुप्रसादथी प्राप्त थयेल वड्डावली (चन्द्रावती) विषयने भोगवतो हतो. जुओ ते उल्लेख:—
  - " सिरिभीमप्वरक्ते नेढो ति महामई पढमो ॥ बीओ उ सरयससहरानिस्मलगुगरयगमंदिरमुदारं । निययप्पहापअरियतरणी विमलो ति दंडवई ॥ अह भीमप्यनरवइवयगेण गहीयसयलरिजविहवो । बङ्गाबल्लीविसयं स पहुबल्द्धं ति भुंजंतो ॥ "
- —( वि. सं. १२२३ मां लखायेली पाटगना संघवीना पाडाना जैनभंडारनी ताडपत्र प्रांति ). आ अभिप्रायने अनुसरता मलाधरी

जैन संघ राजा उपर भारे गुस्से थयो,पटलुं ज नहिं,पण सेंकडो जैन कुटुंबो विमलनुं अनुसरण करी पाटण छोडो चंद्रावतीमां जड़ने वस्यां जो उपरनी हकीकत साचा इतिहासमां खपती होय तो कहेवुं जोइये के पहेला भीमदेवना वखतमां पाटणनी जैन वसतिमां कंइक भंगाण पड्युं हरो ज,परंतु आ बनाव साचो होय तो पण तेनी विद्येष स्थायी असर थर् जणाती नथी, कारण के ते पछीना चौलुक्य राजा कर्णदेव, सिद्धराज, क्रमारपास विगेरेना राज्यकालमां पण लगभग तमाम राज्य-कारभार जैन मंत्रिओना हाथमां ज हतो, परछुं ज नहिं पण सिद्धराज के जे शैवधर्मी हतो छतां जैनधर्म अने जैनधर मीओने घणुं ज मान देनारो अने जैन विद्वानीने पूजनारी हतो ए उपस्थी समजाय छे के पाटणमां जैनधर्मनी प्रव-लता घणा लांबा काल सुधी टकी रही हती. कहेबाय छे के पक समये प्रसिद्ध आचार्य श्रीहेमचन्द्रस्रिनुं पाटणमां आगमन थयुं त्यारे १८०० अहारसो कोटिध्वज दोठिआओ

राजदोखरस्रि वि. सं. १४०५मां रवेला प्रवन्धकोषमां— वस्तुपालप्रबन्धमां-- प्राग्वाटवंशे श्रीविमलो दण्डनायकोऽभवत् । स विरमबुदाधिपत्यमभुनक् गूर्जरेश्वरत्रसत्तेः' अर्थात् 'गूर्जरेश्वर (भीमदेव) नी प्रसन्नताथी विमले लांबा समय सुधी आवू उपर आधिपत्य भोगव्युं हतुं. ' एम जणावे छे.

आ उल्लेख जीतां विमलने भीमदेव साथे वैमनस्य थवाना बृतान्त माटे सन्देह राखवो पडे छे. — ला. भ. गांधी ]

तेमना नगरप्रवेश महोत्सवमां एकठा थया हता. १ आ एकज दाखला उपरथी पारणना जैनोनी संख्यानो अने तेमनो समृद्धि-नो ख्याल आवी जरो. कुमारपाल पछी पाटणनी राज्यगादीप आवेला अजयपालना वखतथी पाटणना जैनोनी अने साथे ज राज्यनी अवनतिनो पायो नंखाणो. अजयपाठे घणा खरा जुना जैन मंत्रिओने पदभ्रष्ट कर्या अने केटलाकोने भयंकर शिक्षाओ करी. खास करीने कुमारपालना मरजीदान मनुष्योने अजः यपाले भारे त्राप्त आप्यो, र कुमारपालनां पुण्यकार्योनो तेण बन्धं तेटलो नाहा कथीं, पण आवां अधन कामी घणा काल सुधी करवाने ते जन्म्यो न हतो, राज्याभिवेकने त्रीजे ज वर्षे अजयपालनुं तेना एक नोकरना हाथे खून थयुं अने त्यार पछी धार्मिक विष्छव बंध थयो, राज्यकारभार पण पाछो नियमित थइ गयो पण सिद्धराज अने कुमारपाले जे गुज-रातना राज्यनी हद वधारी चौलुक्य राजाओनी सार्वभौम सत्ता स्थापन करी हती, ते लांबी काल टकी शकी नहिं. जे क्रमथी पाटण अने तेना राजाओनी सता दिवसे दिवसे वधी हती ते ज क्रमथी घटवा लागी, अजयपाहना वखतथी

आ हकीकत हिन्दी कुमारपाल घरितनी नामां जोवी.

२ हेम बन्द्रसूरिना शिष्य राम बन्द्र, मंत्री कपदी आदि हेम-चन्द्र अने कुमारपालना मानीता पुरुषोंने अजयपाले केवी भयंकर शिक्षाओं करी हती ते प्रबन्ध चिन्तामणिमां चौलुक्य राजाओंनो इतिहास जीवाथी जणाशे.

पाटणना राज्यकारभारमांथी जैन गृहस्थोनी हाथ निकलवा लाग्यो हतो, प्रसिद्ध पोरवाल वीर जैन मंत्री वस्तुपाल अने तेजपालना समयमां थोडाक वंबतने माटे गुजरातनी झांखी पडेली कीर्ति पाछी उज्ज्वल बनी हती. जो के अजयपालना वखतथी गुजरातनी राज्यसत्ता मंद थवा मांडी हती तो पण बाघेला चौलुक्य सारंगदेव पर्यन्त गुजरात देश अने तेना राजाओए पोतानुं महस्य ठोक ठीक टकावी राख्युं हतुं, पण छेहा राजा करणवाघेलाना समयमां पाटण अने गुजरातना उपर हमेशाने माटे पराधीनतानी दंड पड्यो. १

वनराजथी उगेल, सिद्धराज अने कुमारपालथी उन्नतिनी छेल्ली हदे पहोंचेल पाटणनी कीर्तिवल्ली करण वाघेलाना वखतमां सदाकालने माटे करमाई गई.

आ प्रमाणे वनराज, भीमदेव, सिद्धराज, कुमारपाल जेवा युद्धवीरोना पराक्रमोथी, जांबक, चंपक, विमल, शांतु,

पाटगनी राजगादी उपर चौलुक्य अने एज वंशनी वाघेला शाखाना राजाओ नीचेना क्रम प्रमाणे थया छे:—वौलुक्य राजाओ:-१ मूलराज (१) २ चामुंडराज ३ वल्लभराज दुर्लभराज ५ भीमदेव (१) ६ कर्गदेव (१) ७ जयसिंहदेव (सिद्धराज) ८ कुमारवाल ९ अजयवाल १० मूलराज (२) ११ भीमदेव (२) १२ त्रिभुवनपाल ।

वाघेला राजाओ- १ धवल २ अर्गीराज ३ लवगप्रसाद अ वीरधवल ५ वीसलदेव ६ अर्जुनदेव ७ सारंगदेव कर्णदेव ।

उदयन, बाहड, संपत्कर, वस्तुपाल, तेजपाल जेवा बाहोश मुसद्दोभोनी कार्यकुशलताथी उन्नतिना शिखरे चढेलुं पाटण -गुजरातनं राज्य कर्णवाघेलानी स्त्रीलंपटता अने माधव अने केशव जेवा झेरीली प्रकृतिना नागर कारभारियोना पापे पकवेला स्वर्गीय नगर बनेलुं पःटण संवत् १३५६ ना वर्षमां अलाउद्दीनना सेनापति मलिक काफुरना हाथे जमीनदोस्त थयुं,पक्त वेला जे स्थले हजारो कोटिध्वज श्रेष्टियोनी हवेलीओ शोभी रही हती, ते प्राचीन पारणना स्थानमां आजे पक वे कुआ वावडी के बे च्यार प्राचीन मकानीना खंडहरी १ सिवाय जंगली झाड अने घात उगेलां नजरे पडे छे, जे स्यान लाखो मनुष्योनी वसतिथी रळीयामणुँ हतुं ते आजे सियाळ अने वर जेवां उंगठी जानवरोनी लोलामूमि बनी रह्यं छे!



मुसलमानोना हाथे नष्ट भ्रष्ट थयेलुं पाटण फरिथी क्यारे आबाद थयुं तेनो चोक्कस समय क्यांइ मलतो नथी.

प्राचीन पाटगना अवशेषी तरीके आजे 'राणकी वाव?' अने 'दामोदर कुओं ' ए वे मुख्य गगाय छे, एना संबंधमां लोको-मां कहेवत छे के- राणकी वाव ने दामीदर कुओ, जीयी नहि ते जीवतो मुओ. ' ए सिवाय एक मोदं मकान्तुं खंडेर

छतां केटलाक बनावो उपरथी पम कही शकाय के वर्तमान पाटण विक्रम संवत्र३६०अने १३७९नी वचे बसेलुं होवं जोहये. पाटणनी 'जैन मंदिरावली'नी प्रस्तावनामां तेना लेखके जणावेलुं छे के- "अहाउद्दीनना वखतमां प्राचीन पारणनो नादा थतां सं० १४२५ ना वर्षमां आ वर्तमान पाटण फरिथी वस्यं छे."

पण आमां जणावेली साल खरी होवामां शंका छे. संवत् १३५६ मां नाद्या पामेलुं नगर वे पांच वर्षमां पाछुं न वसतां लगभग अर्धसदीथी पण अधिक समय पछी वसे प वात साची मानवामां जरा संदेह रहे छे. जो प्राचीन नगर सर्वेथा नादा पामी गयुं होय अने नवेसर वसवा जेवी स्थित उभी थइ हाय त्यारे तो ते तरत ज वसवं जोइये, अने जो मुसलमानोना हाथे पटलुं बधुं नुकदान न थयुं होय के जेथी फिन्ने शहर नवुं वसाववुं डे तो त्यार बाद साठ सित्तेर वर्षमां ज पवुं शुं कारण आशी प ्युं हशे के मुसलगानीना हाथे जोखमायेल पाटणमां ६० वर्ष पर्यन्त रहीने फरिथी नागरिकोने नवुं पाटण वसाववुं पड्युं होय?

अमारा अनुमान प्रमाणे तो आधुनिक पारण सं०१४२५ मां निहं पण १३७० नी आसपासमा वसेल होवुं जो हये, 1 कारण के पाटण भंगना घलनथी पाट मां बनतां जैनमंदिरो

उंची चट्टान पर आवेछुं छे, लोको तेने 'राजमहेल' कहे बीजी पण प्रचुरण निशानीओं त्यां सेंकडी मले छे.

१ वि.सं. १३७१मां शत्रुंजयतीर्थना उद्घारक संघपाते देसल अने समरा साह पाटणमां वसता हता, एटले ते समये पाटण हवात ज हतुं. –ਲਾ. ਮ. ਗਾਂਬੀ.

अने प्रतिमानी प्रतिष्ठाओं एकदम बंध पडे छे अने ते सं० १३७९ ना वर्षमां पाछी शरू थती देखा दे छे अने ते पछीना वखतमां ते प्रवृत्ति दिवसे दिवसे वधती जती जणाय छे, संवत् १३७२ अने १३८१ नी सालमां खरतरगच्छ संबन्धी शान्तिनाथ विधिचेत्यमां जिनकुशत्रसूरिना हाथे अनेक जिनबिम्बो अने आचार्यमूर्तिनी प्रतिष्ठाओ थाय छे, आ ज्ञांतिनाथ विधिवैत्य आजे पण खराखोटडीना पाडामां सुधरेल दद्यामां विद्यमान छे. संवत् १४१७, १४२० अने १४२२ ना वर्षमां पण पाटणमां प्रतिष्ठाओ थयाना लेखो त्यांनी मुर्तिओ उपस्थी मली आवे छे, तेथी आ वात निश्चित थाय हो के प्राचीन पाटणना भंग पछी संवत् १३७९ ना वर्ष पहेलाना कोइ पण वर्षमां आधुनिक पाटण वसी गयुं होवं जोइये

उपर प्रमाणं चौदमी सदीना छेला चरणमां फरिथी वसेल नूतन पारणे पण दिवसे दिवसे उन्नति करवा मांडी अने वखत जतां ते पोतानी प्राचीन कीर्तिने जालवी राख-वाने योग्य थइ गयुं, अलाउद्दीनना जुल्मथी त्रास पामेला, मुनलमानीना नामथी पण भडकता हिन्दुओनां हृदयो तुग-ल क फिरोजशाहनी सरदारीना वसतमां कंइक शांत पड्यां, मुसलमानोना भयनी शंकायी नवीन देहरासरी बनाववामां संकोचाता हिन्दुओ फिरोजकाहना वसतमां निर्भय थया अते फरिथी नवीन चैत्यो बनाववामां प्रवृत्त थया, आपणा आ पारणमां पण आ चलतथी मांडीनेज नवां देहरां अने नहीं प्रतिमाओं विशेष प्रमाणमां बनण लागी. जे प्रवृत्ति लगभग सत्तरमी सदीना छेडा पर्यन्त चालु रही, आ लग-भग त्रणसो वर्ष जेटला लांबा गालामां प्रस्तुत नवीन पारणमां सेंकडो देहरां अने हजारो प्रतिमाओ वनी चुकी हती, लीलुं झाड प्रचण्ड पवनना झपाटाथी पडी जतां तेना ज सूत्रमांथी फूटेला फणगा कालान्तरे मूलवृक्षतुं रूप धारण करे छे, तेज रीते प्राचीन पाटण अलाउद्दीनना अन्यायनो भोग थइ पडतां तेना ज सीमाप्रदेशमां नवुं वसेलुं पाटण कालान्तरे एक समृद्ध नगर बनी पोतानी पूर्व ख्यातिने ताजी राखदा समर्थे थयुं. प्रस्तुत चैत्यपरिवाडी ते आ बीजा पाटणनी समृद्ध दशाना समयमां बनेली तात्कालिक जैनमंदिरोनी नोंध वा 'डीरेक्टरी' समान छे.

## कर्ता अने समय-निर्देश.

आ चैत्यपरिवाडीना कर्ताकोण छे अने तेमणे आ परिवाही क्यारे बनावी इत्यादि हक्षीकत तेमणे पोतेज समाप्ति छेखमां जणावा दीघी छे, जेनो सार आ प्रमाणे छे-

'पूनमिया गच्छनी चन्द्र(प्रधान)शाखामां भुवनप्रभ-सूरि थया, तेमनी पाटे कमलप्रभस्रि अने कमलप्रभनी पाटे आचार्य श्रीपुण्यप्रमञ्जूरि थया, पुण्यप्रभना पट्टधर विद्याप्रभ-सूरि थया, विद्याप्रभसूरिना पृष्टघर शिष्य श्रीलिखतप्रभः सूरि थया, ते लिंडितप्रभन्नुरिए विक्रम संवत् १६४८ ना आसोज वदि ४ अने रिवदारने दिवसे अगहिल पाटणमां आ पारणनी चैत्यपरिवाडी बनावी.

१ सं. १६६७ ना कार्तिक सुदि ७ ने ग्रुकवारने दिवते पाटण-मां उवाध्याय श्रीधर्मसागरजीने संघवहार करनार जुदा जुदा गर्डोना १२ आचार्योमां आ विद्याप्रभमूरि पग सामेल हता।

उपरनी नोंध सिवाय परिवाडीकार लिलतप्रभसुरिना संबन्धमां विदोष हकीकत जाणवामां आबी नथी. १ तेमनी कृति उपरथी तेओ सारा विद्वान् होवानो दावो करी शकता नथी, परंतु आ प्रस्तुत कृति तेमनी संग्रहशीलतानी सारो परिचय आपे छे, यंथकार पोते पूनमगच्छना आचार्य होइ ढंढेरवाडामां रहेता हता,<sup>२</sup> अने तेथी ज प्रस्तुत परि-वाडीनी शहआत तेमणे ढंढेरवाडाना चैत्योथी ज करेली जणाय छे, तेमना पछी लगभग ८० वर्षे बनेली बीजी पाटण-चैत्यपरिवाडीनी शहआत पंचासराना चैत्योथी थाय छे. कारणके तेना कर्ता हर्षविजय तपागच्छीय यति हता अने तपागच्छना यतियोनुं मुख्य आश्रयस्थान पंचासरामां हतुं. आ प्रमाणे जुदा जुदा कर्ताओनी परिवाडीओ जुदा जुदा स्थानोथी दारु थनां वासोना अनुक्रममां घणो घाँटालो थइ जाय छे, अने तेम थतां एकनी साथे बीजी चैत्यपरिवाडीनुं मेलान करवामां केटली मुक्केलीओ नडे छे, तेनो ठीक ठीक अनुभव आ प्रस्तायमाना लेखकने थयो छे.

१ प्रस्तुत लिलतप्रभम्रिए वि. सं. १६५४ मां प्रतिष्ठित पंव-तीर्थी (सम्भवनाथ बिम्बनी मुख्यतावाली) धातुप्रतिमा चाणसमा गाममां जिनमन्दिरमां विद्यमान छे. (जूओ जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह भा० १, १०१)

लिलतप्रभस्रिए वि. सं. १६५५ मां अणहिलपाटणमां ढेंढेर-बाडाना उपाश्रयमांज श्रीचंदकेवलिचरित(रास) पण रच्यो छे.

<sup>—्</sup>ला, भ, गांधी,

२ आजे पण ढंढेरावाडामां पूनमगच्छनो उपाश्रय मौजुद छे.

## परिवाडीनो परिचय.

प्रस्तुत वैत्यपरिवाडी कविता-साहित्यनी दृष्टिए विशेष उपयोगी न होवा छतां पुरातस्वनी दृष्टिए घणी उपयोगी छे, परिवाडीकारे ते समयनां पाटणनां तमाम जनमंदिरोनां नाम, तेमां रहेली प्रतिमाओनी संख्या, तेना बनावनारानां नाम, जे जे वासोमां जे जे वैत्यो आवेलां छे ते ते वासोनों नामनिर्देश इत्यादि हकीकतो जणाववानो जे महान् परिश्रम उठाव्यो छे ते आपणे माटे घणो उपयोगी निवड्यो छे, आजथी सवा त्रणसो वर्ष उपर पाटणमां केटलां देहरां हतां, ते सर्वमां केटली प्रतिमाओ हती, देहरां बनावनारा शेठिआओनां शां शां नामो हतां, ते वेलाना पाटणना भाविक जैन गृहस्थोमां धम्भद्धा केवी होत्री जोइये,साथे ज तेमनी पासे द्रव्यवल पण केटलुं होवुं जोइये इत्यादि अनेक वातोनां सावां अनुमानो करवानुं आ वैत्यपरिवाडी उपर्थी बनी शके तेम छे.

चैत्यपरिवाडी-यात्रानो साचे साचो ढंग लेखके आ परिवाडीमां गोठव्यो छे, जाणे के पोते संघनी साथे नग-रनी चैत्ययात्रा करवा निकल्या छे अने क्रमवार वच्चे आवतां तमाम देहरांओने वांदता जाय छे. संघ जे वासमां जाय छे ते वासनुं नाम पोते प्रथम सूचवे छे, पछी तेमां केटलां देहरां छे तेनी संख्या जणावे छे, पछी मूलनायकोनां नाम अने छल्ले तेमांनी प्रतिमाओनी संख्या, आ ढंग लेखके लगभग आखी परिवाडीमां जालवी राख्यो छे, पण प्रतिमाओनी संख्या जणाववामां जरा घोंटालो करी दीधोः छे, ते पत्री रीते के केटलैक ठेकाणे तो पोते मूलनायकन् नाम लखी "अवर प्रतिमा" "अवर जिनवर" इत्यादि उहेखोनी साथे विबोनी संख्या जणाये छे के जेनो अर्थ मूलनायक सिवायनी प्रतिमाओनी संख्या जणावनारी थाय छे, ज्यारे घणे टेकाणे ''अवर'' के ''अन्य'' कंइ पण ज्ञाब्द-प्रयोग कर्या वगर प्रतिमासंख्या लखी दोये छे तेथी तेवा स्थशेषां ए दोका रही जाय छे के आ संख्या मूलनायक सहितनी जाणवी के मूलनायक सिवायनी प्रतिमाओनी? आनो खुळासो मूळनायक सहित गणतां थतो नथी, तेम मू इनायक सिवायनी प्रतिमाओनी संख्या गणतां पण थतो नथी, पारण के बेमांथी कोई पण रीते गणतां आखेरी विम्ब-संख्याना सरवाली मलतो नथी. पथी प वात सहेजे जणाइ आवे छे के अन्यकारे जणावेली ते ते चैत्योनी प्रतिमा-मंख्या वे.टलेक ठेकाणे ता मूलनायक सहितनी छे अने केटलेक स्थले ते सिवायनी छे, पण सहितनी क्यां अने रहितनी क्यां तेनो खुलासो थवो अशक्य छे.

यन्थकारे जेम प्रत्येक वासनां देहराओनी संख्या अने तेनी प्रतिमासंख्या जणावी छे, तेम आखा नगरनां सर्व देहराओनो आंकडो अने सर्व प्रतिमाओनी संख्यानो आं-कडो पण तेमणे जणावी दीधा छे.

परिवाडीकार प्रतिमासंख्या जणावतां पहेलां देहरा-ओने वे विभागमां वहेंची दिये छे, म्होटां जिनमंदिरोने पोते 'चैत्य' अने 'देहरां' कहें छे अने तेनी संख्या १०१ पकसो ने पक जणावे छे, छोटां वा घरमंदिरोने 'देहरासर' नामथी उल्लेखे छे. अने तेनी संख्या ९९ नवाणुं होवां कु कहे छे, पहेला दर्जानां चैत्योनी प्रतिमासंख्या ५४९७ पांच हजार चारसो ने सत्ताणुंनी जणावे छे, बीजा प्रकारनां जिनमदिरो-घरमंदिरोनी कुल प्रतिमासंख्या २८६८ बे हजार आठको ने अडसठ पटली जणावे छे.

एज प्रसंगे प्रतिमाओनी नोंध करतां परिवाहीकार लखे छे के पाटणमां १प्रतिमा विदुम-प्रवाहानी छे, २ सी-पनी अने ३८ अडत्रीश रतननी प्रतिमाओ छे, ४ च्यार गौतम स्वामीनां विव छे अने ४च्यार चतुर्विशतिपट्टको छे.

आटलुं विवेचन कर्या बाद परिवाडीकार बन्ने प्रकार रनां चैत्योनी प्रतिमाओनी कुलसंख्यानो ८३९४ प आंकडो जणावे छे,पण पूर्वे जणाव्या प्रमाणे अत्र पण संख्यानो सर-वालो मलतो नथी, बन्ने प्रकारनां चैत्योनी प्रतिमाओनो

१ बीजा चैत्यपरिवाडीकारोए पण म्होटां मंदिर वा जिनप्रा-सादोने माटे देहरुं' अने छोटां घरमंदिरोने माटे 'देरासर' शब्द वापर्यों छे जुओ-''देहरासर तिहां देहरा सरखुं" (हर्षविजयकृत पाटण चैत्यपरिवाडी) '' जिनजी पंचाणुने माझने श्रीजिनवर-प्रासाद हो ××× देहरासर श्रवगे सुण्या पंच सया सुखकार हो " (हर्षविव्पाव्चैव्परिव) '' सूरतमाहे त्रण भूयरां देहरां दश श्रीकार दोय सय पणतीस छे देहरासर मनोहार ॥"(लाधा-शाहकृत मूरतचैत्यपरिवाडी-शाचीन तीर्थमालासंग्रह भाव १ पृव्ह ७)

सरवालो ५४९७+२८६८=८३६५ आठ हजार त्रणसो ने पांस-ठनो थाय छे, अने जो रत्नादिनी प्रतिमाओ जुदी गणीने तेनी ४१ प संख्या आमां उमेरीप तो सरवालो ८४०६ प आवे छे, पण परिवाडीकारे आपेल टोटल मलतुं नथी, पतुं कारण तेमनी गफलत नहिं, पण तेमनी मानसिक अपेक्षा छे. पटले के आपेली छेली संख्या पूर्वोक्त वे संख्याओनो मात्र सरवालो ज नहिं पण ते संख्यामां केटलीक परचुरण संख्या वधारीने जणावेली संख्या छे, पण आ अपेक्षा निब-न्धकारे शब्द हारा व्यक्त करी नथी.'

पाटण शहेरनी चैत्यपरिवाही पूरी करीने तेने छगती ज पाटणनी आसपासनां न्हानां म्होटां छगभग १२ गामडा-ओनी चैत्यपरिवाडी पण आ साथे जोडी दीधी छे.

आ १२ बार गामोना चैत्योनी संख्या २५ अने प्रतिमा-संख्या १२०७ जेटली थाय छे, आ संख्या पूर्वोक्त पाटणनी प्रतिमासंख्यामां जोडीने परिवाडीकारे आ प्रमाणे संख्या जणावेली छे-९५९८नव हजार पांचसो ने अठाणुं. आ संख्यामां पण ३ ना फरक आवे छे.

परिवाडीकारनी जणावेली पाटणनी विवसंख्याना ८३९४ प आंक्षडो अने बहारगामनां चेत्योनी विवोनी सं-ख्यानो आंक जे १२०७ नो थाय छे; प बेने भेगा करतां ८३९४+१२०७=९६०१ नव हजार छ सो ने पक थाय छे, ज्यारे परिवाडीकारे आपेली संख्या ९५९८ छे.

प ज रीते आपणे प्रत्येक महोलाना चैत्योनी प्रतिमा-

आनी संख्या तारवीने तेनी जोड देतां जे सख्या आवे छे, तेनो साथे परिवाडीकारे जणावेली पाटणनी प्रतिमासंख्या मलती नथी. तेनु कारण पण लेखकनी संख्याप्रतिपादक पद्धतिनुं अनिश्चितपणुं ज हो इं दाके,वली वे वैत्योनी प्रतिमार् संख्या परिवाडीकारे मुद्दल जणावी नथी, तेथी पण तेमनी संख्या आपणी तारवेली संख्या साथे नहिं मलती हाय तो बनवा जोग छे.

परिवाडीबा परिशिष्टक्षे जणावेली १२ गामोनी चैत्यपरिवाडीमां क्षपपुरनी चैत्यसंख्या ध्यान खेंचनारी छे, तेमां
कुले १० जिनमंदिर अने ३६७ जेटली प्रतिमा जणावी छे.
क्षपपुर पूर्वे केवडुं न्होंटुं होवुं जोइये ते वात आ वर्णन उपरथी
जणाइ आवे छे. जे वेला क्षपपुरनी प दशाहती, ते वखते
चाणसमामां मात्र एक मंदिर अने ३४ प्रतिमाओ हती.
आजे क्षपपुरमां मात्र एक मंदिर २९ प्रतिमा छे अने श्रावकोनां ३-४ त्रणच्यार घर छे, ज्यारे चाणसमामां ८-१०
मंदिर जेवडुं विशाल चैत्य छे, अने अनेक प्रतिमाओ छे,
जैनवस्ति एण घणी छे. एम लागे छे के क्षपपुरनी वस्ति
तूटवाथी ज चाणसमानी विशेष आबादी थइ हशे कालानतरे शहरनां गाम अने गामनां शहर केवी रीते बने छे,
तेनो आ प्रत्यक्ष पूरावो छे.

पश्चिराडीकारे कोइ ठेकाणे ए बातनो खुलासो नथी कर्यों के पोते जे प्रतिमासंख्या जणावे छे ते केवल पाषाण-मय प्रतिमाओनी छे के धातु, पाषाण अने रतन विगेरे सर्वे प्रकारनी प्रतिमाओनी 🥄 परंतु परिवाडीकारना आ मौननो खुलासो परिवाडीना परिशिष्टना एक उल्लेख उपर थी स्वयं थइ जाय छे - 'कुमरगिर' ना बीजा चैत्यनी संख्या जणावीने ते "पोतल पहिमा चारसे बली, छन्नं उपरि मनहरु।' आवो पक नवो उल्लेख करे छे,यद्यपि ए उल्लेखनो अर्थ पत्रो पण लेइ दाकाय के 'चैत्यनी प्रतिमा-संख्या गणाव्या बाद आ पीतलमय प्रतिमाओनी संख्या गणःववाथी बीजें सर्व स्थले बतावेली सामान्य प्रतिमासंख्या पाचाणनी प्रतिमाओनी ज होवी जोइए, 'परंतु यन्थकारना अभिवा-यनो विचार करतां आ कल्पना टकी शकती नथी,ए वात खरी छे के प्रन्थकारे कोइ ठेकाणे पीतलनो के धातुनी प्रतिमाओनो जुदो उल्लेख कर्यो नथी, मात्र आ एक ज स्थले कर्यों छे अने ते पण जुदो, छतां ते संख्या तेमणे प्रतिमाओनी कुल संख्यामां सामेल करी छे, जो पाटणनां २०० बसो देहराओनी धातुमय प्रनिमाओने गणनामां न लीधी होय तो कुमरगिरना एक ज देहरानी पीतलनी प्रति-माओने भेली गणवानुं कांइ कारण न हतुं. ए उपरथी खुल्लुं समजाय हे के परिवाडीकारे दरेक वैत्यनी जे प्रतिमा संख्या बताबी छे, तेमां धातुनी प्रतिमाओ पण सामेल समजवानी छे, दरेक ठेकाणे तेनो जुदो उल्लेख न कर-वानुं कारण विस्तार थइ जवानो भय हतो, अने कुमरगि-रमां जुदो उल्लेख करवानुं कारण धातुप्रतिमाओनी बहु-लता बताववी एज होइ शके.

किया वासमां केटलां देहरां अने केटली प्रतिमाओ छे, ते प्रत्येक्षनी तेम ज सर्वनी संख्या परिवाडीना सारमां ते ते स्थले जणाबी दीधी छे. पटलुं छतां पण वासोना नामनी साथे चैत्य अने प्रतिमासंख्यानु कोष्टक आ नीचे आपवामां आवे छे. पनी नीचे सं. १७२९ ना वर्धमां बनेली चैत्यपरिवाडीमां जगावेल वास, चैत्य अने बिंबनी संख्यानुं कोष्टक अने ते पछी वर्तमान समयना पारणना वास अने चैत्यसंख्या जणावनारं कोष्टक आपवामां आवशे, जे उप-रथी सं. १६४८ मां पाटणनी शी दशा हती, १७२९ मां तेमां केरलो फेर पड्यो अने वर्तमानमां पाटणना चैत्योनी केटरी संख्या छे-ए सर्व जाणवारं घणुं सुगमथर पडरो.

## सं. १६४८ मां बनेली प्रस्तुत चैत्यपरिवाडीने अनुसारे श्रीपाटण-चैत्य-प्रतिमा-कोष्ठक १

नं० वासनाम चै० प्र	॰ नं॰ वासनाम	चे॰	प्र०
१ ढंढेरवाडो ११ ५५	६ ७ नागमढ	१	९
२ कोकानो पाडो ३ २६	६ ८ पंचासर	Ġ,	९७
३ खेतरपालनो पाडो१ १६	' 1	१	२३
थ जगुपारेखनो पाडो २ १		3	38
५ पहें ही खारी वाव १	४ ११ पीपलानो पाडो	१	۹
६ बीजी खारी वाव १ १	३ १२ चिंतामणिनो पाडे	13	९५

नं॰ वासनाम	चै० प्र0	ने॰ वासनाम	चै० प्र०
२३ खगकाटडी <sup>१</sup>	८ ३८४	२७ सगरकुई	<b>३ ८</b> ३
१४ त्रांगडोआपाडो	१ ३७५	२८ हेबतपुर	રે ૧૦૬
२५ मणिहट्टिपाडो <sup>२</sup>	२ १८	२९ मोढेरनी पाडी	૧ છ
१६ मांका महेतानी		३० नारंगापाडो	२ २७४
पाडी	१ २१	३१ सोनारवाडो	२ १५
१७ कुंभारीयापाडो	२ ४२	३२ फोफल्रीआवाडो	११ २९५
१८ तंत्राली <b>त्राडो</b>	६ ३५२	३३ जोगीवाडो	३ ६४
१९ खेजडानी पाडी	१९	३४ मफलीपुर	<b>१ १</b> २
२० त्रंबडाबाडो	१ ९०	३५ मालीवाडो	१ २४
२१ वडी पोसालनो		३६ मांडणनो पाडो	३ ८९
<sup>3</sup> पाडो	م دد	३७ गदा वदानो पार	ते ३ <b>९</b> ०
२२ साहनो पाडो	२ १५७	३८ मिहनाथनो पाड	ो १ १७६
<b>२</b> ३ कंस।रवाडो	५ ७६	३९ भाणानो पाडो	१ ९८
२४ भलावैद्यनो पाडा	१ ३	४० समुद्रफडीओ	१ १९
२५ भेंसातवाडी	१ ३६	४१ चोखावटीनो पार	गे२ १८
२६ सहावाडो	२ ६९७	४२ बलीयानी पाडो	<b>१</b> ११

<sup>9 &#</sup>x27;खराकोटडी 'नो अर्थ 'खरतरगच्छवालाओनी बेठक 'अेवो संभव छे, कारण के त्यां खरतरगच्छवालाओनो जत्थो हतो, आजे पण त्यांना रहेवासीयोमांना केटलाक पोताने खरतरगच्छीय तरीके ओलखावे छे.

२ आजे अ वास 'मिंग्याती पाडो कहेवाय छे. ३ हालनो 'झेवेरीवाडो 'ए ज वडीपोसालनो पाडो छे.

नं. वासनाम	चै० प्र०	नं. वा०	चै० प्र>
ध३ अबजी महेतानी		५८ दोशीवाडो <sup>४</sup>	<b>१</b> —
पाडो <sup>१</sup>	२ ७	५९ शांतिनाथनो पाई	ते ५ १२८
४४ कुसुंभीया पाडी	४ ६८	६० कटकीआ वाडो	ર <b>દ્દ</b>
४५ नाकर मो हीनो		६१ आनावाडो	१ ३४
पाडो	४ १९३	६२ सालवीवाडो-	
४६ मालु संघवीनुं		त्रसेरोओ	२ १६२
स्थान	३ ३३	६३ कुरसीवाडो	१ ७४
४७ स्टक्जनो पाडो	१ १२	६४ कइआवाडो	२ १९
४८ भंडारीनो पाडो	<b>१</b> ५	६५ कल्हारवाडो	१ ५५
४९ भाभानी पाडी	४ १५७	६६ दणायगवाडो	१ ७०
५० स्टींबडीनो पाडो	રૂ કર	६७ धांधुन्नी पाडो	१ ७१
५१ करणशाहनो		६८ ऊंची पाडी	१ ३
पाडो <sup>२</sup>	९ २८०	६९ सत्रागयाडो	१९
५२ बांमणवाडी	८ ८३	७० पुन्नागवाडो	१ १०
५३ खेतलवसही <sup>3</sup>	१ २४७	७१ गोल्हवाड	३ १२५
५४ लटकणनो पाडो	५ २००	७२ घोली परव	४ १२२
५५ कुंपादोशीनो पार	डो२ ३०	७३ गोदडनो पाडो	४ २३ <b>९</b>
५६ वीसावाडो	५ १०१	७४ नाथाज्ञाह ो पा	डो६ ३६९
५७ सरहीआवाडो	१ २३	७५ महेतानो पाडो	२ २३

९ आ वासना वे चैत्योमांना एकनी प्रतिमा संख्या जगावी नथी.

२ हालमां ए वास 'कनाशानी पाडी 'कहेवाय छे.

३ आज काल ए स्थान खंतरवसही' ए नामथी प्रसिद्ध छे.

४ अहिंना ज्ञांतिनाथना देहरामां केटली प्रतिमा हती ते जणाव्यं नथी.

#### परिशिष्ट.

नं०	वा०	चै०	স৹	नं० वा०	चै०	ম৹
१	वाडीपुर <sup>१</sup>	१	૨	७ नवी नगीनो <sup>२</sup>	ર	१२०
ą	दोलतपुर <sup>१</sup>	१	१	८ कतपुरा <sup>४</sup>	ર	6
३	कुमरगिर <sup>१</sup>	ર	५८५	९ रूपपुर	१०	३६७
ક	वावडी १	१	१८	<b>१</b> ० चाणतमा <sup>५</sup>	₹	રૂક
<b>લ</b>	वडली <sup>ड</sup>	२	<b>ध</b> र्	१ <b>१</b> कंबोइ <sup>६</sup>	8	२१
દ્	नगीनो १	<b>१</b>	૭	१२ मुंजपुर	१	३

९ नंबर ९, २, ३, ६, ७ ए गामोनो हाल पाटमनी नजी-कमां पती नथी.

- ३ पारमधी पश्चिमे त्रम कोशने छेटे वढली गाम छे.
- ४ पाटमधी दक्षिममां २ कोश छेटे रूपपुर पासे **कतपुरा** आवेल है.
- ५ ह्रपपुर अने चाणसमा पाटमधी दक्षिम पूर्वे ६, ७ कोश उपर छे.
- इ कंबोई २ वे छे, १ ली सीलंकीनी कंबीइ पूर्व दक्षिणमां २ जी काकरेवीनी कंबोइ पश्चिम दक्षिगना खूणा तरफ ६ उपर छे.

२ पाटगथी दक्षिगमां ३ गाउने छेटे वावडी छे, हालमां त्यां देहरं नथी.

## संवत् १७२९ ना वर्षमां रचायेली चैत्यपरिवाडीना अनुसारे श्रीपाटण-चैत्यप्रतिमा-कोष्टक २.

नं	o बाo	चै०	प्र०	नं०	वा०	वै०	प्र०
1	पंचास (	4	160	१९	सगर कूई	१	३५
<b>ર</b>	उची शेरी	₹	५१	२०	वलियारवाडो	१	9
ર	पीपलानो पाडो	२	<b>१</b> (४	२१	जोगीवाडो	२	९५
ક	चिंतामणिपाडो	<b>ર</b>	२९२	२२	महिनाथनो पाडो	ર	३१८
ધ્	सगालकोटडी	१	3	२३	<b>ल</b> खीयारवाडो	ર્	880
દ્	<b>बरा</b> बो ऱ्डी	<b>લ</b>	३०८	इष्ट	न्यायरोठनो पाडो	१	६८
9	त्रांगडीआवाडो	X	४०४	રૂડ	चोखावटीनोपाडो	१	ઇક
1	<b>कं</b> सारवाडो	ર	१०१	२६	वलीया पाडो	१	१५१
९	साहना पाडो	8	२८२	२७	अवजी महे-		
१०	वडीपोसास्रनो .				तानो पाडो	ર	કર
	पाडो	३	६३८	२८	कसुंवियावाडो	२	८४
<b>₹१</b>	त्र <b>भेढा</b> वाडो	१	५ 9१	२ <b>९</b>	वायुदेवनो पाडो	१	१०१
<b>?</b> ?	तंबोलीवाडो	१	१३०	₹३	चाचरीयो	१	३०९
	कुंभा ीयावाडो	ę	૮ર	३१	पदमापारेखनी		
-	मांका महेतानो				पोल	₹	३२
	पाडो	१	१६	<b>३</b> २	सोनारवाडो	₹.	કક
१५	मणीयाही	१	કર	33	खेजडानो पाडो	१	<b>१</b> ३८
१६	पखाली (बाडो ?)	۶	38	38	फोफन्डीयावाडो	3	४६८
१७	सावाडी	२	६०४	३५	खजुरीनो पाडो	8	566
१८	भेंसातवाडी	ş	<b>६</b> ७	1	भाभानी पाडी	१	8 <b>०</b> ई

नं०	च(०	चै०	प्र०	चै०	वा०	चै०	प्र∘
३७	लींवडीनो पाडो	१	३०७	40	जगुपारेखनो पाः	डो१	३४
३८	करणसाहनो पाइ	ी३	९५३	५१	<b>कियावहोरानो</b>		•
३९	संघवीपोस्न	१	१३३		पाडो	2	<b>₹</b> ६
80	खेतस्रवसही	<b>ર</b>	३७९	५२	क्षेत्रपालनो पाडो	Ş	<b>३</b> ९१
કર	अजुवसापाडी	१	<b>૭</b> ૭	५३	कोकानी पाडो	ર	३९५
કર	कुंपादोशीनो पाइ	डोर्	<b>१</b> ६	લ્ક	ढंढेरवा <b>ड</b> ो	3	२७३
8३	वसागडो	१	२२८		महेतानो पाड़ो	२	३६५
88	दोसीवाडो	१	९१	•		<b>ર</b>	
	आंबादोसीनो पा	स्रो	१६			8	९६
			•		त्र <b>सेरीओ</b> ्	२	419
•	पंचोरडी	2	<b>१</b> २०	५९	कलारवाडो	१	५३
છહ	घीयापाडो	ર્	१३६	६०	दणायगवाडो	Ş	१५४
८८	कटकीओ	१	१०७	६१	घोघोल	ર	२६४
४९	घोलीपरव	१	४६	६२	खारी वाव	१	<b>१</b> ३

आ बीजी चैत्यपरिवादीना लेखक हर्षविजये पाटणनां कुल छोटां महोटां चैत्यो अने तेमांनी प्रतिमाओनी संख्या नीचे प्रमागे जणात्री छे---

'जिन जी पंचा गुनइ माझने श्रीजिनवर प्रासाद हो। जिनजी भाव धरी मस्त के वंदीए मुकी मन विखवाद हो॥जि०॥ जिनजी जिनविवनी संख्या सुणी मामने तेर हजार हो। जिनजी पांच से बहोतर वंदीए सुख संपत्ति दातार हो ॥ जिन नी देहरासर भ्रवणे सुण्या पंचसया सुसकार हो। जिनजी तिहां प्रतिमा रहीयामणी माझने तेर हजार हो॥ "

उपर जणावेलां ९५ जिनप्रासाद नाम ठामनी साथे परिवाडीमां जणावी दीधां छे, बीजां घरमंदिरो जेने घणा खरा परिवाडीकारो 'देहरासर'ए नामथी ओल्रह्मावे छे तेनी संख्या ५०० पांचसोनी जणाबी ने तेमां १३००० तेर हजार प्रतिमाओ होवानं जणावे छे. प्रथम १३५७३ ए संख्या पण जणावेली छे. परिवाडीकारना कहेवाना आञ्चय पवी होय के 'पाटणमां ९५ म्होटां अने ५०० न्हानां जिनमंदिरो हतां अने तेमां अनुक्रमे १३५७३ अने १३००० प्रतिमाओ इती. ' परंतु आवी अर्थ करवा जतां विचार प आवे छे के सं. १६४८ मां पाटणमां न्हानां म्होटां २०० मंदिरो अने ८३६५ प्रतिमाओ हती तेना स्थानमां सं. १७२९ मां ५९५ मंदिरो अने २६५७३ प्रतिमाओनुं होवुं मन कबूल करतुं नथी, ८० वर्षमां उपर प्रमाणे वधारो थवो शक्य है।य तेम लागतं नथी, कदाच पम होइ शके के प्रथमनी ज १३५७३ प संख्या बीजी वेळा सामान्यपणे तेर हजार तरीके लखी होय अने देहरासरानी ५०० ए संख्या पूर्वे जणावेल ९६ चैत्यो अने घरमंदिरो सर्व भेळां गणीने जणावी होय तो बनवा जोग छे, अने तेम ज होवुं जोश्ये, कारणके परिवाही-कारे पोते पण सर्व घरमंदिरो गण्यां नथी पण तेमणे 'श्रवणे सुण्यां ' छे, मतलव के घरमंदिरोनी संख्या चोकस नथी, छतां पटलुं तो नक्की छे के १६४८ पछी पाटणमां घर-मंहिरो अने प्रतिमाओनो खासो मलो वधारो थयो हतो.

सं. १७२९ थी मांडीने सं. १९६७ ना वर्षपर्यन्त पाटण-. ३ नी स्थिति केटली हदे नवली पडी अने देहरांनी सास करीने घरदेहरासरोनी संख्या केटली बधी ओछी थइ गर् तेनो स्याल आ नीचेना कोष्टक उपस्थी आची बडो.

सं. १९६७ मां प्रगट थयेली पाटणनां जिनमंदिरोनी मंदिरावली <sup>१</sup> प्रमाणे पाटण-चैत्यसंस्था कोष्टक ३.

नं० वा॰	য়৽	नं॰ वा॰	प्र०
१ पंचासर	१३	१५ तरसेरीआनो पाडो	ક
२ कोटावाळानी धर्मश	ाला 🕻	१६ कटकीयावाडे।	8
३ कोकानो पाढी	₹	१७ घीयानी पाडी	૨
४ खेतरपालनो पाडी	१	१८ वागीलनो पादो	Ą
५ पडीगुंदीना पाडे।	१	१९ पंचोटीनो पाडो	Ą
६ ढंडेरवाडो	3	२० वसावाडो	<b>ર</b>
७ मार्फतिया महेता	ानो	२१ अदुवसानो पाडो	Ş
पाडी	3	२२ खेतरवसीनो पाडो	ဖ
८ वसारनी पाडी	ર	२३ बाह्मणवाडो	Ą
९ गोदडनो पाडेा	8	२४ कनासानी पाडी	8
१० महालक्ष्मीनो पाडो	<b>ર</b>	१५ लांबडीनो पाडो	₹
११ गोलवादनी दोरी	<b>ર</b>	२६ माभानो पाडी	?
१२ नारणजीनो पाडो	2	२७ सजुरीनो पाडेा	۶
१३ घांघल	8	२८ वासुपूज्यनी सडकी	P
१४ कलाग्बाडो	१	२९ संघवीनो पाडा	3

९ आ 'मंदिरावली ' श्री पाटण जैनश्वेताम्बर संघालुनी सरमरा करनारी कमीटी तरफर्थी बहार पादवामा आवी है.

नं ॰	বা০	ম৹	नं० वा०	प्र०
३०	कसुंबीयावाडो	Ą	४३ कुंभारीयापाडो	ર
38	अबजी महैतानी पा	शे १	४४ तंबोळीवाडो	ર
•	बलीया पाडी	१	४५ कपुरमहेतानो पाडो	ર
<b>३</b> ३	चोखावटीआनो पाडे	ıξ	४६ खेजडानी पाडी	8
-	केशुरोटनो पाडो	१	४७ तरभेडावाडा	9
-	निशालनो पाडे।	ş	४८ भेंसातवाडो	3
३६	<b>ढखीयारवा</b> डी	ર	४ <b>९ शाहवा</b> डो	` =
	मल्यातको पाडी	<b>ર</b>	५० सामी पाडी	•
36	ज्ञोगीवाडे।	१		`
	<b>फोफंलीआवा</b> डो	६	५१ वडीपीसाहनी पाडी	६
೪೦	सोनीवाडो	१	५२ टांगडीआवाडा '	१०
83	मणीआती पाडे।	3	५३ सराखोटडीनो पाढो	3
કર	डंक महेतानो पाडो	ર	५४ अष्टापदजीमी खडकी	ß

उपरना कोष्टक उपरथी जणादों के वर्तमान समयमां पाटणना ५४ चोपन वासोमां कुछ १२९ नी संख्यामां जैन-मंदिरों विद्यमान छे. जेमां मुख्य मंदिरों चा देहराओनी संख्या ८५ पंचाद्यीनी छे अने बाकीनां ४४ आश्रित बैत्यों वा देहरासरों छे के जेमां घणे भागे घरमंदिरोनां पण समावेदा थइ जाय छे, आ उपरथी घरदेहरासरों केटलां बधां उठी गयां छे तेनां ख्यास आवी जही.

आ घटाडानां त्रण दारको मानी शकाय. १ जैनसमाज-मां धर्भश्रद्धा अने देवपूजा-भक्तिनुं कमी थवुं, २-श्रावकोनी

वसतिनो घटाडो, ३-श्रावकोनुं विद्येषे करीने परदेशोमां रहेवुं.

उपर जणावेलां सं. १६४८, सं. १७२९ अने सं. १९६७ नी सालमां विद्यमान चैत्थोनी संख्यानां त्रणे कोष्टको उपस्थी पाटणनी चडती पडतीनां अनुमानो यइ शक्शे.

यद्यपि आजे पण पाटण एक भव्य दाहेर गणाय छे, हजारोनी संख्यामां अस्तित्व धरावता प्राचीन ग्रन्थोना संग्रहो-भंडारोना दर्शन निमित्ते अनेक भारतीय अने यूरोपीय विद्वानोनुं ध्यान पाटण पोतानी तरफ खेंची रह्यं छे, श्रीमंत अने धर्मानष्ठ जैनधर्मी मनुष्योनी लगभग ५-६ हजार जेवडी म्हेरेटी संख्याथी पाटण हजी पण पोतानुं "जैनधर्मनी राज-धानी ें प प्राचीन मानवंतु नाम केटलेक अंशे निमाबी रह्यं छे, एटलुं छतां पण पाटणनी ते प्राचीन श्रेष्ठता, प्राचीन भव्यता, प्राचीन समृद्धि आजना पाटणमां रही नथी,ते श्रेष्टताओ साजे तेनी प्राचीन स्मृतिमां ज नजरे पडे छे; कृतिमां नहिं.

उपरना संक्षिप्त विवेचनथी प्रस्तृत परिवादीनी शैति-हासिक उपयोगिता वांचकगणना ध्यानमां आव्या वगर रहेदो नहिं.

आ प्रस्तुत परिवाडीनो शब्दानुवाद न करतां तेनो मारांशमात्र तारवीने शरुआतमां आपी दीधो छे के जे उपरथी परिवादीनी सर्व शातव्य वातो जाणी शकाशे, अने आज्ञा छे के एक बार ए 'सार' वांच्या पश्ची परिवाडी वांच-नारने तेमां न समजाय तेवी कंइ पण बाबत जणादी नहिः

आ प्रस्तुत चेत्यपरिवाही तेना लेखके कुल २३ ढालो, एक चौपाई अने २०४ गाथाओमां पूरी करी छे.

जे प्रति उपरथी पनी प्रेस-कापी करवामां आवी छे, ते मूल प्रति सं. १६४८ ना पोष विद १ ना दिवसे लखेल छे पटले के रचाया बाद मात्र त्रण महिनानी अंदर ज लखेल होइ परिवाडी पोताना मूल रूपमां जलवाइ रही छे. प्राचीन गूर्जर साहित्यना समालोचकोने तेनुं खरुं स्वरूप जणाइ आवे पटला माटे तेमां कंइ पण भाषाफेर न करतां तेने पोताना मूल स्वरूपमां ज कायम राखी प्रकट करवा उचित शार्युं छे.

कदरदान वाचकगण पठन-पाठन द्वारा आ चेन्यपरि-चाडीथी लाभ हांसिल करी लेखक अने प्रकाशकना उद्देशने सफल करो एवी शुभाकांक्षा,साथे विरमीए छीए.

—मुनि कल्याणविजय.



# प्रस्तुत पाटण चैत्यपरिपाटीनो सार.

## (चोपाई)

## १ ढंहेरवाडो—<sup>१</sup>

ते समयमां ढंढेरचाडामां त्रण म्होटां अने आठ घर देरासर मली कुल ११ अग्यार देहरां हतां, म्होटां ३ देहराओमां १ सामला पार्श्वनाथनुं, २ महावीरनुं अने ३ पार्श्वनाथनुं. आठ घरमंदिरोमां-१ गोवाल झवेरीनुं, २ पन्नादोसीनुं, ३ रायमलनुं,४ शा. धनाजीनुं,५ मेला बीसानुं,६ वीसा-भीमानुं, ७ राजु दोसीनुं अने ८ रतन संघवीनुं.

ढंढेरवाडानां आ सर्व देहरांनी सर्व मली ५५६ पांच सो छप्पन जिनमतिमाओ हती.

ढंहेरवाडाथी आपणो आ संघ कोकाना पाडा भणी जाय छे.

१ पाटण चैत्यपरिवाडीना कर्ता आचार्य श्रीललित-प्रभमूरि पूनियागच्छना होइ पोताना उपाश्रयवाला वास-दंदेरबाहाथी चैत्यपरिवाही यात्रा शह करे छे.

२ आ घरमंदिरो मूलनायकना नामथी न जणावतां तेना करावनार गृहस्थना नामधी ज जणाव्यां छे, आगे पण केटलेक ठेकाणे आ प्रमाणेज समजवानुं छे.

## ( दाल १ ली )

#### २ कोकानो पाडो—

त्यां प्रथम कीका पारेखने देहरे ऋषभदेव विगेरेने वां-दीने कोकापार्श्वनाथने भेटे छे, अने त्यार पछी श्रीवंत दोसीने घरे वासुपूज्य स्वामीने वांदे छे, कोकाना पाडानां उपर्युक्त ३ देहरासरोमां ५+१३९+६२=२६६ बसो छासठ प्रतिमाओ जुहारी संघ खेतरपालने पाडे गयो।

३ खेतरपालनो पाडो—

था पाडामां एकज देहरुं इतुं जेमां भगवान शितल-नाथनी मितमा १६७ एकसोने सडसट जिनबिंदनी साथे विराजमान हती; तेने वांदीने संघ जगुपारेखने पाडे गयो. ४ जगुपारेखनो पाडो—

आ वासमां भगवान् नेमिनाथनु अने द्यांतिनाथनुं एम वे देहरां इतां, प्रथममां नेमिनाथजी विगेरे ३ प्रतिमाओ इतीः; ज्यारे बीजामां-के जे जयवंत दोठना देइरा तरीके प्रसिद्ध इतुं तेमां-शांतिनाथ अने बीजी अग्यार मली कुल १२ प्रति-

१ परिवाडीना कर्नाए पाडानु नाम लब्युं नथी, छतां 'कोकापार्श्वनाथ' उपरथी अमोए सा वासने 'कोकानो पाडो' कहीने ओलखान्यो छे. —लेखक.

माओ हती, ते वांदीने संघ स्वारीवाव उपर गयो.

## ५ पहेली खारी वाव—

पहेली खारीवावे ऋषभदेवने देहरे ४ प्रतिमाओनां दर्शन करी संघ बीजी खारीवावे गयो.

#### ६ बीजी खारीवाव—

त्यां जइ महावीर प्रभुने भेटचा, अहीं १३ तेर जिन-प्रतिमा अने वे गौतम स्वामिनां विंब हतां, ए सर्वने वांदी संघ नागमहे आव्यो

(ढाल २ जी)

#### ७ नागमढ—

ज्यां भगवान् नेमिनाथनुं देहरुं अने ९ नव जिनप्रति-माओ हती तेने वंदन कर्युं अने त्यारबाद संघ पंचासराना पाडामां गयो

#### ८ पंचासरानो पाडो--

पंचासराना पाडामां आ वसते कुछ ५ पांच जिनमंदिर हतां. १ महावीरनुं २ वासुपूज्यनुं ३ पंचासरा पार्श्व-नाथनुं ४ ऋषभदेवनुं अने ५ नवघरानुं पार्श्वनाथनुं. आ पांचे देहरासरोगां सर्व मही ९+२७+८+१०(१) ४३=९७ सत्ताणुं वा तथी पण अधिक प्रतिमाओ हती. पंचासरथी संघ उंची दोरी भणी गयो.

#### ९ उंची 'दोरी-

उंची दोरीमां शांतिनाथनुं देहरं हतुं जे 'भणशा-लीनुं देहरं' ए नामथी प्रसिद्ध हतुं, त्यां कुल २३ जिन-प्रतिमाओ हतो. अहींथी आगे संघ ओदावालना महोल्लामां गयो-

## १० ओशवाल महोल्लो—

ओशवालोना महोल्लामां ३ त्रण देहरां हतां, १ शांतिनाथनुं, २ भोलडीया चन्द्रप्रभनुं अने ३ श्रावका पार्श्वनाथनुं. आ त्रणे जिनमंदिरोमां सर्व मली प्रतिमाओ ७+१+
२३=३१ एकत्रीश्च हती. ए पछी संघ पीपलाने पाडे गयो.
( ढाळ ३ जी )

#### ११ पीपलानो पाडो-

अहिं शांतिनाथनुं देहरुं हतुं अने शांतिनाथ उपरांत बीजी च्यार प्रतिमाओ हती, तेने वांदी संघ चिंतामणिने षाडे गयो.

## १२ वितामणिनो पाडो--

अत्र शा. वछुने देहरे अजितनाथ विगेरे सात जिन-मितमाओने वांदी संघ शांतिनाथने देहरे यह चिंतामणि पार्श्वनाथने देहरे गयो, चिन्तामणिना पाडामां कुल ३ देहरां अने ७+२१+६७=९५ पंचाणुं प्रतिमाओ हती; अहींथी संघ खरास्रोटडीमां आब्यो.

#### १३ खराखोटडी—

अत्रे अनेक जिनमंदिरो अने प्रतिमाओ हती. १ आ-सधीर ठाकरने देहरे चन्द्रप्रभ अने बीजी बे प्रतिमा. २ सदय वछ ठाकरने देहरे पार्श्वनाथ अने बीजी वे प्रतिमा. ३ अष्टापदावतार नामनुं देहरुं (आमांनी विंवसंख्या ज-णावी नथी, माय २४ विंब हरो) अने ४ चन्द्रप्रभनुं देहरूं-ज्यां ओगणसाठ जिनप्रतिमाओ हती, जेमां एक रत्नमयी हती. ५ खरतरगच्छनी निश्रावालुं शांतिनाथनं बावन जिनालयवालुं (विधिचैत्य) अने ६ ऋषभदेवनुं देइहं. आ बन्ने देहरांनी मळी २७२ वसो बहोंतेर प्रतिमाओ हती, अने तीर्थंकरोनां माता-पितानी मूर्तिओ पण अत्र इती. ७ सोनी तेजपालनुं पार्श्वनाथवालुं घरमंदिर अने ८ टाकर सोनीनुं सुमतिनाथनुं घरमंदिर आ बेमां अनुक्रमे २९+४ मितमाओ हती. आ ममाणे खराखोटडीमां कुल ८ मंदिर अने ३+३+२४+५९+२७२+२९+४=३८४ त्रणसो चोराशी प-तिमाओ हती. ए सर्वने जुहारी आपणा यात्रिको त्रांगडी-आपादे आव्या.

## ( ढाछ ४ थी )

#### १४ त्रांगडीआपाडो—

आ पाडामां ऋषभदेवनुं एक म्होटुं देहरुं हतुं, जेमां ३७५ त्रणसो पंचोत्तेर प्रतिमाओ विराजमान हती. अहींथी संघ मणिहृष्टि पाडे आव्यो.

## १५ मणिहिं पाडो--

आ पाडामां वे जिनमंदिरो हतां १ महावीरतुं अने २ देवदत्ततुं आ बन्नेमां प्रतिमाओ अनुक्रमे ५+१३ हती. मणि-याती पाडामांथी संघ मांका महेताने पाडे गयो.

## १६ मांका महेतानो पाडो-

ज्यां भगवान् शांतिनाथनुं एक देहरुं इतुं, अने मूलनायक सिवाय वीस प्रतिमाओ त्यां विराजमान इती, अहीं दंदन करी संघ कुंभारीये पाडे पहोंच्यो.

## १७ कुंभारीया पाडो-

अत्र २ बे देहरां हतां, १ अमीचंद सोनीनुं अने २ वछ जवेरीनुं. पहेलामां मूलनायक शांतिनाथ उपरांत १७ सत्तर जिनमतिमाओं हती, बीजामां चोवीस तीर्थंकरोनी प्रतिमाओं हती तेने वांदीने आपणो यात्रालु संघ तंबोलीबाडे गयो.

## (ढाल ५ मी)

#### १८ तंबोली वाडो-

अहिं कुछ ६ देहरां हतां. जेमां १ सुपार्श्वनाथतुं हतुं ज्यां ७३ जिनबिंब हतां, २ बीजा मंदिरमां ७ बिंब हतां, ३ रूपा वहोरानुं आदिनाथनुं, ४ मेघा पारेखनुं चन्द्रमभनुं, ५ घूसीनुं, ६ शा. सीराजनुं संभवनाथनुं. छेछां ४ देहराओमां जिनबिंब अनुक्रमे १०+५+२+२५५ हतां. सर्व मंदिरोनी मतिमासंख्या ७३+७+१०+५+२+२५५=त्रणसो बावन हती. तंबोळो वाडाथी संघ खेजडाने पाडे गयो.

#### १९ खेजडानो पाडो-

ज्यां ' सारंगनुं देहरुं ' करीने एक जिनमंदिर हतुं, तेमां नव प्रतिमाओ हती तेने जुहारी संघ त्रंबडावाडे गयो. २० त्रंबडा वाडो—

त्रंबडा (तरभेडा) वाडामां जइ श्वांतिनाथने वांद्या, अत्रेनुं देहरुं घणुं रमणीय होइ ९९ नवाणु जिनविंबोथी अलंकृत हतुं, त्यांथी दर्शन करी संघ वडी पोसालना पा-

## डामां आव्यो.

#### २१ वडीपोसालनो पाडो—

अ। पाडामां कुल ५ मंदिरो अने ३४+८+६+१४+१३

=७५ प्रतिमाओ इती. देहराओमां १ सोमा शेठनुं ऋषभ-देवनुं, २ भुजवल शेठनुं श्रीश्रेयांसनायनुं, ३ वाडीपुरमंडन पार्श्वनायनुं, ४ सहसा पारेखनुं श्रीपार्श्वनाथनुं अने ऋषभ-देवनुं. आ पांचे देहरां जुहारी संघ शाहने पाडे गयो.

( ढाल ६ ठी )

#### २२ शाहनो पाडो--

श्वाहना पाडामां २ देहरां हतां. १ आदीश्वरनुं अने २ रायसिंघने घरे शांतिनायनुं. प्रथममां ८७ सत्याशी प्रति-माओ हती, ज्यारे बीजामां ७० हती. ए पछी संघ कंसार वाडे गयो-

#### २३ कंसारवाडो--

अत्र १ देहरं शीतलनाथनं आव्युं, ज्यां १२ जिनमति-माओ इती. २ शांतिनाथना देहरामां २२ मितमाओ वांदी ३ शा. चांपाने देहरे जइ १६ सोल मितमाओ वांदी त्यांथी ४ चोथा शाहने घरे वे रत्नमयी मितमाओनां दर्शन करी ५ पार्थनाथने देहरे चोवीस जिनमितमाओने नमन कर्युं, आ रीते कंसारवाडामां कुल ५ मंदिर अने १२+२२+१६+ २+२४=७६ जिनमितमाओ वांदी संघ मलावैद्यने पाढे गयो-२४ भलावैद्यनो पाडो— ज्यां चन्द्रमभनुं देहरुं अने वे त्रण मितमा इती. वैद्यना पाडाथी यात्रालु संघ भेंसातघाडे पहोंच्यो.

#### २५ भेंसातवाडी—

(अत्र श्रांतिनाथ आदि ३६ छत्रीस जिनमूर्तिओ इती,) एक गौतमगणधरनी प्रतिमा पण विराजमान इती. भेंसात-वाडाथी संघ सहावाडे आव्यो.

#### ( दाछ ७ मी )

#### २६ सहावाडो-

ज्यां सुपार्श्वनाथ अने पार्श्वनाथनां वे देहरां जुहार्या, अहीं ८५+६१२=६९७ छसो सत्ताणुं प्रतिमाओ हती. हवे संघ सगरकुई आव्यो.

## २७ सगरकुई---

अत्रे त्रण देहरां इतां-१ पार्श्वनायनुं २ पुंजारोठने घरे ऋषभदेवनुं अने ३ जयचंद रोठवालुं शांतिनायनुं, आ मंदि-रोमां २०+३०+३३=८३ प्रतिमाओ इती तेने वांदी संघ हेबतपुरे गयो.

## २८ हेबतपुर--

पाडा भणी गयो-

#### २९ मोहेरना पाडो--

मोदेरना पाडामां ४ च्यार प्रतिमाओ वांदी आपणो आ भाविक संघ नारंगे पाडे आव्यो.

( ढाल ८ मी )

#### ३० नारंगापाडो--

आ पाडामां नारंगा पार्श्वनाथनुं अने 'शोभीनुं ' एम बे मंदिरो हतां, वंनेनी मळी ४२+२३०=२७२ प्रतिमाओ हती, तेने वांदी संघ सोनारवाडे यइ फोफलीआवाडे मयो.

#### ३१ सोनारवाडो--

सोनारवाडामां वे देहरां इतां-? श्वांतिनायनु अने २ महावीरनुं. वन्नेमां पतिमा १४+१=१५ इती. ३२ फोफलीआवाडो-

फोफलीआवादो आजनी माफक पूर्वे पण घणो विश्वाल हतो, त्यां वासमंदिर अने घरमंदिर मली कुल ११ अग्यार जिन-मंदिरो हतां; जे नीचे प्रमाणेना नामोथी ओलखातां १ ऋषभ-देवनुं, २ शांतिनायनुं, ३ राजाशेटनुं-संभवनाथनुं, ४ काल-कानुं-मुनिस्त्रतनुं, ५ वीरजी शेटनुं-पार्श्वनाथनुं ६ अवर-धारेखनुं,७ महुलाशेटनुं-मुनिस्त्रतनुं,८ कंकुशेटनुं-पार्श्वनाथनुं, ९ राजाशेटनुं-नेमिनाथनुं, १० वला दोसीनुं-पार्श्वनाथनुं अने ११ पार्श्वनाथनुं. आ सर्व देहराओमां प्रतिमा नीचे प्रमाणे हती-७८+२५+२०+१२+४६+१५+३४+३६ + १५+१०=२९५. फोफलीआ वाडायी संघ जोगीवाडे गयो. (ढाल ९ मी)

#### ३३ जोगीवाडो--

आ महोल्लामां ३ त्रण जिनमंदिर हतां. १ पार्श्वनाथनुं, २ विद्याधर शेंडनुं अने ३ भोजादोशीनुं-पार्श्वनाथनुं. आ त्रणे मंदिरोमां प्रतिमा २०+३४ + १०=६४ चोसठ हती, अहींथो संघ मफलीपुरे गयो.

## ३४ मफलीपुर--

ज्यां पार्श्वनाथना मंदिरमां १२ बार जिनविंब वांद्यां, त्यांथी संघ मालावाडे गयो.

### ३५ मालीवाडो--

उयां श्रीजीरावला पार्श्वनाथ अने २४ चोवीस जिन-मितमा वांदी संघ मांडणने पाडे आच्यो.

#### ३६ मांडणनो पाडो-

मांडणने पाडे त्रण जिनमंदिरो हतां—१ संभवनाथनुं, २ धनराजनुं—पार्श्वनाथनुं, अने ३ शेड कमलशीनुं सांतिनाथनुं. आ देहराओमां सर्व मली ९+४४+३६=८९ नव्याश्वी जिन-प्रतिमाओ हती, जे वांदी संघ गदावदाने पाडे गयो.

## ( ढाल १० मी )

## ३७ गदावदानो पाडो---

आ पाडामां १ शांतिनाथनुं, २ गला जिनदत्तनुं-शांति-नाथनुं अने ३ धूपाधूलानुं: एम इण देहगं हतां जेमां प्रतिमा ५८ + २५ + ७=९० नेवु हती. अत्रथी संघ मिल्लनाथनाः पाडामां गयो.

## ३८ मल्लिनाथनो पाडो—

मिल्लनाथना पाडामां मिल्लिनाथ विगेरे १७६ एकसो छहो-त्तेर जिनमितिमा वांदी संघ भाणाने पाडे गयो.

#### ३९ भाणानो पाडेा—

भाणाना पाडामां पार्श्वनाथतुं एक देहरुं हतुं, जेमां ९८ अठाणु जिन्नविंव विराजमान हतां,ते वांदी संघे समुद्रफडीआ तरफ प्रयाण कर्युं.

## ४० समुद्रफडीओ-

समुद्रफडीआमां शांतिनाथनुं एक देहरूं अने कुले १९ प्रतिमाओ हती. त्यांथी संघ चोखाबटीने पाडे आव्यो.

#### ४१ चोखावटीनो प:डो-

अहीं शांतिनाथ आदि दश जिनमतिमा जुहारी साणे-सरा ऋषभदेवजीने देहरे जइ आठ जिनमतिमाओ वांदी संघ-सम्रदाय बलीयाने पाडे गयो.

#### ४२ बलीयानो पाडो—

बलीयानापाडामां भगवान ऋषभदेत्र विगेरे अग्यार जिन-बिंबोनी यात्रा करी संघ अबजी महेताने पाडे आद्यो. ४३ अबजी महेताना पाडो—

आ पाडामां वे देहरां हतां, १ शीतलनाथनुं अने २ शांतिनाथनुं. पहेला देहरामां ७ जिनमितमाओ हती; ज्यारे बोजा देहरानी प्रतिमालंख्या परिपाटीकारे जणात्री नथी. हवे संघ कुसुंभीआ पाडामां आव्यो.

## (ढाल ११ मी)

## ४४ कुसुंभीआ पाहे।—

ज्यां कुछ ४ देहरां हतां-१ जीतलनाथनुं, २ पार्श्वनाथनुं, ३ जगपालनुं, ४ वाला दोसीने त्यां मोहनपार्श्वनाथनुं- आ ४ देहराओमां सर्व प्रतिमा १९+१२+२०+१७=६८ हती,ते बांदी संघ नाकर मोदीने पाडे गयो.

## ४५ नाकरमोदीनो पाडेा-

आ पाडामां पण ४ देहरां हतां जेनां नाम-१ पार्श्वनाथनुं २ नानजी पारेखने घरे वासुपूज्यनुं ३ धरमसीने घरे शांति-नाथनुं ४ सांडा पारेखनुं श्रीपार्श्वनाथनुं, आ सर्वमां मित-माओ ११२+१७+३१+३६=१९६ हती. जेमां एक मितिमा रतननी अने एक सीपनी हती. हवे संघ माळ संघवीने पाडे आव्यो.

## ( हाल १२ मी )

## ४६ माळु संघवीनो पाडो-

अत्र आवी १ मनमोहन पार्श्वन थ जुहार्या, ए उपरांत २ हेम-राजने देहरे सुमितनाथ अने ३ राजधर संप्रवीने देहरे विमल-नाथने वांद्या. आ त्रणे देहरामां प्रतिमा २६+२+५=३३ हती, ते वांदी संघ लटकणने पाडे आव्यो अने त्यांथी भंडारीने पाडे थइ संघ भाभाने पाडे गयो.

## ४७ लटकणनो पाडो—

लटकणने पाडे शांतिन।थनुं देहरुं अने १२ प्रतिमाओ हती... ४८ भंड≀रीनो पाडो—

भंडारीना पाडामां पार्श्वनाथनुं देहरुं अने कुल ५ प्रति-माओ इती-

#### ४९ भाभानो पाडो—

भाभाने पाडे १ श्रीपार्श्वनाथनुं, २ तेजपाल होठनुं— धर्मनाथनुं, ३ सहसिकरणने घरे सुमितनाथनुं, ४ पंचायणने घरे शांतिनाथनुं, एम दुले ४ देहरां हतां जेमां मितमा ५१+ १७+२५+६४=१५७ हती. हवे संघ लींबडीने पाडे आव्यो. ५० लींबडीनो पाडो--

आ पाडामां ३ त्रण देहरां हतां-१ सारंगदोसीने घरे सातफणा पार्श्वनाथनुं, २ रायचंद दोसीने घरे शांतिनाथनुं, अने शांतिनाथनुं नवुं देहरूं. आ त्रणेमां प्रतिमा १२+१६+ १४=४२ हती, तेने वांदी संघ करणासाहने पाडे गयो.

(ढाल १३ मी)

## ५१ करणासाहनो पाडो-

करणास हनो पाडो जे आजे 'कनासानो पाडो ' ए नामथी ओलखाय छे, ते घणो महोटो होइ ९ देहराओथी सुजोभित हतो. देहराओनो अनुक्रम नीचे प्रमाणे हतो— ? ज्ञीतलनाथनुं, २ वीरा दोसीनुं-श्रेयांसन थनुं, ३ वीरपाल न्दोसीनुं-ऋषभदेवनुं, ४ समस्य महेताने घरे पार्श्वनायनुं, ५ इश्चिंदने घरे कुंथुनाथनुं, ६ घरमसीनुं-चन्द्रपभनुं, ७ भवजी संघवीनुं-नेमिनाथनुं, ८ सारंगपारेखनुं-श्रांतिनाथनुं, ९ कमा आहने घरे श्रांतिनाथनुं आ सर्व देहराओमां ६७+१४+१८ +१८+७+४७+१४+४८+४७=२८० बसो अंशी प्रतिमाओ हती. जेमां ८ रतननी अने १ रूपानी हती, ए सिवाय २ बे पट्टक हता.

करणासाहना पाडाथी संघे बांभणवाडा भणी मयाण कर्यु. ( ढाल १४ मी )

## ५२ वांभणवाडो—

बांभणवाडा-वा ब्राह्मणवाडामां लगभग ८ जिनमंदिरी नीचे जणावेलां हतां-१ वहोरा वीरदासने घरे वामुपूज्यनुं, २ हीरा वीसाने घरे श्वांतिनाथनुं,३ सहेसु संघवोने घरे शांति-नाथनुं, ४ महावीरनुं, ५ हीरजीने घरे शांतिनाथनुं, ६ शां-विनाथनुं, ७ विमलसी शेठनुं, ८ पुंआ पारेखने घरे ऋषभ-देवनुं. आ सर्व मंदिरोमां प्रतिमा २४+११+७+५+१०+७+ ८+११=८३ हती, जेमां ६ प्रतिमा रत्नमयी हती.

ब्राह्मणवादानी यात्रा करी संघ खेतलवसही गयो.

## ५३ खेतलवसही-

ज्यां पार्श्वनायनुं एक देहरुं हतुं अने तेमां २४७ जिन-

मितिमाओ हती, अहीं वंदन 'करी आपणा यात्रालुओ लट-कणने पाडे गया.

#### (ढाल १५ मी)

#### ५४ लटकणनो पःडो--

आ पाडामां१ गपूदोसीने घरे अजितनाथनं, २ शा वाङाने घरे चन्द्रपभनं, ३ लालजीने घरे संभानाथनं, ४ शांतिनाथनं अने ५ वीरजीने घरे शांतिनाथनु एम कुल ५ देहरां हतां. जेमां मतिमा १२+५१+९३+२२+२२=२०० बसो हती, तैमां ६ बिंब रत्नमय हतां, अहोंथी संघ कुंस दोसीने पाडे गयो.

## ५५ कुंपादोसीनो पाही-

कुंपादोसीना पाडामां २ देहरां हतां-१ ऋषभदेवनुं, २ गणीआदोसीने घरे पार्श्वनाथनुं. बन्नेमां प्रतिमा ८+२२= ३० हती, अहोंथी संघ वीसावाडे गयो.

## (ढाल १६ मी)

#### ५६ वीसावाहा-

वीसावाडामां १ पुंजा शेठने घरे पार्श्वनाथनुं, २ अमरदत्त सोनीने घरे धर्मनाथनुं, ३ वीसाविमूनुं-पार्श्वनाथनुं, ४ अमरपा-ऋनुं-अजितनाथनुं, ५ अने शांतिनाथनुं, एम पांच देहरां हवां. जैमां प्रतिवा १७+११+१९+४+५०=१०१ हती, तेमां २ प्रतिमा रत्नमयी हती. ए पछी संघ सरहीआवाडे आव्यो.

## ५७ सरहीआवाडेा—

ज्यां ऋषभदेव आदि त्रेवीश जिनमतिमा बांदी संघ न्यांथी दोसीवाडे गयो.

## ५८ दोसीवाडो--

दोसीवाडे हटूना घर देहरासरमां भगवान् श्रांतिनायने भेटी संघ श्रांतिनाथने पाडे गयो.

#### ५९ ञांतिनाथनो पाहे।--

आ पाडामां १ लक्ष्मीदासना देहरासरमां शां तिनाथ विगेरे अने २ संघराजना देहरामां पार्श्वनाथ प्रमुखने वांदी संघ ३ हेमा सरहीआने घरे आव्यो, त्यां पार्श्वनाथ अने बीजी छंतालीग्र मतिमाओ वांदी ४ शांनिनाथने देहरे गयो, ज्यां ४७ मतिमाओ बांदी त्यांथी ५ कबोइया पार्श्वनाथने देहरे जइ पार्श्वनाथ आदि सात जिनमतिमाओनां द्र्यन कर्यों, आ प्रमाणे शांतिनाथने पाडे ५ देहरे १२+१५+४७+४७+७=१२८ प्रतिमाओ इती. त्यांथी यात्रालुसंघ कटकीआवाडा भणी चाल्यों.

## ६० कटकीआचाडाे—

आ महोल्लामां १ ऋषभदेवनुं अते २ शेंढ विमलदासने घरे अजितनाथनुं एम वे देहरां हतां, बन्नेमां प्रतिमा ५५+ १४=६९ ओगणसित्तेर हती. ते वांदी संघ आनावाडे गयो. ६१ आनावाडे।—

ज्यां नेमिनाथनुं देहरुं अने ३४ प्रतिमाओ हती ते जु-हारी संघ सालवीवाडे गयो•

( हाल १७ मी )

#### ६२ सालवीवाहा—

सालकीवाडाना त्रसेरीआमां १ भगवान् नेमिनाथ अने ६ महिनाथनां देहराओमां ८७+७५=१६२ जिनविब वांदी संघ कुरसीवाडे स्नांतिनाथने देहरे आव्यो.

## ६३ कुरसीवादा-

ज्यां शांतिनाथ विगेरे ७४ मितमाओ इती तेने वांदीने संघ कइआवाडे आव्यो.

## ६४ कइआवाडा—

कइआबाडामां १ महावीरने देहरे अने २ रायचंद संघवीने

स्यां वासुपूज्यने देहरे अनुऋषे ५+१४=१९ जिन वांद्या अने त्यांथी संघ कल्हारवाडे गयो.

#### ६५ कल्हारवाडी—

कल्हारवाडामां शांतिनाथ आदि ५५ पंचावन जिनर्विक जहारीने संघ दणायगवाडे गयो.

#### ६६ दणायगवाहा---

दणायगवाडे ऋषभदेव आदि ७० जिनर्बिव वांदी संघ यांधुलीपाडे गयो.

## ६७ घांधुलीपाडेा—

भांधुलीपाडे सुविधिनाथ आदि ७१ जिन प्रतिमाओने वं-दन कर्यु अने त्यांथी उंचे पाडे गयो.

#### ६८ उंचो पाडेा—

उंचे पांडे पार्श्वनाथ आदि त्रण प्रतिमा जुहारीने संघ सत्रागवाडा तरफ चाल्यो.

#### ६९ सत्रागवाडा-

सत्रागवाडे पार्श्वनाथ आदि दश जिनर्बिवनां दर्शन करी संघे पुत्रागवाडे प्रयाण कर्युं.

#### ७० पुत्रागवाडो —

पुत्रागवाडे पार्श्वनाथ आदि १० जिनविंब वांदी संघ गोल्हवाडे गयो.

## ७१ गोल्हवाड-

गोन्हवाडमां ३ देहरां हतां-१ पार्श्वनाथनुं, २ पार्श्वना-थनुं, ३ ठाकर श्वाहने घरे रानप्रतिमावाछं पार्श्वनाथनुं, त्र-णेमां प्रतिमा ५+११९+१=१२५ हती तेवांदीने संघ घोली-परवे गयो.

## ( ढाछ १८ मी )

#### ७२ घोली परव—

धोली परवे ४ देहरां हतां-१ मुनिसुद्रतनुं, २ दूदा पारे-खने घरे शांतिनाथनुं, ३ देवदत्त दोसोने घरे चंद्रमभस्यापीनुं, ४ रामा सोनीने घरे पार्श्वनाथनुं, एम धोली परवे ४ देहरां अने ५२+५+४७+१८=१२२ एकसो बाबीस मितमाओ हतीः जेमां एक रत्नमयी प्रतिमा हती, ते उपरांत वे पट्ट हता अहींथी संघ गोदडने पाडे गयो.

#### ७३ गोदडनो पाडेा-

अहीं ४ देहरां हतां-१ ऋषभदेवनुं, २ वीसा थावरने

घरे ऋषभदेवनुं, ३ हीरजी दोसीने त्यां पार्श्वनाथनुं अने ४ उदयकरणने घरे ऋषभदेवनुं, एमां अनुक्रमे १७२+१४+१+
+५२=२३९ प्रतिमाओ हती, ते वांदी संघ नाथाशाहने
पाडे गयो.

## -( ढाल १९ मी )

## ७४ नाथाशाहनो पाडेा—

्यां ६ छ देहरां हतां-१ शांतिनाथनुं, २ वाछ दोसीने घरे चंद्रप्रभनुं, ३ पचु शेटने घरे चंद्रप्रभनुं, ४ स्रजी शेटनुं, ५ रामा दोसीनुं अने ६ रहीआ दोसीनुं, आ देहराओमां मितमा १९०+७०+१६+१५+४९+२९=३६९ हती, जेमां एक मितमा सीपनी हती. ए वांदी संघ महेताने पाडे आव्यो.

## ७५ महेतानो पाडो-

ड्यां मुनिसुत्रत अने वाछा श्वाहने घरे पार्श्वनाथनुं एम वे देहरां हतां अने तेमां २०+३=२३ प्रतिमाओ हती जे आ-पणा आ संघे हर्षभेर भेटी.

## ( ढाल २० मी )

आ प्रमाणे पाटणमां १०१ एकसोने एक जिनचैत्य ए-

टले म्होटा जिनपासादो हता अने नवाणु देहरासर अ**यत्** स्बोटां जिनमंदिरो हतां.

उपर जणावेल १०१ महोटां देहरांओमां ५४९७ पांच हजार च्यारसोने सत्ताणुं जिनमितमाओ हती, ज्यारे छोटां ९९ देहरासरोमां २८६८ वे हजार आठसोने अडसठ जिन-मितमाओ हती. ए सर्वमां एक विद्रुम(भवालरूक्त) नी, बें सीपनी अने आडत्रीश रत्ननी हती.

उपर जणावेल बंने मकारनां देहराओनी अने बीजी कुले मळी ८३९४ आठ इजार त्रणसो अने चोराणुं मितमा इती, ते उपरांत ४ च्यार मूर्तिओ गौतमस्वामीनी अने च्यार पट्टको हता.

पाटणना सर्व महोलाओनां नाम ग्रहणपूर्वक सर्व देहरां अने बिंब संख्या जणावी हवे चैत्यपरिवाडीकार आचार्य लिलतप्रभृत्तरि पाटण शहेरनी पासेनां केटलांक गाम नगरना चैत्योनी परिपाटी पण आ परिवाडीना पेटामां ज लखी जणावे छे.

## परिशिष्ट.

## ( ढाल २१ मी )

## १ वाडीपुर—

के जे पाटणनी नजीकमां एक गाम हतुं ज्यां अमीझरा पार्श्वनाथनुं देहरुं हतुं जेमां १ पार्श्वनाथनी अने एक बीजी एम वे प्रतिमाओ हती.

२ दोलतपुर-एमां एक जिनमतिमा इती.

## ३ कुमरगिरि—

कुमर्गगिरमां २ जिनमंदिरो शांतिनाथनां हतां—१ खर-तरगच्छनु जैना गंभारामां वे प्रतिमाओ हती अने भमतीमां ५० पचास जिनविंव हतां. २ जुं चैत्य त्यांनी पोसालमां हतुं जेना गंभारामां शांतिनाथ अने वीजी छत्रीश प्रतिमाओ मळी कुले ३७ प्रतिमाओ हती अने तेज चैत्यमां ४९६ च्या-रसो छन्नुं पीतलनां जिनविंबो हतां.

#### ४ वावडो—

एमां श्वांतिनाथनुं देहरूं अने १८ अहार मतिमाओ हती. ५ वडली—

अहिं खरतरनुं शांतिनाथनुं देहरू अने ४० च्यालीस

मितिमाओ हती, एक मूर्ति जिनदत्तसूरिनी पण त्यां हती, त्यांज बीजुं देहरुं महावीरनुं इतुं है,मां घणीज सुंदर प्रतिमा विराजमान हती.

#### ३ नगीनो—

एमां पश्चिनाथनुं देहरुं हतुं जैमां ७ सात प्रतिमाओ हती. ७ नवो नगीनो—

एमां पण श्री शांतिनाथनुं देहरूं अने पिस्तालीश प्रति-माओ हती, बीजुं बहोत्तेर जिनालय जिनमंदिर नवा नगी-नामां हतुं जेमां दुले ७५ पंचोत्तेर प्रतिमाओ हती.

( ढाल २२ मी )

#### ८ कतपुरा-

कतपुरामां वे मंदिरो हतां-१ शांतिनाथतुं अने २ समव-सरणवाळुं ऋषभदेवनुं बन्नेमां प्रतिमा १+७=८ हती.

#### ९ स्पपुर-

आ नगरमां १० दश देहरां हतां-१ पार्श्वनाथनुं, २ ऋषभदेवनुं, ३ ढुंगर महेताने त्यां अजितनाथनुं, ४ बोघा शेठने घरे चोवीस तीर्थकरोनुं, ५ गणराज शेठनुं, ६ वस्ता शेठने घरे शांतिनाथनुं, ७ जगु शेठनुं,८सांडा वहोरानुं पार्श्व-नाथनु, ९ रंगा कोठारीने घरे शांतिनाथनुं अने १० कुंअ-रजी शेठने त्यां शांतिनाथनुं, आ दशे देहरांओमां प्रतिमा अनुक्रमे १००+२++६६+२४+६३+११+३४+३९+१४+ १४=३६७ त्रणसो सहसठ हती.

#### २० चाणसमा-

आ गाममां श्रीभट्टेवापार्श्वनायनुं मंदिर इतुं अने तेमां क्कल ३४ चोत्रीश मतिमाओ हती.

## ११ कंबोर्ड-

अत्रे पश्चिनाथनुं देहरुं इतुं ज्यां गंभारामां ५ अने भम-तीमां १६, सर्व मली २१ प्रतिमाओ इती.

## १२ मुंजपुर—

अहिं एक देहरुं अने त्रण प्रतिमाओ हती.

आ प्रमाणे परिवाडीकार पाटण अने तेनी नजीकना गामोनां देहराओनी हकीकत लखी छेवटे शंखेश्वर पार्श्वना-थना गुण वर्णवे छे.

#### ( ढाल २३ मी. )

शंखेश्वर तीर्थमां केटली प्रतिमाओ छे. अने तेनी ऐति-तिहासिक स्थिति केवी छे ते ब:बतमां परिवाडीकार कंड़ पण जणावता नथी.

शलेश्वरनं वर्णन करी छेवटे ग्रंथकार नीचे प्रमाणे पोतानी गुरुपरंपरानो उद्घेख करवापूर्वक पोतानी ओलखाण आधी **अस्तृत चैत्यपरिवाडीनी समाप्ति करे छे.** 

### प्रशस्ति अने उपसंहार.

पूनिमया गच्छनी चंद्रशाखामां श्री भुवनप्रभसूरि नामे गुणी आचार्य थया.

भुवनप्रमसूरिनी पाटे कमलप्रभसूरि अने तेमनी पाटे पुष्य-मभसूरि नामे आचार्य थया.

पुण्यप्रभस्रिनी पाटे श्रीदिद्यात्मसूरि थया जे पोताना सम-यमां एक गुणी पुरुष तरीके प्रसिद्ध हता.

ते विद्यापमसूरिना शिष्य छितिषमसूरि थया के जेमणे विक्रम संवत् १६४८ ना आसोज वदि ४ चोथ अने रिववारने दिवसे आ ' पाटण-चैत्य-परिवाडी ' बनावी छे.

आ परिवाडीमां पाटण अने आसपासना गामडाओनां सर्व मलीने ९५९८ नव हजार पांच सो ने अठाणु जिनबिंबोने परिवाडीकारे नमस्कार कर्यों छे.

अंतमां फरिने ग्रन्थकारे पोताना इष्टदेव शंखेश्वर पार्श्व-नाय अने पोताना ग्रुरने याद करीने पाटण-चैत्यपरिपाटीने पूर्ण करी छे-

मुनि कल्याण विजयः

## श्रीलिलितप्रभसूरि--विराचता पाटण चैत्य-परिपाटी.

## ॥ चउपई ॥

सयक जिणेसर प्रणमी पाय। सरमित सहगुरु हई डइ ध्याइ। पाटण-चैत्यपरिवाडी कहुं। जिनिबंब नमतां पुण्य ज लहुं।।१॥ पिहलुं ढंढेरवाल्डइ नामि। सामला पास करुं प्रणाम।। जिमणइ पासइकलिकुंड पास। मनवंलित सिव पूरइ आस॥२॥ इकत्रीस प्रतिमा बीजी होइ। बीजइ देहरइ वीरजिन जोइ। त्रिसला नंदन मेट्या सही। संघ सहू आव्या गहगही॥ ३॥ दावइ पासइ चंद्रपभ स्वामि। जिमणइ पासइ लघु वीर ठाम। विसई सात्रीस करुं जुहार। गौतम विंब एक छइ सार।।४॥ गोवाल जबहिरी देहरासरि। सात प्रतिमानई ऊलट भरि। वंदी प्रतिमा रत्नमइ एक। दोसी पन्ना घरि सुविवेदा। ५॥

चौद प्रतिमा तिहां वंदी करी । रायमल देहरासर हईइ धरी ।
ऋषभादिक जिन छत्रीस तिहां। एक रत्नमय वली छइ जिहां ६
त्रीजइ देहरइ आव्या जाम । पास जिणेसर भेट्या ताम ।
अंजनगिरि कइ मेरु सुधीर । जाणे उन्नत जलधर खीर॥७॥
सतर भेद पूजा सुविशाल । कीजइ भावइं रंग रशाल ।
ऋषभादिक जिन त्रइतालीस । भगतई भावइं नामुं शीस॥८॥
सहा धनजी देहरासर दीठ । नयणे अमीय रसायण पईठ ।
ऋषभादिक प्रतिमा इग्यार । चुवीसवटु छइ एक उदार॥९॥
मेलाविसा देहरासरि आवि । ऋषभादिक वासिट नमुं भावि।
विसा भीमा देहरासर सार। ऋषभादिक जिन त्रीस विचारि

दोसी राजू देहरासर देषि । अठावीस जिनवर हरषइं पेषि । रतन संघवी देहरासरि जिणंद । पंचवीस जिन दीठइ आ-णंद ॥ ११ ॥

श वस्तु छंद ॥ सकल जिनवर २ पाय पणमेवि। सरसित सामिणि मिन धरी । सुगुरुपाय पणमेवि भित्तई। चैत्यपरिवाही पत्तनह करुं कित नवनवी जुत्तिई। ढंढेर वाडइ जुहारीआ सकल जिणेसर देव। पंच सया छपन्नया तिहुअण सारइ सेव २॥ १२॥

॥ वीर–जिणेसरचरज० ए ढाल ॥ १ ॥ कीका पारिष देहरासरि ए। आव्या मनरंगिइं। वंदी प्रतिमा पंच तिहां ऋषभादिक चंगइ, देहरइ कोका पासनाह । भेटचा जिन होइ । श्वत ऊपरि सात्रीस तिहां। काउसगीआ दोइ॥ १३॥ दोसी श्रीवंत घरि अछइ ए। वासुपूज्य जिणंद। इकसिंठ जिन बीजा अछइ ए । दीपइ दिणंद । पाटक खेन्नपालनइ ए । जिन शीतलनाथ । सतसिव शत उपरि वली ए । भेटई सनाथ !! १४ !। पारिषि जगू पाडलइ ए। नेमिमतिमा जाण । वे बिंब अवर अछइ ए। भवीआं मनि आणउ। जयवंतसेठि-देहरासरि ए। शांति पडिमा जोई। प्रणमंतां ते हृद्यहेजि । सबहाँ सुख होई ॥ १५ ॥ एकादश्च छड अवर विव । रयणमय इक सार । षारी वावइं ऋषभजी ए। जिन पहिमा च्यारि। गौतम गणहर दोइ बिंब। बीजी षारीवावि। सिद्धत्थनंदन भेटीआ ए। तेर प्रतिमा भावि ॥ १६॥

॥ तउ चडीउ घणमाण० ए ढाल ॥ २ ॥ नागमढइं हिवं आवीआ ए। दीठा नेमि जिणंद तु। प्रतिमा नव तिहां दीपती ए। अभिनव जाणि दिणंद त्र।।१७॥

पंचासरइ पाटकि अछइ ए । धुरि वीर जिनवर सारतु । नव मितमा वंदी करी ए। वासुपूज्य जुहारि तु ॥ १८॥ सतावीस विंव तिहां नमी ए। पंचासरु प्रभु पास तु। अवर सात जिनवर नम्रुं ए । वंछित पूरइ आस तु ॥१९॥ ऋषभ देहरइ हिवइं जिन नम्रुं ए। दश्च विल भमती होइ तु। नवइ घरै छइ पास जिन । त्रिहतालीस विंव जोइ तु ॥ २० ॥ ऊंची सेरी शांति जिन । भणसालीनई नामि तु । अरिहंत त्रेवीस हुं नम्रुं ए । उसवालानइ टामि तु ॥ २१ ॥ सोलम जिन छ विवस्युं ए। नमतां हुइ पेमि तु। चंद्रभभ भीलडीतणा ए । इक नमतां हुइ षेम तु ॥ २२ ॥ सावक पासजिन पूजतां ए । हुईड इहिष अपार त । अवर बावीसइ जिन नम्रं ए । पामड सुख अपार त ॥ २३ ॥ ।। ढाल गउडीनउ ।। ३ ॥

पाटक पींपला नामि । शांति जिणेसर च्यारि प्रतिमा अवर नम्रं ए ।

अजितादिक जिन सात । चिंतामणि ए साह वर्छ देहरासर नम्रुं ए ॥ २४ ॥

विश्वसेन कुलमां हिंचंद। नंद अनोपम अचिरा राणी तेह तणुए। अवर वीस जिण पूजी। आव्या बीजइ ए पास चिंतामणि ए भणु ए॥ २५॥ सतसिं जिनवर होई। मणभी आवीइ षराकोटडी जिहां अछइ ए।

आसधीर ठाकर देहरइ। चंद्रप्रभ जिनवर वि प्रतिमा पूजी अछइ ए ॥ २६॥

सद्यवछ ढाकर देहरइ। पास जिणेसर वि प्रतिमास्युं पर-वर्चा ए। अष्टापद-अवतार।

देषी इरष्या ए चंद्रभभजिन गुणि भर्चा ए ॥ २७ ॥ ओगणसढि जिनबिंब । थंभ अनोपम विंब रयणमय इक भणुं ए ॥

परतरनडं वली चैत्य । सोलम जिनवर बावनजिणाछं तेह तखुं ए ॥ २८ ॥

जुहारी आव्या बीजज। प्रथम जिणेसर(अ) दश्चत म्रति पेखिला ए। चैत्य बिंना मेली । बिसइ बिहुत्तरि मातपिता जिन निरषीला ए ॥ २९ ॥

सोनी तेजपाल घरि। पास जिणेसर उगणत्रीस प्रतिमा जुहारीइ ए।

टोकर सोनीगेहि सुमित जिणंदजी प्रतिमा च्यारि उद्धाराइ ए ॥ ३०॥

#### ॥ ढाल सामेरी ॥ ४ ॥

आव्या पाटिक त्रांगडीइ रे। ऋषभनइ देहरइ चडीइ। जिहां पाप अढारइ नडीइ रे। पुण्यरयणे तिहां वळी जढीइ३१ जिमणइ पद्मपभ स्वामी रै।पास पूरइ वंछित कामी। त्रणि सई पंच्योत्तरि प्रतिमा रे । निरुपम जेहनउ महिमा॥३२॥ मणिहृ हीन इ देहरइ रे । वीरजिनमहिमा मेर इ। मतिमा पंच ते जाणडं रे। देवदत्त चैत्य वखाणडं ॥ ३३ ॥ तेर जिणेसर भावी रे। मांका महितानइ पाटकि आवी। मृगलंछन जिन रंगइ रे । अवर वीस जिन चंगई ॥ ३४ ॥ पाटिक कुंभारीइ पेषी रे। सोनी अमीचंद घरि जिन निर्षी। शांतिजिन हईइ धरिख रे । सतर जिनस्युं परिवरीख ॥३५॥ व छ जवहिरी घरि दीठा रे। चुत्रीस जिनवर बड़ठा। जिनपूजा भावई कीजइ रे । समकित लाइड लीजइ ॥ ३६ ॥ ।।ढाल जलहीनउ॥५॥ त्रिणि पल्योम भोगवी एढाल॥

तंबोलीवाडइ आवीआ भावीआ देव सुपास । प्रतिमा दीपइ त्रहुत्तरि पूरइ जन-मन आस। बीजइ देहरइजिनवर सात नमड ते सार । बुहरा रूपा मंदिरि आदि जिणंद उदार ॥ ३७ ॥ प्रतिमा दश छइ मनोहर सुर नर सारइ सेव।

मेघा पारुषि घरि अछ इचंद्रमभ जिन देव। पांच ज प्रतिमा प्रणमीअ आव्या घुसीनइ गेह। दोइ जिणेसर वंदीअ कीधा निरमल देह ॥ ३८ ॥ सहासीराज देइरासरि संभव जिनवर होइ। प्रतिमा बिसई पंचावन भवियणभावई जोइ। षेजडानइ पाटिक सारंग देहरासर तेह। नव प्रतिमा नमी करी ऋंबडावाडउ जेह ॥ ३९ ॥ विश्वसेन-नंदन निरषीआ परषीआ नवाणडं देव । मंडप रचना चउकीअ हईंडुं हरिष्युं ए हेव। वडी पोसालनइ पाटिक सेठिं सोमानइ गेह। ऋषभादिक जिन चडत्रीस दीपइ संदर देह ॥ ४० ॥ भुजबल सेठि देहरासरि बिंब श्रेयांसस्वामी। पंचइ पडिमा रयणभइ त्रणि अवर जिन पामी ।। वाडीअ पुरवरमंडण नयणे निरष्या आज। वीजा जिनवर पंच ए सारइ वंछित काज ॥ ४१ ॥ सहसा पारिष घरि नमउं पास जिणेसर भावि। तेर प्रतिमा अवर अछइ ऋषभनइ देहरइ ए आवि । तेर जिणंद तिहां निरषीआ हम्षीआ मानव मन्न। भावई पूजा जे रचइ तेहना जनम ए धन्न।। ४२ ॥

॥ ढाल ऊलालानउ ॥ ६ ॥ पाटिक सहानइ ए आवी । आदि निणंद तिहां भावी सत्यासी पडिमा ए देवी। रायसिंघ घरि शांति निरषी॥ ४३॥ सत्तरि कंदी बिंब तिहां वंदी । पाप अहारइ निकंदी । कंसार वाडइ ए दीठा। शीतल जिनवर बइठा ॥ ४४॥ द्वादश्च विंव ए नमीआ। आठ महाभय ए श्वमीआ। बीजइ ज्ञांतिजिन पूज्या । बावीस पडिमाए बुझ्या ।। ४५ ॥ सहा चांपानइ घरि । विंब सोल देहरासरि। रयणमइबिंब बइ ठवीआं । चउथा सहा घरि नमीआं॥४६॥ वंद्या पास जिणंद । चडवीस दीपइ दिणंद । भला वैद्यनइ पाटिक । चंद्रमभ दीपइ हार्टाक ॥ ४७ ॥ प्रतिमा बइ नमी भावि । भइंसातवाडइ ए आवि । शांति जिनादिक छत्रीस । गोयमस्वामि मुणी श्र ॥ ४८ ॥

।। ढाल फागनउ ॥ ७॥

सहावाडह हिवइं आवीइ भावीइ देव सुपास। पंच्यासी पडिमा नमी आवीइ देहरइ पास । सप्तफणामणिशोभित ओपित देह उदार । छसइ बारोत्तर भेटीइ मेटीइ पाप अढार ॥ ४९ ॥ सगरकूइ इवइं जुहारीइ सारीइ पूजा पास।
पिडमा वीस वंदी करी सेिंट पुंजानइ वासि।
ऋषभादिक जिन त्रीसइ ए दीसइ मिहमानिधान।
जयचंदसेिंदनई मंदिरि सुंदर शांति प्रधान॥ ५०॥
तेत्रीस जिनवर निरषीआ हरषीआ भविश्रण सार।
हिबद्पुरइ इवई जाईइ गाईइश्चल उदार।
ऊपरि पंच सोहइ वली मेलो सयल जिणेश।
पाटक मोढ २नइ ए सोहइ च्यारि दिणेश॥ ५१॥

। कनक कमल पगलां ए ढाल ।। ८ ॥
पाटक नारंगइ आवीआ ए। भावीआ पास जिणंद।
नारिंग प्रश्न भेटीइ ए। भेटइं मंगल होइ। नारिंग प्रश्न भेटी०॥
चंद्रवदन तुझ देवतां ए। हूड द्द्रवय उल्हास। नारिंग०॥५३॥
सूरिज कोडि थकी घणडं ए। दीपइ तेज प्रकाश नारिंग०५४॥
पूजई पदमा पामीइ ए। नामइं आठइ सिद्धि। नारिंग०॥५५॥
वइयालीस पहिमा परगडी ए। आव्या शोभी गेहि।
नारिंग०॥ ५६॥

त्रीस ऊपरि बइ सइंवली ए । जुहारी मननइ भावि । नारिंग० ।। ५७ ॥

सोनारवाडइ शांति नमुं ए । पडिमा चऊद उदार । नारिंग० ॥ ५८ ॥ बीजइ देहरइ वीरजिन् ए। पोढी पिडमा एक। नारिंग ।। (९।। फोफ लिआवाडइ पढम जिन अट्टोत्तर जिन बिंब। ना०।। ६१।। वीजं देहरुं शांतिनुं ए। पिडमा पंचवीस होइ। ना०।। ६१।। देहरइ राजा सेठिनइ ए। वंदउ संभव देव। ना०।। ६२।। पिडमा वीस तिहां दीपती ए। काछेलानइ चैत्य। ना०।। ६३।। मिडमा वीर जिन पूजीइ ए। पिडमा बार विचारि। ना०।। ६४।। सेठि वीरजी देहरासिर ए। पूजउ पास जिणंद। ना०।। ६५।। पिडमा च्यारि ज सोहती ए। थावर पारिष गेइ। ना०।। ६६।। छयालीस पिडमा दीपती ए। सेठि महुला घरि आवि। ना०।।

मुनिसुत्रत जिन वंदीआ ए । प्रतिमा पन्नर सार । ना० ॥६८॥ सेठि कक् देहरासरू ए । चउत्रीस पहिमा पास । ना०॥६९॥ सेठि राजा देहरासरू ए । छत्रीस विंवज नेमि । ना०॥७०॥ दोसी वछा घरि आवीआ ए। पूजीआ पास जिणंद । ना०॥ ७१॥

पन्नर पडिमा वंदीइ ए । पंचमइ देहरइ पास । ना० ॥ ७२ ॥ प्रतिमा दस तिहां दीपतीए । वंदी आणी भाव। ना० ॥७३॥

।। ढाल ।। वइरसेनराइं व्रत लीउं ए० ।। ९ ॥ जोगीवाडइ आवीआ ए । प्रभु पासिनणेसर भावीआ ए । पडिमा वीस तिहां वंदीइ ए । सयल पाप निकंदीइ ए॥७४॥ सेठि विद्याधर घरि भणी ए। चउत्रीसइ पहिमा जिनतणीए।
दोसी भोजा घरि भणउंए। श्रीपास जिणेसर हुं थुणउं ए। ७५॥
दस पहिमा तिहां सोहती ए। रयणमइ एक ज मोहती ए।
मफलीपुरि वामातन ए। बारइ प्रतिमा धन धन ए। ७६॥
मालीवाडइ दीठडा ए। पास जीराउल बइठडा ए।
बिंब चउवीसइ जिनतणां ए। पूरइ वंछित कामणा ए। ७०॥
पाटक मांडण महितला ए। संभव जिनवर दीठला ए।
नव पहिमा तिहां गुणि भरी ए। सयल लोकनइ जयकरी ए०८
धनराज देहरासर लही ए। पासप्रतिमा वली तिहां कही ए।
चिउंथालीस पहिमा मिली ए। रयणमइ एक ज तिहां वली
ए।। ७९॥

सेठि कमलसी देहरासरू ए। शांति जिनेसर मनहरू ए। छत्रीस पडिमा सुंदरू ए । भविअण जननइ सुखकरू ए।।८०॥

॥ इंद्राणी जिन पुंषीआ ए ढाल ॥ १० ॥ गदाबदा पाटिक आवीआ ए । भेटीआ शांति जिणंद तु । धनधन जिनवरू ए । पेषतइ परमानंद तु । भविअण जयकरू ए ॥ ८१ ॥

अठावन जिनवर वंदीआ ए। गला जिणद्त गेहि तु। धन २ ॥जि०॥ ८२॥ अचिरानंदन निरषीओ ए। पडिमा पंचवीस जोइ तु। धन २॥ जि०॥ ८३॥

धुपा घला घरि हवई आवीइ ए। परषीआ सात जिणंद तु। धन २॥ जि०॥ ८४॥

पाटिक मिल्लिनाथ वंदीआ ए । एक सब छिउत्तरि देव तु । धन २ ॥ जि० ॥ ८५ ॥

पाटक भाणानइ आवीआ ए । सेवीआ पास जिन स्वामि तु । धन २ ॥ जि० ॥ ८६ ॥

अठाणुं जिनवर सुंदरू ए । समुद्र फडीआनइ ठामि तु । धन० २ ॥ ८७॥

विश्वसेननंदन वंदीआ ए । पडिमा अवर अढार तु । धन० २ ॥ ८८ ॥

पारक चोषावटी आवीआ ए । शांति ज जिनवर भावि तु । धन २ ॥ जि० ॥ ८९ ॥

द्सजिनवर पूजीआ ए। साणेसर वंदिवा आवि तु! धन २॥ जि० ॥ ९०॥

ऋषभादिक आठ जिन पेषीआ ए। पाटिक बलिआनइ भावितु। धन २ जि० ॥ ९१॥

रिसह जिनवर पूजीआए । इंग्यारनइ प्रमाणि तु । धन २ ॥ जि० ॥ ९२ ॥ महिता अबजी पाटिक जाणीइ ए । श्वीतल जिनवर देव तु । धन २ ॥ जि० ॥ ९३ ॥ जिनवर सात तिहां अरचीआ ए। लहु देहरह जिन शांति तु । धन २ ॥ जि० ॥ ९४ ॥

॥ ढाल ॥ बाहुबलि राणानी० ॥ ११ ॥ कुसुंभीआ पाटिक हिनई। दीवला श्रीतल देन रे। उगणीस पिडमा तिहां जुहारीइ। वारीइ दुश्गित देन रे॥९५॥ पेषउ २ श्रीजिनचंद्रमा। पामउ २ सुक्त उदार रे। भविश्र चकोर जिणइ दीवडइ। उल्हसइ हईइ अपार रे।पेषु २ श्रीजिन० आंचली॥ वीजइ देहरइ हिनई वंदीइ। पासजिनप्रतिमा बार रे।

वीजइ देहरइ हिवइं वंदीइ । पासजिनमितिमा वार रे ।
जगपाल देहरासिर नमी । पिडिमा वीस ज सार रे॥पेषु०९६॥
वाछा दोसी घरि हिवइ पूजीइ । मोहनपास जिनदेव रे ।
सोल ज विंब अवर नम्रुं । कीजइ २ भगतइं सेव रे॥पेषु०॥९७॥
नाकरमोदीनइ पाटकईं । पूजउ २ पास जिन स्वामि रे ।
प्रतिमा श्रत वली बार भणुं । पहुचइ २ वंखित काम रे॥पेषु०९८
नानजी पारिष घरि वली। पूजु २ वासुपूज्य जिनदेव रे ।
पतिम सोल अवर अ छइ । धर्मसी घरि शांति देव रे॥पेषु०९९
एकत्रीस जिनविंब भाव सीउं । वंदीइ हरिष उल्हासि रे ।
सांडा पारिष देहरासरई । वंदजर श्रीजिन पास रे॥पेषु०१००

तेत्रीस मितमा अवर भणी । रत्नमय छइ वली एक रे । सोपनुं विंव वलीजुहारीइ । अरचीइ पुष्फि विवेक रे॥पेषु०॥१॥

।। तस्ति नरपित छाहडी ए ढाल ॥ १२ ॥
मोइन पास जुहारीइ जी । गालू संघवी ठामि ।
छवीस पिडमा वंदी करी जी । कीजइ जनम सुकाम ॥ २ ॥
सुगुणनर भेटड श्री जिनराय । हुईडलइ भाव घरी घणउ जी ।
आंचली ॥ [पूजड त्रिभुवनराय ॥

हेमराज देहरासरि भणुं जी । सुमति जिणेसर देव । इक पंडिमा वली तिहां अछइ जी । त्रिभुवन सार्इ सेव ॥३॥भु० राजधर संघवी घरि थुणं जी । विमल जिणेसरस्वामि । च्यारि प्रतिमास्युं सोहती जी । जईइ लटकण टामि ॥४॥सु० श्चांति जिणंद तिहां पेषीआ जी। बार प्रतिमा वली होइ। भंडारी पाटिक हुं नग्रुंजी । पास पडिया तिहां जोइ ॥५॥ सु० च्यारिप्रतिमा वली तिहां कही जी।पाटक भाभानिपास। इकावन पढिमा पूजीइ जी । पूरइ वंछित आस ।। ६ ।। सु० तेजपाल सेठि देहरासरि जी। धर्म जिणेसर स्वापि। सतर पडिमा पूजतां जी । सीझइ वंछित काम ॥ ७ ॥ सु० सहस्रकिरण घरि निरषीआ जी । सुपित श्रीजिनराय । पंचवीस पहिमा अरचीइ जी । पंचायण घरि आइ॥ ८ ॥सु०

श्वांतिमूरित निरषी करी जी। जिनवर त्रइसिट जेह।
लींबडी पाटिक आवीइ जी। सारंगदोसी गेह।।९॥ सु०
सप्तफणामणि पासजो रे। बार जिणेसर देषि।
रायचंद दोसी घरि वली जी।शांति जिणेसर पेषि॥१०॥ सु०
सोल प्रतिमा अवर अछइ जी। रयणमयी पिडमा दोइ।
शांति देहरइ हिवइ आवीइ जी।सोलम जिणेसरजोइ॥११॥ सु०
चौद प्रतिमा तिहां वंदीइ जी। लीजइ पूजी लाह।
नवड प्रासाद सोहामणड जी।दीठउ मननइ उछाह।।१२॥ सु०

॥ बीर जिणेसर दीए देसना ढाल ॥१३॥ करणा साहा पाटिक अछइ ए। शीतल जिनवर देव तु। पेषिला ऊलट अति वणइ ए। सतसिट जिनवर सेव तु॥१३॥ पूजीजइ शीतल सुंदरू ए। सुंदरमुख जीसिड चंद तु।तेनिं दीपइ दिनकरू ए॥ आंकणी ॥

दोसी वीरा देहरासरू ए। श्रेयांस जिनवर सार तु।
तेर प्रतिमा अवर नम्रुं ए-भेटूं रोत्रुंज-अवतार तु॥ १४॥पू०॥
दोसी वीरपाल घरि भणउं ए। ऋषभद्याल जिनदेव तु।
विंव अदार अरचीइ ए। महिता समस्य घरि हेव तु॥१५॥पू०
तिहां नम्रुं वामानंदन् ए। सतर विंव वली जुहारि तु।
हरिचंद घरि कुंथु जिणेसरू ए। सात पिंडमा मनोहारितु॥
॥ १६॥ पू०॥

सहा धर्मसी देहरासिर थुणुं ए। चंद्रमभाजिनवर स्वामि तु। स्तालीस पिंडमा वंदीइ ए। शवजी संघवी ग्रामि तु॥१०॥पू० शिवादेवी नंदन चरचीइ ए। पिंडमा चींद उदार तु। रयणपय पिंडमा च्यारिभणीइ ए। तेजतण उनही पार तु।१८पू० पारिष सारंग शांतिजिन् ए। अठतालीस विंब ज होइ तु। सहा कमा घरि आवीइ ए। शांति जिणेसर जोइ तु॥१९॥पू० सतालीस पिंडमा जुहारीइ ए। पट वि तिहां विचारि तु। रयणमय पिंडमा च्यारि कही ए। रूप्पमय एक ज सार तु॥२०पू०

॥ नाचइ इंद्र आणंदस्युं ढाल ॥ १४ ॥
बंभणवाडइ आवीइ । वहरा वीरदासनइ गेह रे ।
वासुपूज्य जिन पूजीइ । जिन चउवीस सुदेहरे ॥ २१ ॥
गावउ २ जिनवर गुणि भरचा । पामउ २ सुक्ख विशाल रे ।
मनमोहन जिन दीठडइ । हईडइ हरिष रशाल रे ॥ आंकणी ॥
रयणमय पिडमा इक नमी । हीरा विसा घरि जेह रे ।
शांतिजिणेसर दस वली । दीठइ निरमल देह रे ॥२२॥गावु०॥
साहिस्सू संघवी घरि भणउं। मृगलंखन जिनराय रे ॥
छ जिनवर अवर नम्या । हस्ती चित्र सुठाय रे ॥२३॥गावु०॥
वीर जिणेसर देहरइ । पूज्या त्रिसला पूत्र रे ।
च्यारि पिडमा अवर नमी । हीरजी घरि पहूत रे॥२४गावु०॥

अचिरानंदन जिहां अछइ। दस जिणंद उदार रे।
शांति देहरइ ते जुहारीइ। सात बिंब छइ सार रे।।२५ गांवु०।।
विमलसी सेठिनइं घरि वली। आठ बिंब मन मोहइ रे।
रयणमय जिनवर बिंब तिहां। तेजइं अतिघणुं सोहइ रे॥२६गा०
पारिष पुंआ घरि भणउं। ऋषभजिनंद दयाल रे।
रजतमय बिंब ज च्यारि अछइ। इग्यार जिन मयाल रे॥२७गा०
घेतलवसहीपासजिन्। दीपइ पूनिमचंद रे।
विसय सतालीसबिंब नम्नुं। पेखिला परमानंद रे।।२८॥गावु०॥
पूजा कीजइ भावसिंखं। जिनवर अंगि सुचंग रे।
स्रीआभइ जिम पूजीआ। सोहमइ मनरंगिरे॥ २९॥ गावु०॥

॥ धनर साधु जे बनि रहइ ए ढाल ॥ १५ ॥ पाटक लटकण आवीआ। दोसी गपू घरि। अजित इग्यार पिंडमा वली। अरचु पूजु सुपरि ॥ ३० ॥ सुणि २ भिवयण पाणीआ। लाधज जिनधम । पूजा भावना भावीइ। ए कहीज ममें ॥ आंकणी॥ सहा वाला घरि हुं भणुं। चंद्रमभ स्वामी। एकावन जिनवर निरषीआ। छ रयणमय पामी॥३१ सुन॥ लालजी घरि सुंदरू। संभवजिन देव। वालजं विंव तिहां दीठलां। कीजइ जिनसेव ॥ ३२ सुन॥

देहरइ शांतिजिन निरषीआ। बाबीसइ पंती। बीरजी घरि सोलम जिन् । बाबोसइ पंती ॥ ३३ सु० ॥ कुंपा दोसी पाटिक आवीआ। रिसहजिन भावड । आठ प्रतिमा तिहां वंदीइ। भावना भावड ॥ ३४ ॥ सु० ॥ दोसी गणीआ घरि हवइ। पास पहिमा होइ। बा बीस जिनवर परषीआ। पंडित जन जोइ॥ ३५ सु० ॥ सतर भेद जिन पूजीइ। ज्ञातासूत्रइ भाषी। जिनवचन हुई इइ धरी। दूपदी साषी ॥ ३६ सु० ॥

।। राग मेवाइ ए ढाल ।। १६ ॥
विसावाडइ पुंजा सेठि घरइं। पासजिन निरुष्या रे आज।
साल प्रतिमा रयणमय इक वली। दीठइ सरीआं रे काज। इक मरति निरुष रे जिननी भावसिउं। ते नर नारी धन्न।

मूरति निरपु रै जिननी भावसिछं। ते नर नारी धन्न ।
जो निजभावई पूजा आचरइ । ते नर लहइ बहुपुन्य ॥
॥आंचली॥ सानी अमर दत घरि धर्मजिन। पडिमा इंग्यार जेहा
विसा विमृनइ देहरासरि । जिन त्रेवीसम्र वली तेह॥३८॥मू०
अवर अढारइ जिन तिहां बंदीइ । रःनमय एक ज सार ।
अमरपाल देहरासर भणडं । अजितह रयण उदार ॥३९॥मू०
प्रतिमा त्रणि वली जिहां अछइ । देहरइ पुहुता रे जाम ।
से।लम जिनवर निरच्या भावसिछ। पैचास पडिमा रे ठाम४०मृ०

सरहीआ वाडइ ऋषभजिणेसरू । त्रेवीस जिनवर जुहार । दोसी वाडइं हटूनइ घरि । शांतिजिन दीठ रे सार॥४१मू०॥ ञांतिनाथनइ पाटिक। लिषमीदास देहरासरि जिनशांति। प्रतिमा बारइ पूजइ भावस्युं। टालइ भवनी भ्यांति ॥ ४२ मृ० ॥ संघराजनइ घरि वामानंदन । पन्नर पडिमा रे तांहि । हेमा सरहीआ घरि हिवइ आवीइ। त्रेत्रीसमउ जिन ध्याइ४३मु० छयालीसपहिमा अवर जुहारी । लीजइ भवतु रे लाह । श्रांतिमूरित संयास्रीस वस्त्री अस्त्र । टालइ भवतु रे दाह॥४४मृ० पास कंबोई उते विक जुहारीइ। सात ज पहिमा रे सार। कटकीआवाडइ रिसइ ज पूजीइ। पंचावन जिन उदार॥४५मू० सेठि विमलद्।स घरि अजितजिणेसरू। चौदह जिन धन धन्न। निरषु जिनजी हईइ हरिषस्युं । तसु वली वाथ इ वन्न ॥४६ मू० आनावाङइ रंगइं आवीइ। दीउला श्रीजिन नेमि। प्रतिमा चुत्रीस भावइं पूजीइ। जिम पामउ सवि षेम ॥४७मू०॥

॥ ऋषभ घरि आवइ छइ ए ढाल ॥ १७॥
आए सालवीवाडइ आवीइ । त्रसेरीआ वली मांहि।
नेमि जिन जुहारउ जी । राणीरायमइ बल्लहु ।
जीवदया प्रतिपाल ॥ नेमि० ४८
आंचली॥सत्यासी जिन पूजीइ। देहरइ श्रीजिनमल्लि॥नेमि ०४९

पंच्योत्तरि विंव निरषोआं । कूरसीवाडइ आवि॥नेमि०५०॥ शांतिजिन तिहां परषीआ। अवर बिंव तिहां तेर ॥ नेमि०५१॥ कईआवाडइ वीरजी । प्रतिमा पंच उदार ॥ नेमि० ॥५२॥ रायचंद संघवी वासुपूज्य । विव चौद विचारि॥नेमि०॥५३॥ कल्हारवाडइ शांतिजी । बिंव पंचावन होइ ॥नेमि०॥५४॥ दणायगवाडइ पढम जिण । सत्तरि जिनवर जोइ॥ नेमि०५५ घांधुलि पाटिक सुविधि जिन । एकोत्तरि जिनसार।।नेमि५६ ऊंचइ पाटिक पासजी । जिन नम्रंत्रणइ तांहि॥ नेमि०५७ ॥ सत्रागवाडइ जुहारीइ। बिंबनव तिहां पास।। नेमि०।।५८॥ पुंनागवाडइ आवीइ। दस विंब पासस्युं होइ॥ नेमि०६०॥ गोल्हवाडइ श्री पासजी। पडिमा पंच तिहां दीठ।।नेमि०६१ चीजइ देहरइ त्रेवीसम्रु । पडिमा त्रत उगणीस ॥नेमि०॥६२ ॥ रयणमय पडिमा एक वली । ठाकरसाहनइ गेहि ॥ नेमि०६३ यास जिणंद तिहां दीठडा। पूगी मननी आस ॥ नेमि० ॥६४॥

।। ढाल माई घन्न सुपन्न० ॥ १८ ॥
पेषउ घउली परवहं । मुनिसुन्नत जिन देव।
बावन जिनपडिमा । सुर नर सारइ सेव ।
दूदा पारिष घरि छइ। भ्रांति जिणेसर राय।
पंचइ जिन नमतां । सुख संपद सिव थाइ॥ ६५॥

दोसी देवदत्त घरि छइ । चंद्रपभ जिन स्वामि । सततालीस जिनवर । पूजतां शिव टाम । सोनी रामा घरि छइ। पास जिणंद खहारउ। अढारइ जिनवर पूजी। भवभय वारउ ॥ ६६ ॥ विंब रयणमइ बंदु। तिहां छइ एक ज सार। चड पट्ट अनोपम । दीठइ सवि सुखकार । गोदङनइ पाटिक । पूजउ ऋषभ दयाळ । जिन सरिषा वरणई । पेषउ रंग रशाल ॥ ६७ ॥ एकसंख चिउंऊत्तरि । प्रणमंता हुइ प्रेम । विसा थावर घरि छइ। रिषभ करइ ते पेम। चौदह जिण पूज्या । तिहां निज उत्तम भावि । दोसी हीरजी देहरासरि । हुईडइ हरषई आवि ॥६८॥ पासह जिण निरष्या । तिहां वली ऊलट आणि । उदयकरणनइ घरि । ऋषभ जिन अमृत वाणि । बावन छइ जिनवर।पूजउ हरषि अपार। ं जिनवर गुण गातां । सुख पामउ बहु वार ॥ ६९ ॥

।। कुंकुम तिलक ए ढाल ।। १९ ॥ पाटिक नाथा सहानइ आवउ । शांति जिणेसर भावउ । एकसउ नवागउं देव । हरिषउं हड्डउं हेव ॥ ७० ॥

दोसी वछानइ घरि । चंद्रमभ देहरासरि । सत्तरि जिनर्बिव नमीइ । संसारमांहइं न भमीइ ॥ ७१ ॥ सेठि पच देहरासरि। चंद्रश्भ जिन सुखकर। साल विंव तिहां साहइ। सीपमइ इक मन मोहइ॥ ७२ ॥ स्ररजी सेढि घरि आव्या । पन्नर जिनविंब भाव्या । दोसी रामानइ घरि। ओगणपंचास जिनवर ॥ ७३ ॥ दोसी रहीआ घरि देव। ओगणत्रीस कीजइ सेव। महितापाटिक निरषे । ग्रुनिसुत्रत जिन परषे ॥ ७४ ॥ वीस जिणंद तिहां जुहारउ। पूजी समकित धारउ। सहा वछा घरि पास । त्रिण जिन पूरइ ए आस ॥७५॥ जिन सरिषां र्विब जाणड । पेषी भाव मनि आणड । नियम त्रत सूधउं ए पालउ । समकित रयण अजुआलउ।।७६।। ॥ ढाल भमारूली ॥ २० ॥ जिन चैत्य इम जुहारीइ तु रि भमारूली । एक संख एक वषाणि तु। अणहळ पाटणि एतला त रिभमारूली । देहरासर वली जाणि तु ॥ ७७ ॥ नवाणुं ते रूअडा तु रि भमारूली । प्रणमंख भगतई सोइ तु । पाप अढारइ छूटीइ तु रि भमारूली । सुख संपद सिव होइतु॥७८ विदुममय विंव एक भणउं तु रि भगारूली। सीपमय विंब बे होइ तु।

रयणमय जिन पहिमा थुणुं तु रि भमारूली । अडत्रीस ते वली जोह तु ॥ ७९ ॥

देइरा बिंब जुहारीइतु रि भमारूली। सहस पंच विचारितु। शत च्यारि ऊपरि वली तु रि भमारूली।सत्ताणउं वली सार तु ॥ ८०॥

देहरासर जिन पूजीइ तुरि भगारू ही सहस विजिनस्वामितु। दात आठ अधिक भण्या तु रि भगारू ही। अठसठि पूरइ काम तु ॥ ८१॥

आठ सहस त्रणि दात वली तु रि भमारूखी ॥ च उराणुं जिन जेइ तु ।

गौतम विंब च्यारि नष्ठं तु रि भ०च्यारि ज पट्टज होइ तु ८२

।। ढाल विर जिणेसर वंदीए ॥ २१॥ वाडीपुरवर-मंडणड ए । प्रणमीय २ अमीझरड पास तु । आस पूरइ सयलतणी ए । पूजीइ २ आणी भाव तु ॥

।। वाडीपुरवर-मंडणउ ए । त्रूटक । वाडी-मंडण वामानंदन । सयलभुवनइ दीप ए । नमइ अमर नरिंद आवी । सयल दुरजन जीपए । अवर विंवह एक नमतां । भगतशंकट चूरए । दुलतपुरि जिन एक नमतां । सयलवंखित पूरए ॥८३॥ कुमरगिरि जिन शांति नम्रं ए । महिमा ए२ जिनतणउहोइ तु । वाणीइ अमृतसम भणी ए परतर २ चैत्य विशास्त्र तु ।

। कुमरगिरि जिन शांति नमुं ए। त्रूटक।
नमुं शांति नवइ जिनवर। भमतीइं पंचास थुणउं।
पोसालमांहि चैत्य निरूपम। शांतिजिणवर तिहां भणउं।
छत्रीस बिंब अवर नमीइ। गभारइ ते सुल करू।
पीतल-पिडमा च्यारि सइं वली। छन्ं ऊपरि मनहरू॥८४॥
सोलम जिनवर वंदीइ ए। वावडी २ जिनवर सार तु।
अहारइ पिडमा सुंदरू ए। वडलीय २ परतरचैत्य तु।

। सोलम जिनवर वंदीए ए । जूटक ।।
वंदीइ ते सोलग ।जनवर । च्यालीस पिंडमा जाणी ।
श्री जिनदत्तसूरी महिमा पूरइ । जगत्रमांहि वषाणीइ ।
श्री वीरचैत्य वंदउ नित्यइं । मूरित अतिसोहामणी ।
नगीनानइ चैत्य आवी । पार्श्वजिन सात ज भणो ॥ ८५ ॥
नवइ नगीनइ आवीइ ए । पेषीइ २ श्री जिनशांति तु ।
पंचतालीस मूरित पूजीइ ए । पूजतां २ आणंद होइ तु ॥

नवड़ नगीनइ आवीइ ए ॥ त्रूटक ॥ नगीनइ ते नवइ आवी। बहुत्तरि जिणाछं निरषीइ। त्रण मूरति अवर पेखी। सूधउ समकित परषीइ। अवर ठामे जेह देहरा। देहरासर पार ज नही।
भगतिभावइं ऊलट आणी। आदर किर वंदन सही॥८६॥
॥ गुरुजी रे वद्धामणहुं ए ढाल ॥ २२॥

कतपुरि देहरइ दीवडा तु । शांतिजिणेसर भावइ रे । एक जिनवर तिहां वंदीआ तु । समोसरण हिनइ आवि रे।८७ जिनजी रे तम्ह गुण घणा तु। गातां नावड पार रे। चंद्र किरण जिम निरमका तु। सुगताफल जिम सार रे। ॥आंचळी॥ पढम जिणेसर पूजीइ तु । सात जिणेसर चंगइ रे। रूपपुरि रंगई आवी तु । पास भेटचा मनरंगई रे ॥८८जिन० छिडत्तरि जिणंद पूजीआ तु । भमतीई जिन चडवीस रे । बीजइ देहरइ ऋषभजिन तु। बइ पडिमा नामउं श्रीस रे।८९जिन० महिता डुंगरि घरि भणुं तु । अजितजिणेसर देव रे। छामुठि जिणंद अरचीइ त । सेठि बोघा घरि हेव रै।९० निन्० चुबीस जिणंद निर्पीआ तु । सेठि गणराज घरि आवउ रे । त्रइसिंठ जिनवर तिहां अछइ।सेठि वस्ता घरि भाव**उ रे ॥ ९**१ शांति जिणेसर पूजीइ तु। इग्यार जिनवर सार रे। सेठि जगू देहरासरई तु । चुत्रीस जिन उदार रे॥९२॥जिन० चुहरा सांडा देहरासरि तु। पास जिणेसर देव रे। उगणच्याली सइ जिनवरा तु । गौतम की नइ सेव रे ॥९३।–१

रंगा कोठारी घरि भणउं तु । सोलम जिणेसर स्वामी रे ।
चौद जिनवर तिहां भावीआ तु । सेठि कुंअरजी घरि
पामी रे ॥ ९३ जिन० ॥२॥
विश्वसेन कुल माहइं दिनकरू तु । चौद पिडमा तिहां भावी रे।
अनंत गुण छइ जिनजीना तु । वयणे अमृत आवी रे।९४जिन०
चाणसमइ ते पूजइतु । भट्टेबु श्री पास रे ।
चउत्रीस मितमा निर्वतां तु । पूगी मननी आस रे।९५जिन०
कंबोईइ सिरिपासजी तु । पिडमा पंच विचार रे ।
भमतीइ सोल विंब अछइ तु । मुंजपुरि त्रणिजिन सार रे ॥

।। एहवड रूअडु रे नारिंगपुर ।। ए ढाल ॥ २३ ॥
मइं भेटिउ रे संखेसर श्रीपासजी रे । ध्यायड हईडा मांहि।
गुणसागर रे २ भविअण जननई सुखकरु रे ।
जस नामइं रे नवनिधि घरि सिव संपजइ रे ।
आवइ वरण अढार वंदइ रे २ भावई धराणद पुरंदरूरे ॥९७॥
इम स्वामी रे सविजननइ छइ हितकरु रे ।
जोतां आनंद होइ। मुख सोहइ रे २ निरुपम पूनिम चंद जि—
॥ आंचली ॥ [सउ रे ॥ इम०
जस महिमा रे त्रिभुवनमांहई व्यापीड रे। नमइ अमरनरिंद ।
पूजइ रे २ व्यंतर ज्योतिष दिवाहरू रे।

॥ ९६॥ जिन० ॥

जिन ध्यातां रे मारिंग शंकट सिव टलइ रे । दुखडां नासइ दूरि । पामइ रे २ सुखिपद सिव सुहाकरू रे ॥ ॥ ९८ ॥ इम० ॥

गिछ पूनिम रे शाखा चंद्र विषाणीइ रे। श्री भुवन प्रभ सूरि।
गुण रयणे रे २ जळिनिधि जिम हुइ गाजतु रे।
तिम सोहइ रे कमल प्रभसूरी सरू रे।
तसु पाटि पुण्यप्रभ सूरि। दीपइ रे २ तेजई दिनकरराजतु रे
॥ ९९॥ इम०॥

तसुपाटइं रे श्री विद्याप्रभसूरी सरूरे ! जेहवड पूनिम चंद ! नंदन रे २ गुरी माता तेह तण उ रे । जिम गगनइं रे तारागणछेह नहीं रे । गंगा विछ् न पार । गुण पूरइं रे २ देहभरिओ श्रीगुरुतणड रे ॥ २०० इम० ॥ ज्ञानइं रे भरीड जिम हुइ जल्लिमिश रे । षम दम महवसार । कीरित रे २ भूमंडल्लमांहि विस्तरी रे । तसु शीस ज रे लिलित प्रभस्ति इम भणइ रे धन धन चैत्य प्रवाहि ।

पाटिण रै २ मनोहर चैत्य ज चिति घरी रे ॥ १ ॥ इम० ॥ संवत रे सोल वली अठतालडइ रे । आसो मासि विचारी । बहुल पित्व रे २ चडिथ तिथि वली जाणीइ रै ।

आदित रे बार अनोपम ते कहिउ रे। तिणि दिन आदर आणि। भावइं रे २ जिनना गुण वषा-णीइ रे ॥ इम स्वामी० ॥

जिन विंब ज रे जुहार्यां नव सहस सुंद्रू रे। द्यात पांचइ विचारि अठाणउ रे २ ऊपरि ते वली हुं भ-णडं रै। ए सर्व ज रै।

ग्राम नगर पुर जे कहा रेधरीआ संख्या मानि । अरचूं रे २ आणंद आणी मिन घणड रे ॥ २०३ ॥ ।। कलश् ॥

इम चैत्य-मवाडी मनि रूहाडी रची अति साहामणी। श्रीपास पसाई चित्ति ध्याई अणहस्त्र पाटण तेहतणी । श्री सद्गुरु पामी धरड धामी स्तवन रूपि सहाकरो । संखेसरु श्रीपास स्वामी सयल भ्रुवनइ जय करो ॥ २०४॥ इति श्री भट्टारक श्री श्री ४ श्री छलित पभग्नरि कता

समस्त चैत्य प्रपाटिका संपूर्णी ।।

<sup>्</sup>र संकुहिअजन्हुकुप्पर-गीवकरचरण बंधणावय वउ । अणुहवउ तुम्ह वयरी । जं लेहड पावप सुक्खं ॥ संवत् १६४८ वर्षे पोष मासे वहुलपक्षे १ सोमे मु० गुणजो लिखितं॥ (चैत्य परिवाडीनी प्राचीन प्रतिनी अन्त्य लेख. )

#### परिश्चिष्ट.

# पंडित हर्षविजय कृता.

पाटणचैत्य-परिपाटी.

समरीय सरसती सांमनोए, प्रणमी गुरुपाय। पाटणचैत्य प्रवाडी, स्तवन करतां सुख याय ॥ १ ॥ पाटण पुण्य प्रसिद्ध क्षेत्र, पुण्यनुं अहीढांण । जिन प्रासाद जिहां घणा ए, मोटई मंडांण ॥ २ ॥ म्रुझ मन अविउमाहलो ए, जिनवंदन केरो । पाटण चैत्य प्रवाडी, करतां हरख्यो मन मेरो ॥ ३ ॥ प्रथम पंचासरे जाइइं ए, तिहां प्रासाद च्यार । पंचासर जिनवर तणो ए, देखो दीदार ॥ ४ ॥ चोपन बिंब तिहां अतिभला ए, वली हीरविहार। मतिया त्रिण सहगुरु वणीए, मूरति मनोहार ॥ ५ ॥ तिहांथी ऋषमजिणंद नम्रुं ए। बिंब पन्नर गंभारइ। एकसो विंव अतिभलाए, भमतीए जुहारह ॥ ६ ॥ वासुपूज्यने देहरे ए, बिंब त्रण वखाणुं । महावीर पासे वली ए. विंव चारज जाणुं ॥ ७ ॥

उंची सेरी श्रान्तिनाथ, प्रतिमा पंचास।
एक उपर नमतां थकां, पोइचे मन आस ॥ ८॥
पीपले साक्को पार्श्वनाथ, सडसठ प्रतिमा सोहे।
सडतालीस विंव श्रान्तिनाथ, भवियण मन मोहे॥ ९॥
चिंतामणि पाडा मांही, श्रान्तिनाथ विराजे।
पचवीस प्रातमा तिहां भलीए, देखी दु:ख प्रभाजइ ॥१०॥
बीजे देहरे चन्द्रप्रभ, तिहां प्रतिमा वंदुं।
दोसत सडसठ उपरे, प्रणमी पाप निकंदुं॥ ११॥
सुगाल कोटडी प्रासाद एक, थंभणो पार्श्वनाथ॥
धर्मनाथ नइ शान्तिनाथ, श्रिवपुरीनो साथ॥ १२॥

ढाल ॥ १ ॥ देशी वाहाणनी । राग मल्हार ॥
स्वराकोटडीमांहि प्रसाद मनोहरूरे । के प्रासाद मनो० ।
पंचमेरु सम पंच के, भिवयण भयहरूरे । के भिव० ॥ १ ॥
अष्टापद प्रासादके—चंद्र प्रभ लहीरे । के चंद्र० ।
नवसत उपर सात कि, प्रतिमा तिहां कहीरे । के प्रति० ॥
चंद्रपभ प्रसादके, तेर जिणेसरूरे । के तेर० ।
पास नगीनो षट जिन । साथे दिणेसरूरे ॥ साथे०॥ २ ॥
शान्तिजिणंद प्रसाद । देखी मनहरखीएरे । देखी मन० ॥
श्रीरासि जिन प्रतिमा। तिहां कणे निरखीएरे। तीहां कणे०३॥

आदिनाथ जगनाथनी । मूरति अतिभलीरे । मूरति० ॥ पंचाण तिहां प्रतिमा । वंदो मनरुलीरे ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ न्त्रांगडिया वाडामांही। ऋषभ सोहामणा रे। ऋषभ सो०। विंव चारसे चार के । तिहां जिनवर तणारे । तिहां जिन० ५॥ दोय प्रसाद कंसारवाडे हवे वंदीए रे । वाडे ह० । शीतल ऋषभ नमी सब। दुःख नीकंदीए रे ॥ के दुःखनी० ६॥ प्रतिमा तेर अठासी । बेहु देहरा तणीरे ॥ के बेहु०॥ जिन नमतां घरे। **लखमी होय अति घणीरे।।के लखमी०७।।** ·साहना पाडामांही। ऋषभ जुहारीएरै ।। ऋषभ जु० । प्रतिभा दोसत बासी। मन संभारीए रे ॥ के मन० ८ ॥ चाडीपासतणो । महिमा छे अति घणोरे ॥ के महिमा० । वडी पोसालना पाडा।मांही श्रवणे मुणो रे ।मांहि श्र० ९ ॥ एकसो सड़तालीस। जिहां प्रतिमाय छे रे। के जिहां प्रति । ·चोम्रुख वंदी जिनराज I ऋषभ नमीए पछेरे।|ऋषभ नमी०१०।। ्दोसतने पणयालीस। जिन प्रतिमा तिहारे । के जिन प्रति ॥ ंपंच बंधवनं देहरु। लोक कहे तिहारे। के लोक० ११॥

> ढाल ॥ २ ॥ देशी हडीयानी ॥ देहरासर तिहां एक, देहरासर सुविशेष । दोठ भुजबलतणुं ए, के दिसइ सोहामणुं ए ॥ १ ॥

नारिंगपुर वर पास, जागतो महिमा जास। दोसत बिंब भलाए, पणयालीस गुण निलाए ॥ २ ॥ त्रभेडा वाडामांही,शान्ति नम्नं उछांही। पंचसत जीनवरुष, एकोत्ररे उपरे ए ॥ ३ ॥ तंबोली वाडा मझार, सुपास नम्रं सुखकार ! एकसो त्रीस सदाए, प्रणग्नं जिन ग्रुदाए ॥ ४ ॥ कंभारीए अदिनाथ, प्रतिमा एकाशी साथ। देहरै कोरणीए, तिहां प्रतिमा घणी ए ॥ ५ ॥ सोल प्रतिमा सुखकंद, श्वीन्तनाथ निणंद । मांका महिता तणे ए, पाडे सोहामणे ए।। ६।। मणीयाटी महावीर, मेरुतणी परे धीर। चालीस विवसुं ए, प्रणमुं भावसुं ए ॥ ७ ॥ तीर्थ अनोपम एह, ग्रुज मन अधिक सनेह। दीठे उपजेए, संपदा संपजे ए ॥ ८॥

ढाल ॥ ३ ॥ पखालीए रे सेवो श्री श्रान्तिनाथरे । हुं वंदुं रे प्रतिमा तेत्रीश साथ रे ।

१ 'तेवीस ' पवी पण पाठान्तर छे.

सावाडे रे सांमल पास सोहामणा बिव पांचसे रे पासे श्राजिनवर तणा ॥ १ ॥ जिनवर तणा ते बिंब जाणुं। उपर सत्तावन्न ए। त्रेवीसमो जिनराज वंदुं। मोहिओ मुज मन्न रे। सातमो जिन पासाद बीजे। वंदीए ऊछट धरी। चालीस उपरे सात अधिकी सोहे तिहां वितमा भली ॥२॥ सोलसमो रे शांतिजिनेसर जगजयो, भसातवाडे देखी मुझ पन मुख थयो । पांसठ जिन रे तिम वली कलिकंड पासजी. जीराउल रे पूरे वंडित आसजी। आस पुरे गौतम स्वामी, लब्धिनो भंडार ए सगरकुइ पांत्रीस जिनवर, पार्श्वनाथ जुहारए। हबदपुरमां थूभ वदं जास महिमा अतिघणी, एकमना जे सेव सारे पूरे मनोरथ तेह तणो ॥ ३ ॥ वित्यारवाडे रे, प्रतिमा सोहे सात रे। मुलनायक रे, शांतिजिणंद विख्यात रे। जोगीवाडे रे, जागतो जिन त्रेवीसमी। अठावन रे, प्रतिपास्चं भिवअण नमो ॥ ४ ॥ नमो ऋषभ जिणंद बिजे, देहरे अति संदर ।

छत्रीस प्रतिमा तिहां वंदो, नमे जास पुरंदह ।
बसे छासठ १ मिल्लिजनवर, मिल्लिनाथपाडे मुदा ।
बावन जिन ने बावन प्रतिमा, वंदीए ते सर्वदा ॥ ५ ॥
लखीयारवाडे रे मोहनपास महिमा घणो
विंव त्रणसे रे एकोत्तर तिहां कण गणो ।
सीमंधर रे स्वामी प्रासाद बासठ जिना ।
विंव तेरसुं रे, संभव सेवो एकमना ॥ ६ ॥
एकमना सेवो सुमित जिनवर, साठ प्रतिमा सोहती ।
आठ उपरे न्यायसेठने पाडे, जनमन मोहती ॥ ७ ॥
चोखावटीए शांतिजिनवर, छेतालीस विंव अलंकर्या ।
दोहसो जिन सुंबलीए पाडे, रिषभजिन जग जय वर्या ॥८॥

।। ढाल ।। ४ ॥

अबजीमहेताने पाडे शीतलनाथ, मित्रपा सडतालीस। मित्रपा दोए शान्तिनाथ। कोसंबीय।पाडे शीतलबिंब अढार, श्रीपासजिणेसर बीजे देहरे जुहार॥

१ 'बासठ 'पवो पण पाठ छे.

जुहारीए जिनवरनी प्रतिमा छासठ मनने रंगे। सो प्रतिमा वायुदेवना पाडामां, धर्मजिणेसर संगे। चाचरीयामां पासजिणेसर, त्रणसे नव तिहां प्रतिमा। पारेख पदमा पोले बत्रीस जिन, फोफलीया नो पहीमा॥१॥ सोनारवाडे सुखदायक श्रीमहात्रीर, छेतालीस प्रतिमा पासे गुणगंभीर।

खेजडाने पाडे शांतिजिनेसर पासे ।
एकसो ने अडत्रीस प्रतिमा वंदुं उछासे ॥ २ ॥
उछासे वली फिलेफलीयामां, पास जिणेसर देखुं ।
एकत्रीस प्रतिमा पासे पेखी, पातिक सयल उवेखुं ॥ ३ ॥
संभवनाथने देहरे, दोयसत त्राणु प्रतिमा सोहे ।
शांति जिणेसर देहरे, एकसो त्रेपन जिन मन मोहे ॥ ४ ॥

#### ।। हाल ॥ ५॥

खजुरी मनमोहनपास, एकसो सतावन श्रीजिनपास । बांदुं मन उल्लास तो ॥ जये।० जयो० १॥ भाभो भाभामांहि बिराजे, चारसे एक प्रतिमा तिहां छाजे

१ 'बासठ' एवो पण पाठ छे. २. 'बासुदेवना' पाठां-तर) ३. पोषदद्ममीनो महिमा।'(पाठांतर). ४. 'फरी के यत्रो पण पाठ छे.

महिमा जगमें गाजतो ॥ जयो० जयो० २ ॥ लींबडीई श्रीशांति जिणंद, त्रणसे सात तिहां श्रीजिनचंद 🖡 दिटइ अति आणंद तो ॥ जयो० जयो० ३ ॥ करणे शीतलजिन जयकारी, प्रतिमा सत नवसो तिहां सारी। जनमन मोहनगारी तो ॥ जयो० जयो० ४ ॥ विंब सतरस्र शांति सोहावे, बीजे देहरे मुज मन भावे। दिसणयी दुख जाय तो ॥ जयो जयो० ५ ॥ देहरासर तिहां देहरा सरखं, पांत्रीस मितमा तिहां कण निरखं। देखी मुझ मन इरख्युं तो ॥ जयो० जयो० ६ ॥ संघवीपोले पास जगदिस, प्रतिमा एकसो ओगणत्रीस । पुरइ मनह जगीस तो ॥ जयो० जयो० ॥ ७ ॥ वीतलमे दोय विंव विसाल, प्रतिमा तेहनी अतिस्रकमाल । दीसे झाकझपाल तो ॥ जयो० जयो० ८॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥
भवि तुमे वंदो रे शंखेश्वर जिनराया ॥ प देशी ॥
खेतलवसही दोय मासादे, पास जिणेसर भेटचा ।
सांमला पासनी सुंदर मूरति, देखत सब दुःख मेटचा रे॥१॥
भवियां भावे जिनवर वंदो ।

१ ' एकत्रीस ' एवी पण पाठ छे.

श्रीजिनवरने वंदन करतां, होवे अति आणंदो रे ॥ भ०२॥ त्रणसे अठोत्तर जिनमतिमा, सामञ्जपासनी पासे । श्रीमहावीर पासे ब्यासी जिनवरसं,वंदो मन उल्लासे रे ॥५०३॥ देहरासर तिहां दोय अनोपम, रूप सोवनमय काम । सोवन रूप रयणमे पतिमा, दीसे अति अभिराम रै॥भ० ४॥ अजुवसा पाडामां प्रतिमा, सत्तोतर सुखदाइ। पीतलमे श्रीविमलजिणेसर, वंदो मन लय लाइ रे ॥भ० ५॥ दोसीकुंपाना पाडामांही, ऋषभ जिणेसर सोहे। स्रुखदायक जिन सोछ हे सुग्रुणनर, देखी जन माहे रे॥भ०६॥ वसावाडे दोय शत अठावीस, शांतिजिणेसर सामी। ओगणीस जिनसुं १ दोसीवाडे,ऋषभ नमुं सिर नामी रे ॥७॥ आंबाद्रोसीना पाडामांही, ग्रुनिसुत्रत जिन सोल । ·पंचहटीए एकसोने त्रेवीस<sup>२</sup>,ऋषभजिणंद रंगरोल रे॥भ०८ घीयापाडामां दोय देहरां, श्लांतिनाथ पार्श्वनाथ। ष्कसो त्रेत्रीस तेर प्रतिया, ग्रुगतिपुरीनो साथ ॥ भ० ९ ॥ एकसो छन्तु रिषभजिणंदस्त्रं, प्रतिमा कटकीये वंदी । धोलीपरवमां ऋषभ ग्रुनिसुत्रत छेतालीस चिर नंदी रे।भ०१०

**१** 'नेउ जिनसु' ए पण पाठ छे. २. 'बीस' पवो पण पाठ छे.

## ॥ हाल ॥ ७ ॥

अविनाशीनी सेजडीए रंग लाग्यो रे० ए देशी॥

पारिखजगुना पाडामांहि, टांकलो पास विराजे जी। मतिमा चोत्रीस चतुर तुम वंदो, दालिद्र दुखने भाजे जी। महिमा जगमांहि गाजे जी ॥१॥ किया वोहराना पाडामां,श्रीतल प्रतिमा तीमपंचवीस जी 🛭 क्षेत्रपालना पाडामांही, शीतलनाथ नम्रु निसदीस जी ॥२॥ जिहां जिनवर छे बसे एकाणु, तिहांथी को के जइए जी। त्रणसे नेउ प्रतिमास्र कोको, पारसनाथ आराधुं जी ॥३॥ अभिनंदन देहरे च्यार प्रतिमा,दोय प्रासाद तिहां वांद्या जी। ढंहेर सामल कलिकुंड पासजी । नमतां पाप निकंदा जी।।४॥ एकसो ज्यासी प्रतिमा रूडी, ज्यासी जिन वर्धमान जी। महेताने पाडे मुनिसुब्रत, सित्तेर जिन परधान जी ॥ ५ ॥ बसे चोराणु बिंब सहित, श्रीशांतिनाथ शासाद जी। वखारतणा पाडामां वंदु, मुकी मन विखवाद जी ॥ ६॥ दोसत सित्तरि जिनमतिमा, वांदी में अभिराम जी।। गोदडपाडे रिषभने देहरे, छन्तु त्रिंब इण ठाम जी ॥ ७ ॥

।। हाल ॥ ८॥

हवे शक्र सुघोषा बजावे ॥ ए देशी ॥ सालिवाडे त्रीसेरीयामांही, नेमि मिल ऋषभ नम्रुं त्यांही ।

नवपह्नव नम्रं उछांही, जिणेसर ताहरा गुण गाउं ॥ जिम मनवंछित सख पाउं ॥ जि० १ ॥ साठ उपर सत तिम चार । बीजे देहरे श्रीशांति जुहार । र्बिष ओगणसाठ उदार ॥ जि० २॥ कलारवाडे देहरां दोय, शांति विंव एकावन होय। बावन जिनालय जाय ॥ जि॰ ३॥ पीतलमय बिंब सोहावे, विमलनाथ भविक मन भावे। घउ उत्तर चतुरा जिनगुण गावे ॥ जि० ४ ॥ तिण एकसो चोपन जिनराया, ऋषभदेवना प्रणमुं पाया। दणायवाडे शिवसुखदाया ॥ जि॰ ॥ ५ ॥ धंधोलीए संभवजिन साचो, वंदि त्रेपन जिन मनमांहि माचो। तूंही जिन जगमांहि साचो ॥ ६ ॥ गोलवाडे श्रीमहावीर, सोवन वान जास शरीर। सात प्रतिमा गुण गंभीर ॥ ७ ॥ जि॰ ॥ दोय शत दस प्रतिमा पास, श्रीश्वतफणो जिनपास । पूरे मन केरी आश ।। जि० ८॥ स्वारीवावे श्रीजिनवर्धमान, तेर प्रतिमा गुणइ निधान। जिननामे कोड कल्याण ॥ जि० ॥ ९ ॥ तिहांथी श्रीपंचासरो पास, वंद्या मन धरी अधिक उल्लास ।

पोहती मन केरी आस ॥ जि०॥ १०॥ कीधी चैत्यप्रवाडी में सार, मनमांहि धरी हर्ष अपार ॥ जिन नमतां जयजयकार, जि०॥ ११॥

॥ हाल ॥ ९ ॥

जिनजी घन घन दिन मुज आजनो।।
वांद्या श्रीजिनराज हो जिनजी,
काज संया सिव माहरां, पाम्युं अविचल राज हो।।जि०१॥
जिनजी पंचाणुनइ माजने, श्रीजिनवर प्रासाद हो।
जिनजी भाव घरी भिव वंदीए, मुकी मन विखवाद हो॥जि०२॥
जिनजी विंवतणी संख्या सुणो, माजने तेर हजार हो।
जिनजी पांचसे त्रहोतर वंदीए, सुखसंपत्ति दातार हो।।जि०३॥
देहरासर श्रवणे सुण्यां, पंचसयां सुखकार हो।
जिनजी तिहां प्रतिमा रलीयामणी,माजने तेर हजार हो।।जि०४॥
संवत सतर ओगणत्रीसे, पाटण कीघ चोमास हो।
जिनजी वाचक सौभाग्यविजयगुरु, संघनी पोहती आस
हो।। जि० ५॥

जिनजी साहव सुआ-सुत सुंदरु । सा रामजी सुविचार हो । जिनजी सुधो समिकत जेहनो । विनयवंत दातार हो । जि० ॥ ६ ॥

१ 'वरू' इति पाठान्तर. २ 'साहाज्ये पाठान्तर

जिनजी घरमधुरंघर व्रतधारी, परगटमल पारवाड हो । जिनजी तेह तुणे उद्यमे करी, कीधी में चत्यप्रवाड हो।। जि०॥ ७॥ जिनजी तव तीरथमाल घणी, कीथी में अति चंग हो । जिनजी साह रामजीना आग्रहे, मन धरि अति उछरंग हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ जिनजी तवन तीरथमालातणुं, भगे सुणे वली जेह हो। जिनजी यात्रातणुं फळ ते लहें, वाधे धरमसनेह हो ॥ जिलाश जिनजी श्रीविजयदेवसूरीसना, पाट प्रभाकर सुर हो। जिनजो श्रीविजयप्रभसूरि जग जयो। दिन दिन चढते नूर हो ॥ जिनजी धन० ॥ १० ॥ जिनजी श्रीविजयदेवसूरींदना, साधुविजय बुध सीस हो जिनजी सेवक हरषविजयतणी, पूरो मनह जगीस हो ॥११॥ 🗎 कलठा 🗎

इम तीरथमाला गुणविसाला, प्रवर पाटण पुर तणी। में भगति आणी लाभ जाणी, थुणी यात्राफल तणी॥ तपगच्छनायक सौख्यदायक, विजयदेवसूरीसरो। साधुविजय पंडित चरणसेवक, हर्षविजय मंगल करो॥१॥

# पं. होरालालनिर्मिता

# श्रीपत्तनजिनालयस्तुतिः । रचना विक्रमसंवत् १९५९

न्त्वाऽऽदिदेवं रुषभध्वजं च, कल्याणवल्लीपवरांबुवाहम्। इर्वे स्तुति सर्वजिनालयानां, मुक्तिपदां पट्टनपूः स्थितानाम्॥१।। पाडे मार्फितियाहे मुनिसुत्रतियुं भूमिनायैः सुसेव्यं, वंदे दंदारकेंद्रैः स्तुतमवनित ले मोक्षदानैकदक्षम । वामेयं पाश्वनाथं शटकमठगजागर्वभेदैकसिंहं, नाम्ना श्रीभीडभंजं मुनिगणमहितं तीर्थनार्थं नमामि ॥ २ ॥ वंदे ढंढेरवाडे जगति जनगणे श्रेयसामर्पणोत्कं. पार्श्व श्रीकंकणाई प्रकटमहमथ श्रेयसे ज्ञातपुत्रम् । एवं पार्श्व च नौमि त्रिदश्वपतिगणैः सेवितं शामलाहं, र्बिवं यस्यास्ति तुंग भविकजनगुणाल्हाददं भावभक्त्या ॥३॥ वयं नमामो पडिगुंदीपाडे, श्रीशीतलं तीर्थकरं सुभक्त्या । सुरासुरें द्वैः परिसेन्यमानं, मोक्षश्रियः केलिविलासगेहम् ॥४॥ संसाराग्निपतापप्रमयनसब्छं ज्ञीतलं ज्ञीतलाख्यं,• मोक्षार्थ मोक्षमार्गमदमहमधुना तीर्थनाथं नमानि । भक्त्या प्रासादसंस्थं सुरवरमहितं क्षेत्रपालाख्यपोले, भव्यानंदमदानमवणमथ सदा सर्वछोकैकबंधुम् ॥ ५ ॥ कोकापाडे नमामि श्रुतबलकलितैभैव्यलोकै: सुसेव्यं,

कोकापार्श्वाभिधानं सकलसुरगणैः सेव्यमानक्रमाञ्जम् । मीढं तीर्थाधिराजं भवजलतरणे यानपात्रं गुणाद्यं, भक्त्या वंदेऽभिनंदं जिनपतिमिखलपाणिसोरूयैकलक्षम् ॥६॥ नमामि कोटापुरवासिधर्मशालास्थितं रथंभनपार्श्वनाथम् । इयामच्छविं मेघमिवात्र भव्यकलापिनां मानसमोददं च ॥७॥ वंदे पंचासरं वे सुमितिजिनपतिं ज्ञातपुत्रं च गोडी-पार्श्वं चितामणि चाजितजिनपतिमत्राहमौचित्ययुक्तः । नीमि श्रीधर्मनाथं वरतरनवलक्षाभिधानं च पार्श्व, चातुर्मुख्या स्थितं चामरनरिकरैः सेव्यमानं जिनेंद्रम् ॥८॥ श्रीहीरसरेर्जयदेवसूरे:, श्रीसेनसूरेः शीलगुणसूरेः । नमामि बिंबानि गतानि तत्र, ससारवारांनि।धनौनिभानि ॥९॥६ अष्टापदारूयेऽथ जिनालुयेऽहै, सुपार्श्वनाथं प्रणमामि भवत्या । चंद्रप्रभं चंद्रनिभं जनानां, मनोगतानंदस्रवार्धिटृद्धौ ॥ १० ॥ खडाकोटीपाडे विमलमतितोऽहं जिनपतिं, स्त्वे शांति शांतिप्रदमवनिगानां तनुभूताम् । तथैवं वंदेऽहं प्रथमजिननाथं तमभितो, द्विपंचाशुङ्जैनाळयकिलजैनायतनगम् ॥११॥ नारंगाभिधपार्श्वनाथमवनौ नौमि प्रमोद्प्रदं, झव्हेरीत्यभिधानवाडगमहं श्रीवासुपूज्यं तथा । नाभेयं च नमामि सर्वजनतासंसारतापापहं, शांति शांतिकरं तथैव जिनपं, श्रीवाडिपार्श्वाभिधम् ॥ १२॥

वावाडे पणपापि भक्तिभरतो रक्तं च मुक्तिस्त्रियां, श्रीनाभेयममेयकीतिकलितं संसारसंतारकम्। मारी येन निवारिता जिनपति तं नौमि मुक्त्याः पतिं. श्रीशांतिं जगतां जनोपकरणपावीण्यबद्धस्पृहम् ॥ १३ ॥ भक्त्यान्वितासु जनतासु नतासु तासु, कारुण्यभावकलितं कलितं सुबोधैः । शावाडगं जिनपतिं प्रणमामि भक्त्या. बोधैकदानविबुधं विबुधोपसेव्यम् ॥ १४ ॥ जिनं सुपार्श्वनाथं च, पार्श्वे तु शामलाह्वयम् । भव्याब्नप्रकरे लोके, बांधवं लोकबांधवम् ॥ १५ ॥ वंदे शांतिं जिनपतिमथी शस्तभेंसातवाडे, भवत्या युक्तः कविशिशुरहं शांतिनाथं सनाथम्। नाथेन श्रीवरगणभृतां चात्र चंद्रप्रभेण, प्रासादे वे सुरनरगणैः सेवितं गौतमीये ॥ १६ ॥ श्रीशांतिनाथं नरनाथसेव्यं, सनाथतां पाणिगणे भजंतप् । स्थितं च वंदे तरभेडवाडे, संसाररोगन्यथनैकवैद्यम् ॥१७॥ वंदे जिनं श्रीपतिमादिदेवं, भक्त्या युतः खेजडपाडसंस्थम् । यस्योपरि प्राज्यतरातपत्रं,रौष्यं च मुक्त्यस्तकटाक्षतुल्यम् ।१८। कर्पूरमेताभिधशस्यपाडे, स्तुवे जिनेशं रुषभध्वजं च । कर्मोप्रिदाहैकजलाभिषेकं, कषायरक्षेषु द्वाग्नितुल्यम् ॥१९॥ तंबोलिवाडे प्रभ्रमानमामि, श्रीवर्द्धमानं च सुपार्श्वनाथम् ।

कुंभारपाडे प्रभुगादिदेवं, पार्श्व भटेवाभिधमाप्तमुख्यम् ॥२०॥ श्चांतिं नौमीह भक्त्या जिनपतिममलं डंकमेताहृपाडे. कर्मारिध्वंसवीरं सकलजनहितं टांकलापार्श्वनाथम् । श्रीवीरं वै जिनेशं पथमजिनपति चात्र मण्यातिपाडे, कूटं नाम्ना सहस्रं वरतरनगरश्रेष्ठिसंनिर्मितं च ॥ २१ ॥ कर्मारामप्रहारप्रवरगजपति मोक्षरामाभिलाषं, संसारापारवारांनिधिगलनविधौ कुंभजातं जिनेशम् । उच्चैः पोले नमामि त्रिद्श्वगणनतं स्वर्णकारस्य पाडे, श्रीवीरं श्रांतिनाथं स्तुतमवनितले नाकिनाथैश्र वन्द्यम् ॥२२॥ शांतीशं चाद्यरीथ्यां जनगणभृतफोफलियाहे हि बाडे, वीथ्यां वै चोधरीणां यदुकुलतिलकं नेमिनाथं नमामि। पार्श्व मनमोहनाख्यं तद्भियवर्वीथ्यां गतं शंखपाश्व, वीथीर्गं संभवं वखतजित इतः सुत्रतस्वाभिनं च ॥ २३ ॥ श्रीयोगीवाडेऽद्भुतकांतिमूर्त्ति,नमामि वै श्यामळपार्श्वनाथम्। श्रीम**ङ्घीपाडे किल म**िहनाथं कषायमरुळं प्रतिमञ्जनाथम् ॥२४॥ नमामि भक्त्या लखीआरवाडे, पार्श्वे जिनेंद्रं मनमोहनारूयम् । जिनाधिराजं मुनिसुत्रतं च, सीमंधरस्वामिनमाप्तमुख्यम्॥२५॥ तमजितमभिवंदे केसुनामेभ्यपाडे,मथमजिनपतिं वे चोखवट्टीयपाडे सुरगणनतपादं शांतिनाथं जिनेंद्रं,जिनमतकजसूर्ये धर्मनाथं च नौिय सुमतिजिनपमीडे पाठशालाख्यपाडे.

<sup>-</sup>वृषभविश्वमपीह स्वर्णवर्णाड्यदेहम् । स्थितमभिनतलोकं पाटके बल्लियाले, भविककगलबोधे लोकबंधुं जिनेश्वम् ॥ २७ ॥ सद्भक्त्या पणमामि शीतलमहं पाडेऽब्जिमेताभिन्ने, तोर्थेशं च कसुंबियागमभितो वंदे सदा श्रीतलम् । गोडीपार्श्वमथो नमामि किल संघेशारूपपाडे स्थिती, मन्मोहाभिधपार्श्वनाथ-विमली नैर्मल्यदानक्षमी ॥ २४ ॥ भक्त्याहं वासुपूज्यं जितमदनमथो वासुपूज्याख्यवीध्यां, खर्जूरीपाटके चामरगणमहितं मोहनं पश्चिनाथम् । भाभाषाडे नमामि त्रिजगद्धिपति पूज्यभाभारव्यपार्श्व, भ्रांतं श्रीशांतिनाथं श्रमसुखसहितं लोंबडीपाटके च ॥ २९ ॥ मासादे निर्जरेशालयनिभक्तलकांतौ कनाशाहु गाडे, नानाचित्रैर्विचित्रैर्द्धतजनहृद्ये कल्पसींद्र्यकल्पे । तीर्थेशं शांतिनाथं स्फटिकमणिमयं दिव्यकांत्या सनाथं, वंदे श्रीशीतलाख्यं त्वहमहमिकयाहं जिनं देवसेव्यम् ॥३०॥ तत्रैवाहमथ प्रणौमि जिनपं श्रीशांतिनाथामिधं, **प्रौढे जैननिकेतने स्थितमरं देवेशसंपूजितम्** । पार्श्वे तस्य नमामि नाभितनयं संसारसंतारकं, श्रीवीरं च नपापि भक्तिभरतः कर्माविधाराधरम् ॥ ३१ ॥ नाम्ना श्रीशांतिनाथं सम्रद्रमश्यो बामणारूये हि वाडे,

तीर्थेशं पौढभक्त्या सकलसुरनराधीशसेव्यं जिनेन्द्रम् । कर्मारामायितुल्यं जितमदनमरं सर्वलोकैकवंधं, संसारापारवारांनिधिगतजनतातारणे यानवात्रम् ॥ ३२ ॥ भक्तयाहं क्षेत्रवस्यां जिनपतिमभितः श्रीमहादेवपार्श्व, शांतिं संघेशचैत्यं पथमजिनवरं शामलाख्यं च पार्श्वम् । संसारांभोधियानं त्वजिवजिनपति नौमि योगींद्रनाथं, क्रोधादिभौदवैरिमकरविदलने शूरवीरावतंसम् ॥ ३३ ॥ नौमीह शांतिं त्वदुवस्सिपाडे, नाभेय-शांती च वसाख्यवाडे। पंचोटीपाडे जिनमादिदेवं, वागोलपाडे रूपभं जिनं च ॥३४॥ कंबोइपार्व किल घीयपाडे, शांतिं च तत्रेत्र जिनं नशामि। आदीश्वरं वै कटकीयपाडे, मोक्षपदं मोक्षगतं जिनेशम् ॥३५॥ महालक्ष्मीपाडे मुनिसुत्रततीर्थेश्वमधुना, तथा कोटावासिमवरधनिकागारमिलितम् । जिन शांति वंदे सकलपुरसंघातमहितं, तथैवं वामेयं शठकपठसंतापहरणम् ॥ ३६ ॥ आदीश्वरं गोदडपाटकेऽहं, गणाधिनाथं किल पुंडरीकप । भक्तया नमामीह च नेमिनाथं, चतुर्भुलं तीर्थकरेंद्रविवम् ॥३७॥ वक्षारपाडे प्रभुशांतिनाथं, चंद्रपभं तीर्थकरं नपापि । दृष्ट्वा प्रभां तज्जिनमंदिरस्य,चित्रं जनौयोऽनिमिष्व्यमाप।।३८॥ वंदे श्रीनेभिनाथं यदुकुछतिलकं सांति -धर्मों च मर्लि,

वाहेऽहं शास्त्रवीनां जिनपतिवरशांतिं च कल्लारवाहे। वाडे नारायणे वै प्रथमजिनपति धांधले संभवं च, गोलावाडे च पार्श्व सुरनरमहितं चंपकाख्यं च पार्श्वम् ॥३९॥ आदीश्वरं च किल टांगडिचाख्यवाडे. शांतिं नमामि विदिताखिङ्लोक्बोधम्। वंदे सहस्रफणिमंडितपार्श्वनाथं,संसारतापपरिखेदसुवारिवाहम ४० श्रांतिं च चारुगिरिनारपटं नमामि, शत्रुंजयस्य पटमत्र सहस्रकूटं। विम्बं चतुर्भुखिजनस्य गिरिं च मेरुं,रत्नेषु धर्ममितपाद्गणं गणिनाम् एवं नमंति जगतीह च ये मनुष्या,जैनालयांश्र वरपट्टन हैस्थितांश्र नानागृहस्थगृहगांश्व तथा हानेकान जैनाळयानिह हि ते किल मुक्तिभाज: ॥ ४२ ॥ **भौढं भवर्तकपटं परितो गतानां,** प्राप्याशु कांतिविजयाख्यंमहाम्र्नीनाम् । आनंदसुरिपरिवारकजार्कभानामादेशमत्र किल हंससुतेन भव्यम्।। जिनेशानामेवं स्तुतिरिह मया पट्टनपुरे, गतानां चैत्येषु स्वहितकृतये संविरचिता। हिरालालाद्वेन ग्रह-विशिख-निध्यब्जमिलिते, शुभे वर्षे शस्ये सपदि वसता जामनगरै ॥ ४४ ॥ [ इति श्रीपत्तमजिनास्य-स्तुति: ]

# ॥ तीर्थराज चैत्यपरिपाटी स्तवनं ॥

कर्ता साधुचंद्र मुनिः

प्रणमिय रिसद जिलंद पुंडरिक गणहर सहिय॥ विरचिसु चेत्र प्रवाडि, संघह सरसी जिम विहिय ॥ १ ॥ भास

पहिलंड विक्रमपुर नयर, जिह तिरि नाभि मल्हार ॥ बीजइ जिणहरि वंदियइ ए, तिल्लासुय सुविचार ॥२॥ सिरि ऊपशाह मंडणउ ए, सामिय वोर जिणंदा ॥ तिमरियपुरवर सुहकरण, पासनाह जगि चंद ॥ ३ ॥

### भास

जोधनयर सिरि कुंथुनाथ, विहिचेइय मंडण ॥ पास संति वे वंदिया ए, दुइदाह विहंडण ॥ ४ ॥ गृहानयर सिरि कुंथुदेव, भवतलनि ६ तारण ॥ बीजइ जिणहरि पूजीयइ प, सीतल सुहकारग ॥ ५ ॥

# वस्त्र

पास जिणवर पास जिलवरि, नयरि जालउरि, आदीसर पहु भेटियए, सयल सुख संपत्ति कारण; अचिरानंदण संति जिण, भविय लोह दुइनावचंदग। हरिकुल अंबर सहसकर, साभिय नेमिकुमार, बीर जिणेसर भवणगुर, तिहुयण तारणहार ॥६॥

### भास

शाणापुर सिरि वद्धमाण, निभइ भयवारण। मुणिसुव्वय पहु पूजीयइ ए, गइनि ज्जियवारण ॥ ७ ॥ नाराद्रइ सिरि वीरनाह, भवतिमिर दिणेसर। ओडापुर मुखमंडणउप, सिरि वीर जिणेसर ॥ ८ ॥

सीरोही सुरपुर अवतार, गढमढ मंदिर पोलि पगार । कणयकलस धजदंड विसाल, दीसइ देउल नयण रसाल ॥९॥ खरतरवसहिं संतिजिणंद. भविय-कमल पडिबोहदिणंद। त्रिहु चेइ सिरि आदिजिणंद,अजियनाह किरि पुनिमचंद॥१०॥

### भास

नाभिराय-घरि सोहल्ड ए, सामिय रिसह जिणंद्। मंकोडइ थिरथी रहाउ ए, तिहुयण नयणाणंद ॥ ११ ॥ मंडवाडि पहु पास्तिण, कज्जल कोमळ काय। नीतोडइ सिरिआदिपहो, सुरनर वंदिय पाय ॥ १२ ॥ पोसीनइं तिरि पढमजिण, बिहुं चेइ सिरि संति । पास वीर रंगि पूजीयइ ए, टालइ निज मनि भ्रंति ॥१३॥ मटोडर महिमानिलउ ए, सोहन सुंदर पास । महाबीरपहु आगियइ प, तोडइ भवदुह पास ॥ १४॥ नयर वडाली संतिजिण तिहुयण पणियय सामि। इंडर नयरइ दुन्नि जिण, रिसह पास सिवगांमि ॥१५॥ चंद्रपहपह भेटियइ प् ओडा नयर मझारे। अद्र कम्म अरि निज्ञणीय, जो पहु गउ भवपारे ॥१६॥

# वस्त

वडहनरइ वडहनरइ आदि पहु वीर, जीवतसामिय लेपमप, कणयवन्न पादुका रयण, वालउ वेउल मालतिय, पमुद्द फुलतोडर रपवि। कुंक्रम चंदन मद निवय, पूज रचावउ भंगि। भावन भावउ विवहपरि, जगगुरु आगलि रंगि ॥ १७ ॥ वीसलनयरई आदि वीर, मणदंछिय सुरवर। महिसाणे पहु पास संति, सिरि आदि सुमतिवर ॥१८॥ जोटाणइ पहु पासनाह, सिरि सुमति जिणेसर। संआलइ सिरि नेमिदेव, भवभय वणकुंजर ॥ १९॥ वीरमगामइ सुमति संति, जांबू मुनिसुवत। टोटरगामइ पासनाह, बहु स्रोयां सम्मत ॥ २० ॥ भोइकद् सिरिआदिनाह, रंगपुरि पहु पासो। धंधुकइ सिरिपंच संति, वंद् उविल पासो ॥ २१ ॥

# वस्त

बल्लहनयरि वल्लहनयरि संति जिणराउ, चम्मारिपुरि संतिजिण, भवियलोअ लोयण निसायर, पालिअताणइ पासपहो, विद्यि सेव सुर असुर किन्नर ॥ ललियसरोवर हरसभिर, सामिय बीर नमेश। अंग पखार्लि विमल जलि, पावपंक टालेसी ॥ ६२ ॥ गहगहंत दिव गिरि चडिय, पाजइ परमाणंद्।। दह दिसि पसरिय विवद्द परे, सिंदवार मचकुंद ॥२३॥ कोइल करइ टहुकडा ए, विद्वसिय सुद्व वणराय।

परवर परबर् लर्सियप, सीतल वायर वाय ॥ २४ ॥ मरुदेवा गइवर चडिय, अचिरानंदण संति। छीपकवसहिय दंदियइ ए, अदबुद सोवन कंति ॥ २५॥ अनुपम सरवर पेखियइ प, सरगारोहिणि चंग। वाधिणि निरखी बारणइ ए, रोमंचिय मह अंगि ॥ २६॥

वस्त

आदि जिणवर आदि जिणवर नमिय बहु भत्ति, देवासूर संयुणिय कुमयमोहमहिमा त्रिहंडण: खरतरवसहिय पढर्माजण, नेमिनाह गिरनार मंडण। रायणतिल हिव पुजियइ, सामिआदिल-पाइ, नाग मोर वे ध्याइयइ, जे हूआ सुरकाइ ॥ २७ ॥ इणिपरि यात्रा विमलगिरे, कीधी मन उल्हासि। कवडजक्ष-सुपसाउलइ ए, टलइ विधन दृह रासि ॥ ८॥ पाटण पहनद् वरनयर, जिह विससेण मल्हार। अवर विव बहु वंदियइ ए, तिढां न लाभइ पार ॥ २१ ॥ सिरि संभवपहु वाविपुरे, स्रोद्राहइ सिरिसंति; फीदीवनयर सिरिवीरजिण, जसु पसाइ सुह संति ॥३०॥ तेत्रीस वच्छर विगयमच्छर ठामि ठामि जिणेसरा। निय भाव सत्तिहि विविह भत्तिइ भविय कमल दिणेसरा। बहु संघ साथइ देवराजइ वच्छराजि नमंसिया। ते देव सुहभर जावहू थिर श्रीसाधुचंद्रि प्रसंसिया ॥३६॥ ॥ इति तीर्थराज वैत्यपरिपाटी स्तवनं ॥

# ॥ नवकार वाली पद् ॥राग भीम पलास.

भला करे फीर मुर्शदमौला, अल्ला पंढरपुरवाला—ए चाल. भला होयगा भजले माला, टल्ला भवखानेवाला—ए आंकणी नही लगती कुछ दमडी कवडी, रटनेमें प्रभु गुण ठाला, माला बनाले गुणको गाले, छोड कर दुनिया चाला ॥ भला०॥१॥

स्त प्रमुखकी गुंथ के माला, आँकार जप ले लाला; आँकारमें पंच परमेष्टी, हे माला गुणने वाला ॥ मला० ॥२॥ अष्टोत्तर श्वत हे गुण इनके, उतने मणके कर व्हाला, इंस कहत है सुण बे प्यारा, घटमें घर लेगुणमाला॥भला०३॥

॥ कार्तिक पुनम महिमा गर्भित श्री सिद्धाचल-स्तवन ॥

अवमोहे डांगरियां हे जिनंदजी, ए देशी. सिद्ध गिरि शणगार, सुगुणनर सिद्धगिरि श्रणगार; दशकोटी अणगार, सु०॥ ए आंकणी ॥ ऋषभदेवना पुत्र पनोता, द्रविड नाम भ्रुपाल. सु० जेना नामथी द्रविड देश छे,हालमां करलो ख्याल. सु०सि०॥१॥ मुख्य राजधानी छे तेहनी, मिथिला अति मनोहार. सु०

तेहना राजा प्रपुत्र प्रभुना,द्राविडजी सुखकार. सु०॥सि०॥२॥ वारीखील्य लघु बांधर तेहना, लाख गाम सिरदार. सु० राज्य ऋद्धि छोडी बन्ने भाइ, उतरवा भवपार. स्रु०॥सि०॥३॥ चारण मुनिवरनी शिक्षाथी, लेड दीक्षा तत्काळ. अणसण कर्युं एक मासनुं सुंदर, छोडी सकल जंजाल. सु०सि०४ श्ररदपुनमथी कार्तक सुदनी, पूनम सुधीनुं सार आत्मध्यान धरी मोक्ष सधाया,दश्च कोटी म्रुनि लार. सु०सि०५॥ ते कारण कार्तक पुनमनो, महिमा अपरंपार. महितलमां विस्तरीयो छे बहु,मेलो भरे नरनार. सु०सि०॥६॥ वली कार्तकी अहाइ परवरुप, देरी उपर जुवो धार. सु० पूनमनो दिन कलग्न स्वरुपे, सोभे मंगलकार. सुन।सिन।।।।। ते दिन दादा दृषभ देवनी, यात्रा करीने उदार. द्राविडने वारिखील्य मुनिनी, प्रतिमा पूजो श्रीकार सु०सि०॥८॥ श्रृतंजय महातममां सुंदर, ए वृतांत रसाल. सुरिधनेश्वरनुं फरमाव्युं, वांचो थइ उजमाल्न. सु०॥सि०॥९॥ तेह धनेश्वर सूरीश्वरनी, मूर्त्ति स्थापन कार. सु० इंस कहे ते मूर्त्ति पूजो, सिद्धगिरि पर सार. सुन।।सिन।।१०॥ आदि जिन मंडल पूर्णी विथिए, पूर्ण करवा संसार. सु० प्रति पूनम दिन पूजा भणावे,जिनश्चवने जयकार- सु०सि०११॥

# पारणमां वर्तमान जिनमन्दिरो.

देरासर पोळ		मूछनायकजी		
*	अष्टापदजीनी धर्मशाळा	चंद्रप्रभु, अष्टापदजी, सुपार्श्वनाथ आदीश्वर, पांचमेरु		
<b>ર</b>	बडा खोटडी	ऋषभदेव, शांतिनाथ		
₹	टांगडीआचाडो	आदीश्वर, पद्मप्रभु, गणधर-		
		पगलां, सिद्धाचलजी, सहस्र-		
		कूट,चोमुखजी शांतिनाथ, मे <b>रु,</b> शिखरजी		
₹	झवेरीवाडो	नारंगापार्श्वनाथ, आदीश्वर, पा-		
		र्श्वनाथ, वासुपूज्यजी, वाडीपा-		
		श् <del>व</del> नाथ		
<b>ર</b>	शाहपाडो	आदीश्वर, द्यांतिनाथ		
ર	शाहवाडो	सुपार्श्वनाथ, ज्ञामळा पार्श्वनाथ		
Ź	भेंसातपाडो	शांतिनाथ, चंद्रप्रभु, गौतमस्वामी		
8	तरभेढावाडो	शांतिनाथ		
१	स्रीजडानो पाडो	आदीश्वर		
Ą	कपूरमहेतानो पाडो	आदीश्वर		
<b>ર</b>	तंबोळीवाडो	महावीरस्वामी, सुपार्श्वनाथ		
<b>ર</b>	<b>कुंभारीआ</b> पाडो	ऋषभदेव, भटेवा पार्श्वनाथ		
ર	डंकमहेतानो पाडो	टांकलापाञ्चेनाथ, शांतिनाथ		
3	मणीआती पाडो	महावीरस्वामी,आदीश्वर,सहस्रकृट		
<b>ર</b>	सोनीवाडो	महाबीरस्वामी, शांतिनाथ		

દ્	फोफळीआ वाडो	क्षीतिनाथ, संखेश्वरकी, मन- मोहनजीपार्श्वनाथ,संभवनाथ, मुनिसुत्रतस्वामी, नेमीनाथ
Ę	जोगीवाडो	शामळा पार्श्वनाथ
ę	मलातनो पाडो	महीनाथ
ą	<b>ल्खीआरवाडो</b>	सीमंधरस्वाभी, मुनिसुव्रतस्वामी मनमोहन पार्श्वनाथ
१	निज्ञाळ पाडो	सुमतिनाथ
Ę	केसुरोठनोपाडो	ु अजितन।थ
3	चोसावटीआनो पाडो	आदोश्वर, धर्मनाथ, ज्ञांतिनाथ
į	बळीआ पाडो	आदीश्वर
8	अवजीमेतानो पाडो	शीतलनाथ
5	<b>क</b> सुंबीआवाडो	शीतल्लनाथ, गोडीपार्श्वनाथ
ą	संघवीनो पाडो	विमलनाथ, मनमोहनपार्श्वनाथ
ş	वासुपूज्यजीनी खडकी	वासुपूज्यस्वामी
१	<b>बजुरीपाडो</b>	मनमोहनपार्श्वनाथ
१	भाभानी पाडो	भाभाषाश्वनाथ
१	लीं <b>वडीपा</b> डो	ञ्चांतिनाथ
8	द.णः <b>सा</b> नी पाडी	द्योतलनाथ, द्यांतिनाथ
8	बामणवाडो	द्यांतिनाथ
<b>44</b>	खेतरवसी	शांतिनाथ, विमलनाथ, आदी- श्वर, अजितनाथ, शामला पार्श्वनाथ

# १२१

8	अदुवसानो पाडो	द्यांतिनाथ
ર	वसावाडो	द्यांतिनाथ, आदिनाथ
Ŗ	पंचोटीपाडो	ऋषभदे <b>य</b>
	वागोळवाडो	ऋषभदेव
ર	घीआ पाडी	शांतिनाथ कंबोइ पार्श्वनाथ
१	कटकीआवाडो	आदिनाथ
8	तरदोरीओ	शांतिनाथ,ने मिनाथ,पार्श्वनाथ,
	,	महावोरस्वामी,
१	कलारवाडो	<b>ज्ञां</b> तिनाथ
Ŗ	धांधल	संभवनाथ
१	नारणजीनो पाडो	ऋषभदेव
૨	शालीवाडो गोलवाह	गोडीपार्श्वनाथ,वाडीपार्श्वनाथ
२	महालक्ष्मीनो पाडो	मुनिसुत्रतस्वामी, सुमतिनाथ
8	गोदडनो पाडो	आदीश्वर, चंद्रप्रभु, नेनिनाथ
		चोमुखजी,
ર	वखारनो पाडो	चंद्रप्रभु, शांतिनाथ
ર	मारफतीआ मेतानो पाडो	मुनिसुत्रतस्वामो, भीडमंजन-
	•	पाञ्चनाथ
३	ढंढेरवाडो	कलिकुंड पार्श्वनाथ, शामळा,
		पार्श्वनाथ, महावीरस्वामी
१	पडी <b>गुंदी</b>	<b>द्यीत</b> लनाथ
१	खेतरपाळनो पाडा	शीतस्रनाथ
<b>ર</b>	कोकानो पाडो	कोकापार्श्वनाथ, अभिनंदन-
		स्वामी,

१ कोटावाळानी धर्मशाळा १ पंचासरो स्तंभन पार्श्वनाथ पंचासरा पार्श्वनाथ, नवसंडा-पार्श्वनाथ, धर्मनाथ, महावीर-स्वामी, बे सुपार्श्वनाथ, चि-तामणिजी, अजितनाथ, शों-तिनाथ, चोमुखजी, गोडीपा-र्श्वनाथ, सुमतिनाथ, श्री हे-मचंद्राचार्थजी, विजयदानस्-रीजी, विजयहीरस्र्रीजी, वि-जयसेनस्र्रीजी विगेरे पूर्वा-चार्योनी मृत्तिओ

१०० मोटां देरासर घर देरासर जुदां.



# <sup>१२३</sup> शुद्धिपत्रक.

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद
8	9	पैकोना	पैकीनो
8	<b>१</b> ३	आछो	ओछो
થ્ય	8	ता	तो
77	9	वैत्र-	वैत्र-
१०	6	७ सात	८ आठ
१२	२०	मलाधरी	मलघारी
१७	१९	घखतथी	वखतथी
२१	१२	जन	जैन
ર્૪	१९	चैत्योनी	चैत्यो <b>नां</b>
55	२२	९+९८	९५९८
<b>કર્</b>	१५	षाडे	पाडे
४४	6	=	=३५२
४५	Ģ	६ ठा	६ ठी
86	१२	मालावाडे	मालीवाडे
40	Ģ	गाल्हवाडमां	गोरहवाडमां
६३	१८	शखेक्वरनुं	शंखेक्वरनुं
६४	8	भ्रुवन१म-	भुवनप्रभ-
19	६, ९	श्रीविद्यापम-	श्रीविद्यापभ-
17	•	छित्रम−	<b>छितमभ</b> −

ંહ	१८	विब	विंव
.40	8	चद्रपभा	चंद्रप्रभ
<b>5</b> *	<b>१</b> ३	चींद	चंद्रपभ चौद
୧୬	१२	विर	वीर
९६	8	जीनवरुए	जिनवरु ए
९७	4	भसात-	भंसात-
९७	<b>ર</b>	विव	विंव
,,	१३	वद्	वंद्
86	१५	शीतलबिंब	शीतक विव
१०१	9	पीतल्रमे	पीतलमय
,,	9	माहे	मोहे
१०४	१७	साहव सुआ-	साह वसुआ-
१०५	३	चत्य-	चैत्य-
१०६	१३	-णनगुणा-	–जनगणा–
१०७	88	ससार-	संसार-
<b>7</b> *	<b>)</b>	−निधि−	–निधि-
१०९	१२	-पाइव	–पाइर्वे
255	Ş	जिनपति	–जिनपति

आ सिवाय मात्रा रेफ विगेरे खण्डित थवा संबंधी या ऊडी जवा संबंधी अने केटलीक पदच्छेद संबंधी रही गयेली स्खलनाओ सुज्ञ पाठकोए सुधारी वांचवुं.



